

अंक—07 2025—26  
VOLUME-07 YEAR 2025-26

# विहान

सरिया कॉलेज, सरिया  
विचारों की महाविद्यालय पत्रिका

सप्तम् संस्करण

सह—सम्पादक  
अरुण कुमार  
अर्थशास्त्र विभाग

सम्पादक  
डॉ० संतोष कुमार लाल  
प्राचार्य

## CONTENT

	<i>Page No.</i>
1. Preparing Students for a Rapidly Changing World	09-10
2. हिंदी साहित्य में कौशल विकास	11-13
3. मुगलकालीन न्यायिक प्रणाली का विश्लेषणात्मक अध्ययन	14-16
4. जैविक खेती के मूलभूत सिद्धांत	17-19
5. Environmental Sustainability: Sensitization Through Education	20-24
6. ज्ञान, समानता और न्याय के प्रतिमूर्ति : बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर”	25-26
7. Culture, Folklore, And Ecology of Indigenous Tribes in Jharkhand	27-31
8. Beyond Gender Sensitization: Understanding Gender Sensitization as per the UGC’s Saksham Report	32-32
9. झारखण्ड में नक्सलवाद : समस्या एवं चुनौतिया	33-36
10. बिहार और झारखंड में मानव संसाधन और सतत विकास: संभावनाएँ और सीमाएँ	37-39
11. Little Lives	40-40
12. WHY TO CHOOSE AND LEARN BOTANY SUBJECT	41-43
13. भारत में उच्च शिक्षा के विकाश पर एक अध्ययन: सन् 1857 से सन् 1947	44-49
14. किरदार का कत्ल	50-55
15. मंजिल	56-56
16. कमी ही ताकत	57-57
17. SUCCESS	58-58
18. माता पिता	59-59
19. सफलता	60-60
20. तेरा एहसास माँ	61-61

## शासी निकाय के सदस्यों की सूची

1.	श्री नागेन्द्र महतो	अध्यक्ष
2.	श्री मनोहर सिंह	सचिव
3.	डॉ० एस० जेड० हक	विनोबा भावे विश्वविद्यालय, हजारीबाग
4.	डॉ० संतोष कुमार लाल	प्राचार्य
5.	उपायुक्त (गिरिडीह)	सदस्य
6.	श्री राजेश कुमार जैन	दानदाता सदस्य
7.	श्री अरूण कुमार (अर्थशास्त्र विभाग)	शिक्षक प्रतिनिधि

## आंतरिक गुणवत्ता आश्वासन प्रकोष्ठ (I.Q.A.C.) के सदस्यों की सूची

1.	डॉ० संतोष कुमार लाल	प्राचार्य
2.	डॉ० गंगानन्द सिंह	शिक्षाविद् सदस्य
3.	श्री धनंजय कुमार राम	प्रशासनिक अधिकारी
4.	डॉ० राजेश कुमार सिंह	सामाजिक सदस्य
5.	श्री राजेश कुमार जैन	प्रबंध सदस्य
6.	श्री पंकज अग्रवाल	उद्योगपति सदस्य
7.	श्री रंजीत कुमार मंडल	पूर्ववर्ती छात्र सदस्य
8.	श्री अरूण कुमार (अर्थशास्त्र विभाग)	शिक्षक सदस्य
9.	श्री कार्तिक प्रसाद यादव	शिक्षक सदस्य
10.	डॉ. प्रमोद कुमार	शिक्षक सदस्य
11.	श्री आनंद प्रसाद यादव	शिक्षकेत्तर कर्मचारी सदस्य
12.	प्रेरणा कुमारी	छात्र सदस्य
13.	श्री असीत दिवाकर	समन्वयक

सत्र 2025-26 के सर्वोच्च प्राप्तांक पाने वाले छात्र का नाम :-

1. मुस्कान अग्रवाल (वाणिज्य)
2. केशव राज (हिंदी प्रतिष्ठा)

**अकादमिक सत्र 2025-26 में महाविद्यालय में आयोजित विभिन्न कार्यक्रमों की सूची**

क्र. सं.	कार्यक्रम का नाम	दिनांक	संसाधन व्यक्ति का नाम	विभाग	आयोजनकर्ता
1.	Bhakti Movement in India	09/09/2025	Prof. K.P.Yadav	History	Prof. K.P.Yadav
2.	Relevance of Themes of Rime of the Ancient Mariner	09/09/2025	Prof. R. K. Mishra	English	Prof. R. K. Mishra
3.	हिंदी दिवस	15/09/2025	Prof. R. Hazam	Hindi	Dr. Pramod Kumr
4.	Quiz Competition	20/09/2025	Prof. Arun Kumar	Economics	Prof. Arun Kumar
5.	Orientation Program on Professional Ethics	12/10/2025	Dr. Santosh Kumar Lal	Commerce	Dr. Santosh Kumar Lal
6.	Seminar on Birth of Birsa Munda	14/11/2025	Prof. K.P.Yadav	History	Prof. K.P.Yadav
7.	Faculty Development Programme	19/11/2025	Prof. Chandra Bhushan Sharma	Commerce	Dr. Santosh Kumar Lal
8.	Khilafat Movement	24/11/2025	Prof. K.P.Yadav	History	Prof. K.P.Yadav
9.	राष्ट्रीय संविधान दिवस	26/11/2025	S.D.P.O. Bagodar Suriya	Political Science	Prof. Arun Kumar
10.	Essay Competition	10/12/2025	Prof. R. K. Mishra	English	Prof. R. K. Mishra
11.	अन्तर्राष्ट्रीय मानवाधिकार दिवस	10/12/2025	Prof. Arun Kumar	Political Science	Prof. Arun Kumar
12.	विश्व हिंदी दिवस	10/01/2026	Prof. R. Hazam	Hindi	Dr. Pramod Kumr
13.	Poster Exhibition on Social Issue by Students	28/02/2026	Dr. Sweta	Sociology	Dr. Sweta
14.	National Science Day	28/02/2026	Miss Alka Rani Jojo	Zoology	Miss Chayra Nisha Aind
15.	Science Exhibition	17/03/2026	Miss Alka Rani Jojo	Zoology	Miss Chayra Nisha Aind
16.	शैक्षणिक भ्रमण झारखण्ड विधानसभा	18/03/2026	Dr. Arun Kumar	Political Science	Dr. Ashish Kr. Singh
17.	Quiz on Ambedkar and his Life	17/04/2026	Dr. Sweta	Sociology	Dr. Sweta
18.	Symposium on Different Data Sources for Research	20/04/2026	Dr. S. K. Lal	Economics	Prof. Arun Kumar

अन्नपूर्णा देवी  
ANNPURNA DEVI



सत्यमेव जयते

महिला एवं बाल विकास मंत्री  
भारत सरकार  
Minister of Women & Child Development  
Government of India

दिनांक:- 24 / 04 / 2026



संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सरिया महाविद्यालय, सरिया द्वारा अपनी वार्षिक पत्रिका 'विहान' के सप्तम संस्करण (वर्ष 2026) का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी शैक्षणिक संस्थान की पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मकता, वैचारिक ऊर्जा और संस्थान की प्रगति का जीवंत प्रतिबिंब होती है।

आज हमारा राष्ट्र माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी के दूरदर्शी नेतृत्व में 'विकसित भारत @2047' के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु सतत अग्रसर है। इस राष्ट्रीय संकल्प की सिद्धि में युवा शक्ति एवं शैक्षणिक संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। 'विहान' जैसी पत्रिकाएँ विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के साथ-साथ उनमें राष्ट्र-निर्माण के प्रति जागरूकता, संवेदनशीलता एवं उत्तरदायित्व की भावना का विकास करती हैं।

यह सर्वविदित है कि शिक्षा एवं कौशल विकास के माध्यम से ही युवाओं को सशक्त, आत्मनिर्भर तथा सक्षम बनाया जा सकता है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि सरिया महाविद्यालय अपने विद्यार्थियों को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान कर उन्हें इस राष्ट्रीय अभियान में सार्थक योगदान हेतु प्रेरित कर रहा है।

मैं 'विहान' के इस नवीनतम अंक के सफल प्रकाशन पर महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादकीय मंडल एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को हार्दिक बधाई देती हूँ।

आप सभी को उज्वल भविष्य के लिए अनंत शुभकामनाएँ।

भवदीया,

(अन्नपूर्णा देवी)



Professor Chandra Bhushan Sharma  
Vice-Chancellor

आचार्य चन्द्र भूषण शर्मा  
कुलपति



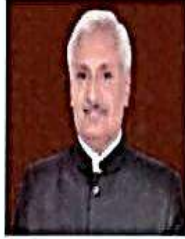
Phone : (O) 06546-264279  
: (R) 06546-264066 /262342  
: (M) 8987791005/9810512605  
Email : vc@vbu.ac.in  
cbsharma01@gmail.com

## Vinoba Bhave University

Hazaribag – 825301, Jharkhand, India

Ref. No. – VBU/VC/203/2026

Date - 23/04/2026



### शुभकामना संदेश

मुझे अत्यंत प्रसन्नता है कि सरिया महाविद्यालय, सरिया द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका "विहान" के नवीन संस्करण के लिए अपने विचार व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हुआ। यह पत्रिका न केवल विद्यार्थियों की सृजनात्मकता और बौद्धिक क्षमता का दर्पण है, बल्कि उनके व्यक्तित्व विकास का एक सशक्त माध्यम भी है।

आज के प्रतिस्पर्धात्मक युग में शिक्षा का उद्देश्य केवल ज्ञानार्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सृजनशीलता एवं सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना विकसित करना भी है। ऐसी पत्रिकाएँ विद्यार्थियों को अपने विचारों, अनुभवों और प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का मंच प्रदान करती हैं, जिससे उनमें आत्मविश्वास और नवाचार की भावना का विकास होता है।

मुझे विश्वास है कि "विहान" का यह संस्करण भी विद्यार्थियों की विविध प्रतिभाओं को उजागर करेगा और पाठकों को प्रेरित करेगा। मैं महाविद्यालय परिवार, संपादकीय मंडल एवं सभी योगदानकर्ताओं को इस सराहनीय प्रयास के लिए हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

सप्रेम शुभकामनाएँ।

  
(चन्द्रभूषण शर्मा)

सुधीर बाड़ा (भा0प्र0से0)  
निदेशक, उच्च शिक्षा  
उच्च एवं तकनीकी शिक्षा विभाग,  
झारखण्ड, रांची ।



योजना भवन (तृतीय तल्ला)  
नेपाल हाउस, डोरंडा, रांची  
दूरभाष सं०:- 0651-2491119

Email : highereducationjharkhand@gmail.com

पत्र संख्या :- 11 (नि० को०)

रांची, दिनांक:- 13.05.2026

## संदेश



मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि सरिया कॉलेज, सरिया द्वारा प्रकाशित वार्षिक पत्रिका "विहान" के नवीन संस्करण का प्रकाशन किया जा रहा है। किसी भी शैक्षणिक संस्था की पत्रिका विद्यार्थियों की रचनात्मक, बौद्धिक क्षमता एवं वैचारिक ऊर्जा का सशक्त प्रतिबिंब होती है। यह न केवल साहित्यिक अभिव्यक्ति का माध्यम है, बल्कि छात्रों के सर्वांगीण व्यक्तित्व विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

वर्तमान समय में शिक्षा का उद्देश्य केवल शैक्षणिक ज्ञान तक सीमित नहीं है, बल्कि विद्यार्थियों में नैतिक मूल्यों, सृजनशीलता, नवाचार तथा सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का विकास करना भी है। इस प्रकार की अकादमिक पत्रिकाएँ विद्यार्थियों को अपने विचार, अनुभव और प्रतिभा को अभिव्यक्त करने का मंच प्रदान करती है, जिससे उनमें आत्मविश्वास एवं नेतृत्व क्षमता का विकास होता है।

यह सर्वविदित है कि गुणवत्तापूर्ण उच्च शिक्षा ही युवाओं को सशक्त, आत्मनिर्भर और समाजोपयोगी नागरिक बनाने का आधार है। मुझे विश्वास है कि सरिया कॉलेज अपने शैक्षणिक दायित्वों का कुशलतापूर्वक निर्वहन करते हुए विद्यार्थियों को रचनात्मक एवं बौद्धिक रूप से समृद्ध बनाने की दिशा में सतत प्रयासरत है।

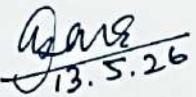
"विहान" जैसी पत्रिका विद्यार्थियों की प्रतिभा को निखारने के साथ-साथ उन्हें रचनात्मक लेखन, चिंतन एवं सामाजिक सरोकारों से जोड़ने का एक सार्थक माध्यम है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इसका यह नवीन अंक भी पाठकों के लिए ज्ञानवर्द्धक, प्रेरणादायक तथा विचारोत्तेजक सिद्ध होगा।

इस अवसर पर मैं महाविद्यालय के प्राचार्य, संपादकीय मंडल, शिक्षकगण एवं सभी प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को इस सराहनीय प्रयास हेतु हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ देता हूँ।

मैं कामना करता हूँ कि सरिया कॉलेज भविष्य में भी इसी प्रकार शैक्षणिक उत्कृष्टता और रचनात्मक के नए आयाम स्थापित करता रहे।

सप्रेम शुभकामनाओं सहित।

भवदीय,

  
13.5.26

(सुधीर बाड़ा)  
निदेशक, उच्च शिक्षा,  
झारखण्ड सरकार।

## सम्पादकीय.....



सम्पादकीय "विहान"का सप्तम् अंक आप सभी के समक्ष प्रस्तुत करते हुए अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। संपादक मंडल और प्रकाशन टीम का यही प्रयास है कि हर नये अंक के साथ इसकी गुणवत्ता में वृद्धि हो और पत्रिका प्रकाशन के उद्देश्य की पूर्ति हो सके। साहित्य समाज का आईना होता है और पत्रिका समय का पहिया जो भूत से सीख, वर्तमान को परख, भविष्य का रास्ता दिखाती है। हमने भी इस अंक के विषयवस्तु के केन्द्र में समकालीनता को ही रखा है। मकसद यह है कि समकालीन मुद्दों पर विद्यार्थियों, शिक्षकों के समझ को विकसित करना। समय के इस दौर ने हमें परिवार, समय एवं प्रकृति के महत्व को समझाया। साथ ही बाजार की वश में जीने वालों को भी यह सीख मिली कि मानव की वास्तविक जरूरतें काफी सीमित हैं, जिसकी आपूर्ति प्रकृति खुशी-खुशी करती आ रही है। बाकी चाह की पूर्ति तो दोहन से ही होती रही है। लेखकों ने जीवन, कार्य एवं राष्ट्र से जुड़े विचारणीय विषयों के बारीकियों को अलग-अलग नजरिये एवं विभिन्न परिप्रेक्ष्यों में देखने की कोशिश की है। सरिया महाविद्यालय की प्रसिद्ध पत्रिका 'विहान' के इस अंक (अंक-07, भाग-7, वर्ष 2025-26) जो विगत 7 वर्षों से सतत् रूप से प्रकाशित हो रही है। इस पत्रिका में महाविद्यालय के शिक्षक एवं विद्यार्थियों के मौलिक विचारों के स्तरीय लेख प्रकाशित हुए हैं। इस अंक में कुल 12 आलेख, 05 कविताएं, एवं 03 कहानी है जिनमें हिंदी एवं अंग्रेजी भाषा में लिखे गये हैं। ये लेख भाषा एवं साहित्य, दर्शन एवं आध्यात्म्य, पर्यावरण एवं प्रबन्धन जैसे अनेक विषयों एवं विधाओं से सम्बन्धित हैं। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इस अंक से वृहद पाठक वर्ग अवश्य लाभान्वित होंगे। महाविद्यालय पत्रिका 'विहान' सूर्य की लालिमा से आगे बढ़कर सर्वत्र भरपूर रोशनी फैला रहा है! महाविद्यालय की यश पताका को चतुर्दिक फैलाने में यह अंक अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा करेगा। इस अंक के सफल प्रकाशन हेतु मैं माननीय केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री, भारत सरकार, श्रीमति अन्नपूर्णा देवी, इस महाविद्यालय के अध्यक्ष माननीय विधायक श्री नागेन्द्र महतो, सचिव श्री मनोहर सिंह के प्रति दिल से आभार व्यक्त करता हूँ जिनकी सतत प्रेरणा एवं उत्साहवर्धन से हमें पर्याप्त बल मिलता है। शासी निकाय एवं सम्पादक मण्डल के सभी सहयोगियों को भी धन्यवाद देता हूँ। अन्त में मैं 'विहान' कार्यालय के सहयोगी श्री अमरजीत कुमार प्रसाद को साधुवाद देता हूँ, जिसने कंप्यूटर टाइपिंग में मदद कर पत्रिका के प्रकाशन में भूमिका निभाई है।

**डॉ० संतोष कुमार लाल**

**प्राचार्य-सह-सम्पादक**

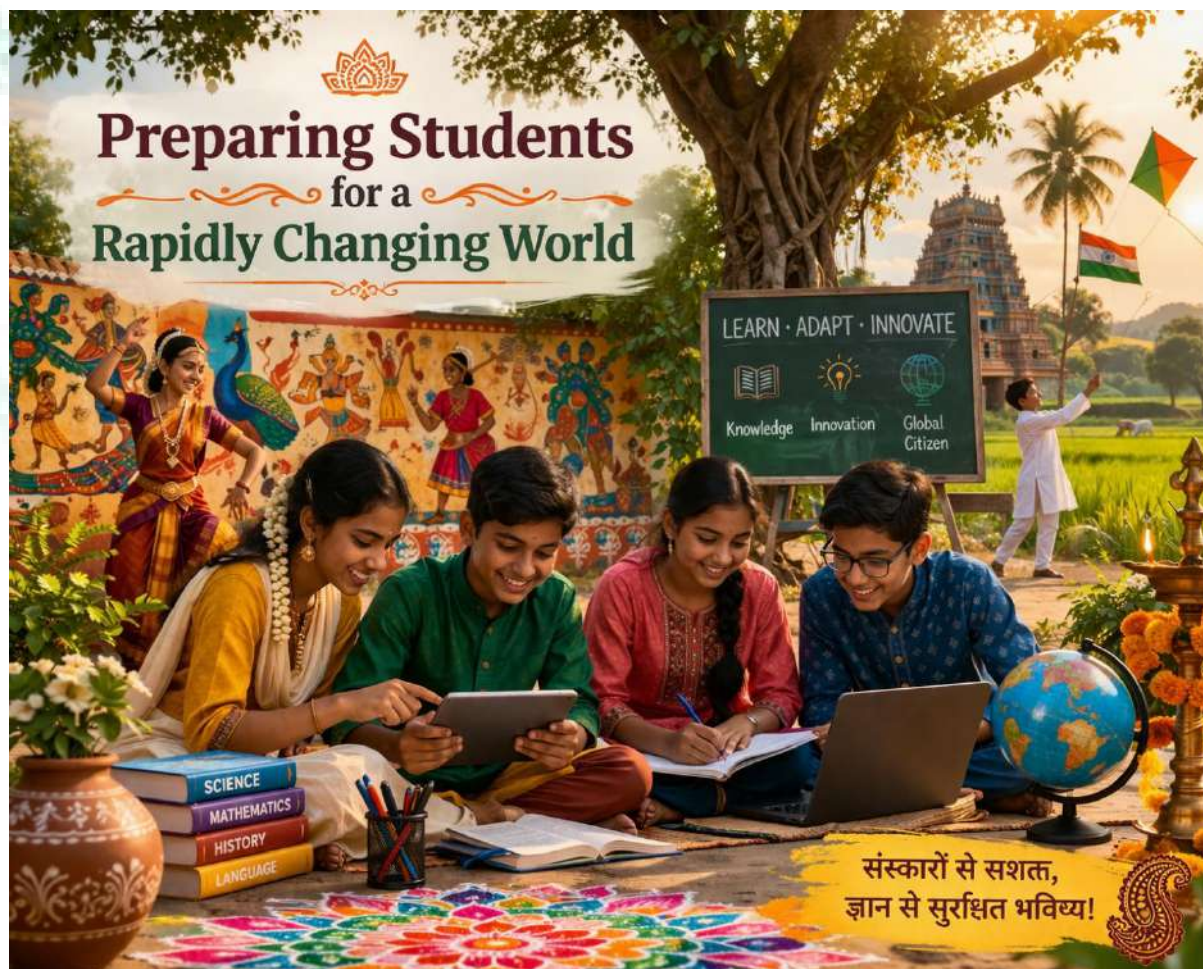
## Preparing Students for a Rapidly Changing World

*Dr. Santosh Kumar Lal,*

*M. Com. (Gold Medallist), Ph.D.,*

*Principal,*

*Sariya College, Suriya*



We are living in an era marked by rapid technological advancements, global interconnectedness, and constant change. The traditional boundaries of learning are expanding, and education is no longer confined to classrooms or textbooks. As students, must adapt to this transformation by developing not only academic excellence but also critical thinking, creativity, and emotional intelligence. These skills are essential for navigating the complexities of the modern world.

### **1. Adapt to Change**

**Lesson:** The world is changing rapidly—students must stay flexible and open to learning new skills.

**Caption:** “*Adaptability is the key to survival and success.*”

### **2. Use Technology Wisely**

**Lesson:** Technology can empower or distract—use it for growth, not waste.

**Caption:** “*Let technology be your tool, not your trap.*”

### 3. Prioritize Mental Health

**Lesson:** Mental well-being is essential for success and happiness.

**Caption:** *“A healthy mind builds a successful life.”*

### 4. Build Strong Values & Relationships

**Lesson:** Collaboration, empathy, and teamwork shape future leaders.

**Caption:** *“Together, we grow stronger.”*

### 5. Be Socially Responsible

**Lesson:** Students must contribute to society and protect the environment.

**Caption:** *“Small actions today create a better tomorrow.”*

### 6. Dream Big & Stay Focused

**Lesson:** Clear goals and dedication lead to success.

**Caption:** *“Dream big, work hard, achieve more.”*

One of the most significant changes we are witnessing today is the rise of digital technology. From artificial intelligence to online learning platforms, technology has revolutionized the way we acquire knowledge. While these tools provide immense opportunities, they also demand responsible usage. Encourage to embrace technology as a means of learning and innovation, rather than a distraction.

Equally important is mental and emotional well-being. The pressures of academic performance, career choices, and social expectations can sometimes feel overwhelming. It is essential to remember that success is not defined solely by grades, but by ability to grow, adapt, and maintain balance in life. Seek support when needed, stay connected with peers and mentors, and never hesitate to express thoughts and concerns.

As future leaders, also carry the responsibility of contributing positively to society. Issues such as environmental sustainability, social justice, and ethical leadership require attention and action. Small steps taken today can lead to significant changes tomorrow. Be mindful citizens, compassionate individuals, and proactive contributors to the community.

This college magazine stands as a testament to your ideas, voices, and perspectives. Each article, poem, and creative expression included here reflects enthusiasm and potential. I sincerely appreciate the efforts of all students, faculty members, and the editorial team who have worked diligently to bring out this publication.

I urge each one of you to continue exploring, questioning, and learning beyond the curriculum. Never be afraid to dream big and pursue your passions with determination. Remember that education is not just about acquiring knowledge, but about shaping character and building a meaningful life.

In conclusion, I extend my best wishes to all of you for a bright and successful future. May this magazine inspire you to strive for excellence and make a difference in the world.

## हिंदी साहित्य में कौशल विकास

Prof. Raghunandan Hazam

HOD

Department of Hindi

चुनौतियां 16वीं 17वीं शताब्दी से लेकर आज के दौर 21वीं शताब्दी में लोगों की भाषा -भाषी, बात-चीत में बहुत बड़ा उलट -फेर हो रहा है, लोग अपने -पुराने, रीति -रिवाज को परंपराओं को भूलते जा रहे हैं। हिंदी की जो लेखन परंपरा है, कागजों में नहीं बल्कि लोग अपने लिखने का भी अभ्यास भूलते जा रहे हैं, अब लोग कम्प्यूटर की मदद से मोबाइल, लैपटॉप, प्रोजेक्ट के माध्यम से लिखना शुरू कर दिए हैं, धीरे-धीरे लोग पेपरों पर लिखना भी भूलते जा रहे हैं।

हमारी जो भारतीय परंपरा प्राचीन काल तक कौशल विकास के लिए शिष्य घर से बाहर जाकर जंगलों में गुरु के आश्रम में शिक्षा प्राप्त करने के लिए 0 से 25 वर्षों तक संन्यासी जीवन व्यतीत कर घर-द्वार को त्याग कर जंगलों में ऋषि के आश्रम में ज्ञान का अर्जन करते थे, ज्ञान परंपरा प्रत्यक्ष प्रैक्टिकल रूप में जमीनी तौर पर कृषि की पढ़ाई के लिए खुद कृषक बनकर खेतों में हल चला कर, कुदाल चला कर खेती का ज्ञान अर्जन करते थे, सैनिक की शिक्षा कागज कंप्यूटर पर नहीं बल्कि अनौपचारिक तौर पर खुद जंगल में जाकर गुरु की आज्ञा से किसी पेड़ पर बैठे पंछी या पशु पर अपना निशाना धनुष की बाण से ठीक टारगेट पर अपना निशाना साधते थे। जैसा की महाकवि तुलसीदास जी ने दिखाया है, किस प्रकार भगवान राम अपने गुरु विश्वामित्र के साथ जंगल में आखेट करते हैं, तीर चलाने का अभ्यास करते हैं। गुरु की आज्ञा से हिंसक जीवों का गुरु की आदेश पर आखेट करते हैं, तीर चलाने का काम करते हैं, गुरु विश्वामित्र के यज्ञ पर गुरु की सुरक्षा एवं सारे गुरु ब्राह्मण की रक्षा यज्ञ को सफल करने के लिए उसमें निशाना साधते हैं, जो जीव हिंसक हो, आसुरी रूप का जो आतंक करते थे, जो मानव को जिंदा निकल जाते थे या उसका मांस भक्षण करते थे, उनको गुरु कौशल विकास से राम ने अपने धनुष के बाण द्वारा उन असुरों को गुरु विश्वामित्र के आज्ञा द्वारा उसको नष्ट करते थे।

महाभारत काल में गुरु संदिपनी द्वारा कौशल विकास के द्वारा कृष्ण को चक्र चलाने, गदा चलाने, धनुष से बाण चलाने एवं जंगल जाकर सुखे लकड़ियों को चुनकर शिष्यों द्वारा लकड़ियों को आश्रम में लाना, खाना बनाने में गुरु माता की मदद करना एवं रात्रि के प्रथम प्रहर में पढ़ाई समाप्त कर, गुरु माता एवं गुरु पिता की सेवा करना एवं उनके सोने के बाद शिष्यों को स्वयं अपने बिस्तर पर सोना, सूर्योदय से पहले गुरु वंदना कर सूर्योदय से पहले मां शारदे एवं सूर्य को नमन करने की परंपरा थी। भगवान कृष्ण द्वारा गुरु के जीवन के सपने को गुरु दक्षिणा के रूप में, गुरुदेव संदीपनी एवं गुरु माता के अधूरे सपने को पूर्ण करने के लिए, उनके बच्चों को वापस लाना, यह था कृष्ण की गुरु भक्ति।

महाभारत काल में गुरु शिष्य परंपरा आप सभी ने सुना है एवं पढ़ा है, जब गुरु द्रोण शिष्यों का कौशल विकास करते समय स्वयं नदी में डूब कर अपने यंत्र से यांत्रिक मगरमच्छ के जाल में अपने को तड़पते दिखाते हैं, तुरंत उनके शिष्य गुरु द्रोण को संकट में देखकर सभी हक्के-बक्के रह जाते हैं। यहां अर्जुन ने अपना करकब दिखाते हैं, अपने धनुष के बाण से मगरमच्छ को मार देते हैं और गुरु के प्राण की रक्षा करते हैं, ये थी गुरु की परीक्षा।

हिन्दी साहित्य में कौशल विकास के लिए गुरु की अनौपचारिक शिक्षा, शिष्य आरुणि बरसात के मौसम अपने गुरु की परीक्षा के लिए खेत में जब धान कि फसलों का रोपा का समय होता है, धौम्य गुरु की आज्ञा से धान रोपाई के एक दिन पूर्व फावड़ा कोड़ी लेकर खेत के मेड़ में खेत के जलबहाव को रोकने में असफल हो जाता है, बार-बार मिट्टी कटाव को रोकने में असफल हो जाने पर, स्वयं मेंड़ में सोकर पानी के बहाव को रोकने के लिए पानी के बहाव में रात भर सोए रह जाता है और खेत की

पानी को रोक लेता है और दूसरे दिन सुबह गुरु धौम्य सभी शिष्यों के साथ धान रोपाई के लिए आते हैं, तो गुरु भक्त आरूणि को पानी में लेटे-देखकर भाव विभोर हो जाते हैं

यह थी गुरु शिष्य की शिष्टाचार। शिष्य का गुरु के प्रति भक्ति आज के काल में कौशल के लिए गुरु शिष्य की शिक्षा नीति प्रैक्टिकल तौर पर न होकर पेड़ -पौधे, वन रोपण,खेती -बाड़ी,चिकित्सा,इंजीनियर पूर्ण रूप से प्रैक्टिकल रूप से कम हो रही है,लोग अनौपचारिक तौर का मदद ना लेकर पेड़ पौधे सब्जी यंत्र सभी को प्रोजेक्ट कंप्यूटर और मोबाइल के द्वारा ही कंप्यूटरीकृत होते जा रहे हैं,उसे जमीन पर उतारा नहीं जाता है,सब लोग पढ़ने लिखने की वजाय, कॉपी कलम का सहारा न लेकर सभी आंतरिक होते जा रहे हैं. सभी मोबाइल और कंप्यूटर में डूबे रहते हैं. उसे आमतौर पर खेतों में फसलों की रोपाई करना हिंदी साहित्य में कौशल विकास का सही तरीका है।इंजीनियरों का कल कारखाने में मशीनों को न बनाकर,उसे कंप्यूटर में केवल डाला जा रहा है।

शिक्षा निरंतर जीवन पर्यंत चलने वाली किसी भी समाज और राष्ट्र की एक मजबूत रीढ़ होती है,क्योंकि इसी के आधार पर समाज व राष्ट्र की उन्नति निर्भर होती है, शिक्षा प्रणाली में आवश्यकता अनुसार परिवर्तन होते रहते हैं। हमारे देश में राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 लागू हो चुकी है, पूर्व की शिक्षा नीतियों एवं पारंपरिक शिक्षा पद्धति को ध्यान में रखते हुए यह शिक्षा नीति बनाई गई है,जिसमें समावेशी शिक्षा और सामान गुणवत्तापूर्ण शिक्षा सुनिश्चित करने का लक्ष्य निर्धारित है।

यहां गुणवत्तापूर्ण शिक्षा का सीधा संबंध मूल्य परख नैतिक शिक्षा से है,इस शिक्षा नीति में स्पष्ट उल्लेख किया गया है कि शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता को प्राप्त करने का एक नया संगत और नई पूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मूलभूत आवश्यकता है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तथा समानता, वैज्ञानिक उन्नति,राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में भारत के सतत प्रगति और आर्थिक विकास की कुंजी है। स्पष्ट है कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ही व्यक्ति समाज व राष्ट्र का विकास संभव है हिंदी साहित्य में कौशल विकास के लिए विद्यार्थियों को अच्छा इंसान बनाना जो, तर्कसंगत बुद्धि से कार्य करें तथा करुणा,सहानुभूति,वैज्ञानिक दृष्टिकोण,लोकतांत्रिक मूल्य का निर्वहन यदि लक्षण इसमें स्पष्ट उल्लेख है कि यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 21वीं शताब्दी की पहली शिक्षा नीति है,जिसका लक्ष्य है।

हमारे देश के विकास के लिए अनिवार्य आवश्यकताओं को पूरा करना है या नीति भारत की परंपरा और सांस्कृतिक मूल्यों के आधार को बरकरार रखते हुए 21वीं शदी की शिक्षा के लिए आकांक्षात्मक लक्षण,जिसमें यह नीति इस सिद्धांत पर आधारित है कि शिक्षा से न केवल साक्षरता और संख्या ज्ञान जैसे बुनियादी क्षमताओं के साथ-साथ उच्चतर स्तर की तार्किक और समस्या समाधान संबंधी संज्ञानात्मक क्षमताओं का विकास होना चाहिए,बल्कि नैतिक सामाजिक और भावनात्मक स्तर पर भी व्यक्ति का विकास होना आवश्यक है।

यह स्पष्ट है कि इस प्रकार की शिक्षा से ही विद्यार्थी में व्यवहार बुद्धि का ज्ञान, कौशल आदि गुणों के साथ, मूल्य का विकास होगा,परिणाम स्वरुप विद्यार्थी भारतीय होने का गर्व महसूस करेंगे, इस शिक्षा नीति में शिक्षार्थी गुरुकुल में शिक्षा प्राप्त करते थे।गुरु कुल प्रकृतिवाद वातावरण में होते थे गरीब और अमीर दोनों प्रकार के शिक्षार्थी को संभव से शिक्षा प्रदान की जाती थी,इसी वातावरण में विद्यार्थी गुरु से शारीरिक,मानसिक तथा आध्यात्मिक पोषण प्राप्त करते थे विद्यार्थी वहां विभिन्न विषयों का शिक्षा के साथ-साथ अनुशासन,अच्छा चरण उचित व्यवहार कार्य में निपुणता तथा विभिन्न कलाओं का ज्ञान हासिल करते थे नैतिक शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थी का मार्गदर्शन होता था और आगे चलकर वे पूरे संसार में एक अनूठा उदाहरण बनते थे आज हमें पूर्व की शैक्षिक परंपरा व शिक्षा नीतियों को आत्मसात करने की आवश्यकता है, विद्यार्थियों को आराम से ही नैतिक व आध्यात्मिक सिद्धांतों का पाठ पढ़ाया जाना चाहिए, विद्यार्थियों को श्रेष्ठ नैतिकता व्यक्त करने वाली कहानी पढ़ाई जाए,मनीषियों की जीवनियां उच्च विचार तथा उनकी श्रेष्ठ भावनाओं को समावेश किया जाए,हमें ज्ञात होना चाहिए कि गौतम बुद्ध,महात्मा

गांधी, शंकराचार्य, गुरु नानक, पैगंबर मोहम्मद आदि महान विभूतियों ने किसी प्रकार की औपचारिक शिक्षा ग्रहण नहीं की, फिर भी इनके द्वारा प्रदत्त शिक्षा समस्त राष्ट्र एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में फलित हुई। नैतिकता की दृष्टि से देखे तो यह शिक्षा व्यापक अर्थ को वंचित करती, आज के आधुनिक काल में गुरु शिष्य परंपरा न होकर लोग कंप्यूटरिकृत होते जा रहे हैं।

प्राचीन काल में शिक्षक प्रणाली पत्थरों पर शिलालेखों पर उतरित किया जाता था फिर बाद में धीरे-धीरे लोग भोज पत्रों में लिखने का अभ्यास करने लगे इसके पूर्व भी एक शिक्षण प्रणाली भारतीय प्राचीन ज्ञान परंपरा था कि लोगों विद्यार्थियों को गुरुकुल में पढ़ने लिखने के जगह केवल नैतिक एवं मौखिक शिक्षा दी जाती थी गुरु मौखिक रूप से विद्यार्थियों को नीति परक बातें ज्ञानप्रक बातें करते थे। हिंदी साहित्य में कौशल विकास के लिए रामायण काल में महर्षि वाल्मीकि नैतिक ज्ञान मौखिक ज्ञान के माध्यम से शिष्यों को धनुर्विद्या वेद पुराणों की विद्या मौखिक रूप से देते थे यही हमारी प्राचीन भारतीय ज्ञान प्रणाली महाभारत काल में शिष्यों को आचार्य द्रोण के द्वारा कौरवों और पांडवों को मौखिक रूप से प्रैक्टिकल ज्ञान जंगलों में धनुर्विद्या, गदा चलाने की विद्या एवं ब्रह्मास्त्र का ज्ञान शिष्यों को मौखिक रूप से दी जाती थी, ना कि आज के आधुनिक शिक्षण प्रणाली 21वीं शदी की शिक्षण हिंदी साहित्य में कौशल विकास के लिए विद्यार्थियों को आज नोटपैड में नहीं, कॉपी कलम की जगह विद्यार्थियों को कंप्यूटर के द्वारा प्रोजेक्ट्स के माध्यम से मोबाइल के माध्यम से लैपटॉप के माध्यम से बच्चों को आधुनिक शिक्षण प्रणाली से पढ़ाया लिखाया जा रहा है। आज बच्चे कॉपी कलम में लिखने का अभ्यास भी भूलते जा रहे हैं।

आज की आधुनिक शिक्षण प्रणाली कंप्यूटर कृत हो गया है, अब बच्चे लैपटॉप मोबाइल, कंप्यूटर, युटुब, फेसबुक, इंस्टाग्राम के द्वारा पढ़ने लिखने का अभ्यास बड़ी तेजी से करते जा रहे हैं, आज बच्चे कॉपी कलम का अभ्यास लिखने का अभ्यास भूलते जा रहे हैं। यह हमारी संस्कृति भारतीय ज्ञान परंपरा पश्चिमी सभ्यता में मशीनीकृत कंप्यूटर कृत होती जा रही है।

किसी भी देश की प्रगति के साथ-साथ नागरिकों के सर्वांगीण विकास के लिए, शिक्षा को सबसे महत्वपूर्ण आधार माना गया है, देश की स्वतंत्रता से लेकर अब तक आधुनिक भारत के निर्माण में भारतीय शिक्षा के प्रणाली महत्वपूर्ण रही है। जीवन में शिक्षा के महत्व को देखते हुए हिन्दी साहित्य में कौशल के लिए हमारी सरकार ने देश में मानस कवि तुलसीदास के द्वारा लिखी गई महाकाव्य रामचरितमानस में जन जन के विकास के लिए मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम का विश्व कल्याण के लिए लोकतंत्र स्थापित करने के लिए, राम राज्य की कल्पना की, हमारे वर्तमान माननीय प्रधानमंत्री मोदी जी ने देश विकास के साथ-साथ साहित्य के विकास के लिए, हिंदी भाषा में-" सबका साथ, सबका विकास," हिंदी साहित्य में कौशल विकास का सबसे बड़ा उदाहरण है।

हिंदी साहित्य में कौशल विकास के लिए हमारे वर्तमान सरकार महाकवि तुलसीदास का महाकाव्य रामचरितमानस में मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम के द्वारा जन-जन के सुख के लिए राम राज्य की कल्पना रामराज की कल्पना, हमारी सरकार ने देश के सभी नागरिकों को रोटी, कपड़ा और मकान उपलब्ध कराते हुए।

### **जाति, सम्प्रदाय से ऊपर उठकर, "सबका साथ, सबका विकास "**

हिंदी भाषा के सहारे जन-जन के विकास का यह नारा दिया, थोड़ा हि सही परन्तु जो "राम राज्य " देश को सुख और शान्ति उपलब्ध कराने का एक अच्छा काम किया, उन्हें कोटि-कोटि धन्यवाद देता हूं।

## मुगलकालीन न्यायिक प्रणाली का विश्लेषणात्मक अध्ययन

*Prof. Kartik Prasad*

*HOD*

*Department of History*

*Sariya College, Suriya*

मुगलकालीन न्यायपालिका का संगठन एवं सिद्धांत, इस्लामिक सिद्धांत एवं उसकी ऐतिहासिक परंपराओं, दिल्ली सल्तनतकालीन तथा प्रचलित न्याय व्यवस्था, भारतीय रीति-रिवाजों पर आधारित था। 'कुरान के अनुसार ईश्वर न्यायी है और उसकी सृष्टि का आधार ही न्याय है।" इस्लामी विधि शास्त्र को 'फिकह' कहते हैं तथा इसके 4 प्रमुख स्रोत हैं- 'कुरान', 'सुन्ना' (जिसमें कुरान के स्पष्टीकरण हेतु ईश्वरीय परंपराओं का उल्लेख है), 'कियास' (नजीर) अर्थात् एक जैसे मामलों में निर्णय समान हो। 'इज्मा' इसका अर्थ है सर्वसम्मति अर्थात् किसी मामले पर वह मत जो सभी मुसलमानों को स्वीकार हो। यह हमेशा संभव नहीं था इसलिए बाद में यह मुजाहिद (जो विद्वान हो) का मत माना जाने लगा। कुरान में न्याय की महत्ता का बार-बार उल्लेख हुआ है। 'अल्लाह की आज्ञाओं का सच्चाई तथा न्याय से पालन करो। जब तुम एक-दूसरे के बीच में निर्णय करो तो न्याय के आधार पर करो। जो लोग न्याय करते हैं अल्लाह उनसे निश्चय ही प्यार करता है। न्याय का आदर्श ईश्वरीय तराजू के उदाहरण द्वारा स्पष्ट किया गया है। इसी विचार से प्रभावित होकर शाहजहाँ ने दीवान-ए-आम के द्वार पर एक तराजू उत्कीर्ण कराया था।

रूढ़िवादी विचारधारा के अनुसार इस्लामिक राज्य में ऐसे धर्मावलंबी जिनका धर्म पुस्तकों पर आधारित है। उनको तो जजिया कर देकर सुरक्षा प्राप्त हो सकती थी किंतु बुतपरस्ती अर्थात् मूर्तिपूजा करने वालों के लिए यह व्यवस्था थी कि वे या तो इस्लाम धर्म स्वीकार कर लें अन्यथा मृत्युदंड दिया जाएगा। 'इस रूढ़िवादी विचारधारा के विरुद्ध भारत में मूर्ति पूजकों को भी जजिया कर देकर सुरक्षा का अधिकार प्राप्त हुआ। इसके विपरीत उदारवादी विचारधारा के विधिशास्त्री कुरान की अन्य आयतों का अर्थ उदारता के पक्ष में निकालते हैं। उनके अनुसार शासक को अपनी संपूर्ण प्रजा के प्रति न्याय का पालन करना चाहिए। अबुल फजल लिखता है कि 'शक्तिहीन पर अत्याचार रोकना शासक का कर्तव्य है क्योंकि स्वयं मुहम्मद साहब का कहना है कि अन्याय से पीड़ित व्यक्ति की पुकार चाहे वह काफिर ही क्यों न हो अल्लाह अस्वीकार नहीं करता है। न्याय इस्लामिक लोगों के साथ ही साथ गैर इस्लामिक लोगों की सुरक्षा का एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

इस्लामिक न्यायशास्त्र के अनुसार न्याय राज्य की प्रमुख आधारशिला है तथा मुहम्मद साहब ने स्वयं मुकदमों का निर्णय करके इसका उदाहरण प्रस्तुत किया। कुरान में खलीफा को न्यायिक कार्य करने की इजाजत दी गई है। 'कुरान में कहा गया है कि हमने पृथ्वी पर खलीफा को नियुक्त किया है और उन्हें न्याय करना चाहिए। " संभवतः इसी आधार पर खलीफा न्यायिक कार्य करते थे और इसी प्रकार पृथ्वी पर अल्लाह का प्रतिनिधि होने के कारण इस्लामिक शासक को न्यायिक कार्य करने का अधिकार प्राप्त था। सभी शासक विधिशास्त्र के अच्छे ज्ञाता हों यह न तो संभव था और न ही आवश्यक। इसलिए न्यायिक कार्य के लिए मुस्लिम शासक की सहायता करने के लिए यह प्रावधान किया गया कि शासक इस कार्य के लिए सर्वश्रेष्ठ उलेमा जो विधि का पूर्ण ज्ञाता हो, को काजी के पद नियुक्त करे। 'इस पद के लिए आवेदन पत्र आमंत्रित करना वर्जित है क्योंकि इससे इस पद की गरिमा कम हो

जाती है। विधिशास्त्रियों के अनुसार शासक को इस पद के लिए योग्य व्यक्ति का चयन करने के पश्चात यह पद उसे अर्पण कर उससे इसे स्वीकार करने की प्रार्थना करनी चाहिए। काजी की योग्यता नियुक्ति की प्रणाली इत्यादि पर भी विद्वानों ने अलग-अलग मत व्यक्त किए हैं।

'इस्लामिक विधिशास्त्र के अनुसार काजी के कार्यों में शासक को हस्तक्षेप करने का अधिकार नहीं है। किसी मुकदमे को पुनः प्रारंभ करने की आज्ञा देना भी अवैधानिक है। " सिद्धांततः शासक पर मुकदमा चलाया जा सकता था। 'खलीफा उमर तथा रशीद ने अपने विरुद्ध दिए गए निर्णयों को स्वीकार किया था। यद्यपि यह स्थिति व्यावहारिक स्थिति से सर्वथा भिन्न होती थी विशेषकर मुगल सम्राटों के समक्ष मुगल न्यायाधिक प्रणाली का सर्वोच्च अधिकारी तो सम्राट ही था। केंद्रीय न्यायिक कार्य से सम्राट के अतिरिक्त प्रमुख काजी तथा दीवान संबंधित थे।

न्यायिक कार्य के लिए मुगल सम्राट सर्वप्रथम मुख्य काजी की नियुक्ति करता था। डॉ० आशीर्वादीलाल श्रीवास्तव एवं इब्रहसन का मानना है कि 'मुख्य काजी एवं सद्र-अस-सुदूर दोनों एक ही थे। मुख्य काजी तथा प्रमुख सद्र के कार्यों की तुलना से इस बात की पुष्टि होती है। काजी - उल - कुजात की नियुक्ति सम्राट की इच्छा पर निर्भर करती थी किंतु सम्राट से यह अपेक्षा की जाती थी कि वह उसी व्यक्ति को नियुक्त करेगा जो इस्लामिक विधिशास्त्र का विद्वान हो। डॉ० जदुनाथ सरकार के अनुसार- 'उच्चकोटि के अरबी साहित्य का विद्वान तथा चारित्रिक पवित्रता के लिए ख्यातिप्राप्त व्यक्ति इस पद पर नियुक्त किया जाता था। उसकी कोई निश्चित कार्यवधि नहीं थी। 'यदि मुगल सम्राट उसके कार्य से संतुष्ट हो तो वह जीवनपर्यंत अपने पद पर बना रह सकता था अन्यथा वह अपने पद से कभी भी हटाया जा सकता था।

मुगल सम्राट दीवानी एवं फौजदारी दोनों ही प्रकार के मामलों की सुनवाई करते थे। उसका दरबार अदालत एवं अपील दोनों के लिए सर्वोच्च स्थान था। मुगल सम्राट के निर्णय ही अंतिम निर्णय होते थे तथा उसके विरुद्ध कहीं अन्यत्र अपील नहीं की जा सकती थी। मुगल सम्राट प्रत्येक दिन आम दरबार में मुकदमों का निर्णय करते थे। 'अकबर जब झरोखा - ए - दर्शन पर आता था तो खुल दरबार में वही न्याय करता था। छोटे-बड़े सभी को यहाँ अपना प्रार्थना पत्र प्रस्तुत करने की अनुमति थी।" जहाँगीर के काल में विलियम हाकिन्स लिखता है कि 'भारत के सम्राट प्रत्येक दिन न्याय के लिए बैठते हैं। विदेशी यात्री जहाँगीर के काल में न्याय के लिए सोने की जंजीर का उल्लेख करते हैं। 'सम्राट ने महल के अंदर घंटा लगवा रखा था जो एक जंजीर से बाहर से जुड़ा था। कोई भी फरियादी न्याय के लिए घंटा बजा सकता था। सम्राट उसको बुलवाता था तथा उस पर उचित कार्यवाही करता था। "' शाहजहाँ के विषय में अब्दुल हमीद लाहौरी लिखता है कि 'प्रत्येक बुधवार को शाहजहाँ झरोखा-ए-दर्शन से दौलतखाना-ए-खास में जाता था जहाँ न्याय से संबंधित अधिकारी ही प्रवेश पाते थे यहाँ एक-एक कर न्याय की लालसा वाले व्यक्ति उसके सामने पेश किए जाते और वह उनकी बातें सुनकर निर्णय देता था।"'

औरंगजेब ने अपने शासनकाल के ग्यारहवें वर्ष में झरोखा दर्शन की प्रथा त्याग दी। वह लगभग साढ़े सात बजे प्रातः खिलवतगाह में उपस्थित होकर डेढ़ घंटे तक न्याय करता था। बर्नियर लिखता है कि 'सभी आवेदन पत्रों का सम्राट द्वारा निरीक्षण किया जाता था और वह उन पर अपना निर्णय तत्काल दे देता था। औरंगजेब बुधवार को आम दरबार नहीं करता था। दर्शन के पश्चात वह सीधे 'दीवान-ए-खास' में चला जाता था। यहाँ काजी मुफ्ती तथा न्यायिक कार्य से संबंधित व्यक्ति ही प्रवेश पा सकते थे। 'वह एक-एक मुकदमे को सुनकर न्याय करता

था। बर्नियर इस संबंध में लिखता है कि औरंगजेब इसके अतिरिक्त सप्ताह में एक अन्य दिन दो घंटे न्याय में व्यतीत करता था जहाँ वह निम्न श्रेणी के दस मुकदमों का चयन करके उन पर निर्णय सुनाता था।

सैन्य अभियानों, भ्रमण तथा दौरों के समय भी मुगल सम्राटों की यह दिनचर्या परिवर्तित नहीं होती थी। जहाँगीर अपनी आत्मकथा में लिखता है कि अस्वस्थता के समय में भी वह इसका पालन करता था। बर्नियर भी इसका समर्थन करता था। वह मुगल सम्राटों की न्यायप्रियता की प्रशंसा करते हुए लिखता है कि 'हम एशिया के शासकों को बर्बर या क्रूर मान सकते हैं किंतु अपनी प्रजा को न्याय देने के मामले में वह लापरवाह नहीं थे। बर्नियर अदालतों की सरलता की प्रशंसा करता है। वह लिखता है कि फरियादी अपनी अर्जियाँ लिखकर लाते थे और इस तरह लिए रहते थे कि अदालत में उपस्थित अधिकारी उन्हें देख लें। सारी अर्जियाँ सम्राट के सामने प्रस्तुत की जाती थीं। वह उन्हें पढ़वाकर सुनता और प्रत्येक फरियादी को बुलाकर स्वयं जिरह करता और आवश्यक कार्यवाही करने का आदेश देता। प्रारंभिक एवं अपीली मुकदमों के क्षेत्राधिकार का निश्चित नियम नहीं था। दीवानी या फौजदारी का कोई भी मुकदमा सम्राट के सम्मुख लाया जा सकता था। फरियादी अपने मुकदमों को सम्राट के सम्मुख या अन्य अधिकारी के सम्मुख पेश कर सकता था। किसी को भी बिना सम्राट की आज्ञा के मृत्युदंड नहीं दिया जा सकता था। इसी कारण से फौजदारी के मुकदमों की संख्या अधिक रहती थी।

विदेशी यात्रियों ने इसी कारण मृत्युदंड के निर्णयों का अधिक उल्लेख किया है। इतना ही नहीं मुगल सम्राट के न्यायिक विशेषाधिकार भी थे वह अपराधी के दंड को क्षमा कर सकता था, कम कर सकता था या अन्य दंड में परिवर्तित कर सकता था। जहाँगीर ने राव रायसिंह को राजद्रोह का अपराधी साबित होने पर उसे क्षमा कर दिया था। मुगल न्यायिक प्रणाली इस्लामी विधिवेत्ताओं द्वारा प्रतिपादित सिद्धांतों पर आधारित थी। डॉ० इब्रहसन जी का यह कहना महत्त्वपूर्ण है कि 'मुगल साम्राज्य के राजनीतिक संगठन में इस्लामिक सिद्धांतों का जितना प्रभाव था उससे कहीं अधिक प्रभाव न्यायिक प्रणाली पर था।

मुगल सम्राट न्याय के प्रति सजग थे। इसीलिए यूरोपीय यात्रियों ने मुगल सम्राटों की न्यायप्रियता की भूरि-भूरि प्रशंसा किया है। इस काल में पूर्ववर्ती काल की तुलना में मुकदमों का फैसला शीघ्र हो जाता था तथा उनका निर्णय केवल साक्ष्य के आधार पर ही नहीं बल्कि न्यायाधीश एवं उसके कर्मचारियों की जाँच के पश्चात ही होता था। मुगल सम्राट न्याय के लिए न केवल सतर्क रहते थे बल्कि उनका प्रयास रहता था कि प्रजा को न्याय प्राप्त हो। मुगल सम्राट न्याय करते समय सभी को समान दृष्टि से देखते थे तथा छोटे-बड़े अमीर-गरीब, कुलीन-अकुलीन में किसी प्रकार का भेद नहीं करते थे जो उनकी न्यायिक प्रणाली को विशेष बनाती है।

## जैविक खेती के मूलभूत सिद्धांत

*Prof. Arun Kumar*

H.O.D.

Dept. of Economics

Sariya College, Suriya,

Giridih Jharkhand

जैविक खेती विधि तथा उसके उद्देश्यों के पीछे निहित प्रेरणा की जानकारी तभी हो सकती है जब इसके अंतःकरण में स्थित मूलभूत सिद्धांतों को समझा जाये। स्वस्थ व उच्च गुणवत्ता के खाद्य, रेशे तथा अन्य उपज की लगातार प्राप्ति तथा पर्यावरण व मृदा उर्वरता का दीर्घकालीन स्थायित्व इस विधि के प्रमुख अंग है। समय के साथ जैविक खेती के सिद्धांतों में अनेक बदलाव हुए हैं जो जैविक आंदोलन की दिशा तय करते रहे हैं। आज के सिद्धांत खेती के लगभग हर उन सभी पहलुओं पर लागू होते हैं जिनके अंतर्गत धरती को जोता जाता है, जल प्रबंधन किया जाता है, पौधों व पशुओं का पोषण किया जाता है। तथा खाद्यान्न का उत्पादन व वितरण किया जाता है। इनमें मानव, धरती के सभी जीव स्वरूप तथा पर्यावरण का ध्यान रखते हुए आगामी पीढ़ियों के आपसी सम्बन्धों तथा प्रकृति प्रदत्त स्रोतों के उपयुक्त दोहन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। आज के जैविक खेती सिद्धांत पूरे जैविक आंदोलन को उसकी पूरी विविधता के साथ आगे बढ़ने की प्रेरणा देते हैं। पूरी जैविक खेती इन्हीं मूलभूत तत्वों से उत्पन्न व विकसित हुई है।

जैविक कृषि आंदोलन के अंतराष्ट्रीय संघ (IFOAM) की परिभाषा में जैविक कृषि के मूलभूत सिद्धांत निम्न प्रकार है

1. स्वस्थता का सिद्धांत
2. पर्यावरणीय सिद्धांत
3. समता का सिद्धांत तथा
4. परिचर्या का सिद्धांत

### 1. स्वस्थता का सिद्धांत

जैविक खेती मिट्टी, पौधों, पशुओं, मानव तथा धरती के स्वास्थ्य को टिकाऊ व अक्षुण्ण रखते हुए सबको एक अविभाज्य इकाई के रूप में मान्यता देती है। मानव समुदाय के उत्कृष्ट स्वास्थ्य की परिकल्पना बिना स्वस्थ वातावरण के नहीं हो सकती। स्वस्थ मृदा ही स्वस्थ फसलों को जन्म देती है और स्वस्थ फसलों से पशुओं व मानव का स्वास्थ्य सुनिश्चित होता है। सभी जीव स्वरूपों के बीच संपूर्ण समन्वय ही संपूर्ण स्वास्थ्य की कुंजी है। व्याधियों से मुक्ति के साथ-साथ सभी की भौतिक, शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा पर्यावरणीय स्वस्थता सबसे महत्वपूर्ण है। जैविक खेती के सभी स्वरूप जैसे फसल उत्पादन, खाद्य प्रसंस्करण, वितरण तथा उपयोग सभी छोटे से छोटे जीवों से लेकर मानव तक पर्यावरणीय स्वस्थता को सुदृढ़ता प्रदान करते हैं। चूंकि जैविक खेती का उद्देश्य उच्च गुणवत्ता के स्वस्थ भोज्य को सुनिश्चित करना है, अतः प्रक्रिया में किसी भी प्रकार के रसायन उपयोग के लिए कोई जगह नहीं है।

### 2. पर्यावरणीय सिद्धांत

जैविक खेती जीवंत पर्यावरण, प्राकृतिक जीव चक्र व उनके बीच अक्षुण्ण समन्वय तथा सबके संधारण के सिद्धांत पर आधारित है। इस नियम के अनुसार संपूर्ण उत्पादन प्राकृतिक प्रक्रियाओं तथा प्राकृतिक स्रोतों के पुनः प्रयोग पर निर्भर है। प्रत्येक जीव स्वरूप का पालन पोषण उत्पादन प्रक्रिया के पर्यावरण के साथ सामंजस्य कर सुनिश्चित किया जा सकता है। उदाहरण के तौर पर अच्छे फसल उत्पादन के लिये जीवंत मृदा, पशुओं के लिये उचित आवास व वातावरण व उसके सभी अंगों के बीच समन्वय अति आवश्यक है। जैविक खेत, चारागाह तथा जंगल क्षेत्र भी इस चक्र से जुड़कर प्रकृति के संतुलन में सहायक हो सकते हैं। सभी

प्राकृतिक चक्र, स्थान विशेष के साथ अलग-अलग होकर भी मूल रूप में समान होते हैं जैविक प्रबंधन में स्थानीय परिस्थितियों तथा पर्यावरण का विशेष ध्यान रखते हुए प्रक्रियाएं तय की जाती हैं। पर्यावरण की गुणता को कायम रखते हुए प्राकृतिक स्रोतों का संरक्षण किया जाता है तथा स्थानीय स्रोतों के पुनः प्रयोग से बाह्य आदानों की आवश्यकता को घटाया जा सकता है और प्राकृतिक ऊर्जा स्रोतों के अधिकाधिक दोहन से ऊर्जा क्षरण से बचा जा सकता है। इन सभी उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए फार्म का आवास निर्माण, जैव विविधता का समावेश व संधारण तथा प्राकृतिक संसाधनों का उचित प्रयोग प्रमुख कार्यशील बिन्दु है जिन्हें सही रूप में अपनाया जाना आवश्यक है। जैविक आंदोलन से जुड़े उत्पादकों, प्रसंस्कर्ताओं, व्यापारियों तथा उपभोक्ताओं से अपेक्षा है कि सबके सद्भाव हेतु पर्यावरण तथा उससे जुड़े अवयव जैसे आवास, भूदृश्य, ऋतु, जैव विविधता, हवा तथा जल का संरक्षण करें।

### 3. समता का सिद्धांत

जैविक खेती साझा पर्यावरण तथा समान जीवन अवसर को सुनिश्चित करते हुए सभी सम्बन्धों में समभाव प्रतिष्ठित करती है। समान अवसर, सम्मान, न्याय तथा विश्व के प्रति आदर का भाव रखते हुए मानव तथा अन्य जीव स्वरूपों के बीच उचित सम्बन्ध समता के सिद्धांत की मूल कड़ी है। इस सिद्धांत के अंतर्गत वे सभी लोग जो जैविक खेती से जुड़े हैं मानवीय मूल्यों को सर्वोपरि रखते हुए सभी लोगों जैसे किसान, प्रसंस्करणकर्ता, वितरक तथा उपभोक्ता इत्यादि के साथ न्यायपूर्ण समान सम्बन्ध व सम्मान सुनिश्चित करें। जैविक खेती मूल्य सभी के लिये अच्छे जीवनयापन अवसर तथा खाद्यान्न सुरक्षा की गारंटी के साथ गरीबी उन्मूलन की दिशा में प्रयासरत रहने की प्रेरणा देते हैं। इस सिद्धांत के अंतर्गत यह भी सुनिश्चित किया जाता है कि पशुओं को भी अच्छा आवास तथा पर्यावरण मिले जिससे वे एक अच्छे वातावरण में अपनी सभी प्राकृतिक आवश्यकताएं भली-भाँति पूरी कर सकें। सभी प्रकृति प्रदत्त संसाधनों का उत्पादन व उपयोग इस प्रकार किया जाये जो पर्यावरणीय, सामाजिक तथा आर्थिक रूप से न्यायसंगत व स्वीकार्य हो तथा आने वाली पीढ़ियों के संसाधनों को भविष्य के लिये संजो कर रखें।

### 4. परिचर्या का सिद्धांत -

जैविक खेती प्रबंधन प्रक्रिया में सावधानीपूर्वक पूरी निष्ठा व उत्तरदायित्व के साथ यह सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि पूरी प्रक्रिया आज की आवश्यकता पूर्ति के साथ-साथ पर्यावरण मित्र हो और आज की तथा आने वाली पीढ़ियों के स्वास्थ्य की देखभाल करे। जैविक खेती एक ऐसी जीवंत तथा लचीली प्रक्रिया है जो सभी आंतरिक तथा बाह्य कारकों के साथ शीघ्र ही सामंजस्य बना लेती है। जैविक प्रबंधन में विभिन्न अवयवों की कार्यक्षमता बढ़ाकर उत्पादन बढ़ाया जा सकता है परंतु यह हमेशा सुनिश्चित किया जाना चाहिये कि यह संसाधनों के दोहन व किसी के भी स्वास्थ्य की कीमत पर न हो। इसके लिए समय-समय पर नई तकनीकों का समावेश तथा पुरानी तकनीकों का मूल्यांकन जरूरी है। इस सिद्धांत के अंतर्गत प्रबंधन, विकास तथा तकनीकों के चयन में सावधानी तथा उत्तरदायित्वता का बोध सर्वोपरि रखा जाता है। सभी के लिये उत्तम स्वास्थ्य तथा पर्यावरण सुदृढ़ता के लिये जैविक प्रबंधन में विज्ञान की भूमिका भी अहम है, परंतु केवल वैज्ञानिक ज्ञान ही पर्याप्त नहीं है। कार्य अनुभव, विद्वता तथा समय की कसौटी पर खरे उतरे स्थानीय तथा पारंपरिक ज्ञान भी इसके महत्वपूर्ण अंग हैं। नई तथा जोखिम भरी तकनीकों जैसे परिवर्तित अनुवांशिकी विज्ञान इत्यादि को जैविक खेती से अलग रखा गया है। किसी भी नई तकनीक को अपनाने से पहले सर्वमान्य रूप से यह सुनिश्चित किया जाना जरूरी है कि इसके प्रयोग से पर्यावरण तथा जीवन के किसी भी अंग पर कोई प्रतिकूल प्रभाव तो नहीं होगा। अपने पूर्ण रूप में जैविक खेती एक टिकाऊ उत्पादन प्रक्रिया है जो प्राकृतिक प्रक्रियाओं तथा संसाधनों पर आधारित है। जैविक खेती के प्रमुख बिन्दु निम्नानुसार हैं :-

- स्थानीय प्राकृतिक संसाधनों का उपयुक्त प्रयोग।
- सूर्य प्रकाश तथा विभिन्न जैव रूपों की जैविक क्षमता का प्रभावी उपयोग।
- मिट्टी की उर्वरता का संरक्षण।
- जैव अंश तथा पौध पोषणों का पुनः चक्रीय रूप में प्रयोग।
- प्रकृति के विरुद्ध किसी भी प्रकार के आदान जैसे रसायन तथा परिवर्तित जैव स्वरूपों के उपयोग पर पूर्ण प्रतिबंध।
- जैव विविधता का संरक्षण तथा उसका उत्तरोत्तर विकास तथा

- सभी जीवों तथा पशुओं के साथ आदर व समता का भाव।

जैविक खेती टिकाऊ तथा उत्पादन क्षम होने के साथ-साथ छोटे किसानों के लिये बहुत लाभकारी है। अनेक परीक्षणों से यह सिद्ध होता है कि भारत जैसे छोटे खेतिहर किसानों के लिये जैविक खेती सबसे उत्तम व लाभकारी प्रक्रिया है। जैविक खेती खाद्यान्न सुरक्षा के साथ निम्न विशेषताओं सहित गरीबी उन्मूलन में भी सहायक है।

- कम उत्पादकता तथा निम्न आदान प्रयोग क्षेत्रों से अधिक उत्पादन सुनिश्चित करती है। खेतों व उनके आस-पास जैव विविधता तथा प्राकृतिक संसाधनों का संरक्षण।
- उत्पादन लागत में कमी कर लाभ बढ़ाना।
- अनेक प्रकार के स्वस्थ भोजन पदार्थों की उपलब्धता बढ़ाना तथा
- पूरी कृषि प्रक्रिया को दीर्घकालीन टिकाऊ रूप देना।

## Environmental Sustainability: Sensitization Through Education

*Rabindra Kumar Mishra*

Assistant Professor in English  
Sariya College, Suriya  
Giridih, Jharkhand

### *Abstract:*

Environmental sustainability is defined as responsible interaction with the environment to avoid depletion or degradation of natural resources and allow for long-term environmental quality. The Covid-19 pandemic has made it clear that insufficient preparation can have serious consequences. We can easily list, calculate and prioritize the extensive global environmental sustainability challenges which need to resolve like global warming, air pollution in Delhi, pollution of the oceans, seas and inland waters, animal species extinction and destruction of their natural habits, significant development of modern cities and agglomerations without a transparent and comprehensive urban strategy. Today's educators have a crucial responsibility in terms of sustainability education. It's essential to raise the next generation into eco-conscious, self-sufficient world citizens who understand the immediacy of environmental responsibility, Need of the hour is that we now have to think and act before that it's too late for us to control the devastating ill effects of environmental degradation. Thus, the present paper focuses on the sensitizing the youth about environmental sustainability through education.

**Keywords:** Environmental Sustainability, Positive effects, Challenges and Solutions.

### *Introduction:*

The health of the environment is intimately connected to human well-being. Whenever we feel stressed or out of touch, many of us instinctively go for walks. We search for hilly areas, forests, parks, beaches, and to roads to feel more at peace connected to nature. Given fact, it's no surprise that human well-being is intrinsically linked to the environment's health (Inspire, 2021).

Environmental Activities such as production and consumption have led to environmental degradation over the last few years. This is evident from the fact that the ecosystem has a limited carrying capacity. The ecosystem fails to carry out its function if the pace of extraction of resources exceeds the rate of regeneration. The resulting phenomenon is called environmental degradation. Resources are finite and hence, extinction is caused by their overuse. The trash produced also exceeds the environmental absorption capability. The excessive dumping of garbage into rivers and waterways is becoming increasingly contaminated. This has led to a low quality of water for drinking. In addition to depleting their finite supplies, the speed of utilization of non-renewable has also contributed to trends in pollution. Therefore, renewable sources or the development of alternative forms of energy are becoming more and more important. The environment and man's well-being have been affected by many types of pollution. Pollution of air and water contributes in particular to air and water-borne illnesses and ill health. Ozone layer depletion and global warming are other severe problems resulting from such degradation (Toppr).

India's environmental issues are progressively worsening. The increasing economic development and a rapidly growing population that has taken the country from 300 million people in 1947 to 1.15 billion by 2010 is putting a strain on the environment, infrastructure, and natural resources of the nation. Industrial pollution, soil erosion, deforestation, and land degradation are all worsening problems. Degradation of environmental resources has been in the form of overexploitation of the country's resources like land or water through the industrialization process. Environmental contamination is we of humans and other life-forms' significant challenges perm our planet today. India's per capita carbon dioxide emissions were roughly 3,000 pounds (1,360 kilograms) in 2007, according to the UNEP report. That was

modest in comparison to China and the United States, which had 10,500 pounds (4,763 kilograms) and 42,500 pounds (19,278 kilogram's) respectively. According to a new UNEP rating, India is the sixth most ecologically dangerous country in the world (UNEP, 2007).

As the world population expands and the long-term effects of excessive energy usage and industrial expansion begin to emerge, additional damage must be avoided. It is our responsibility to guarantee that future generations have safe places to live while minimizing our impact on the earth's bio-diverse ecosystems (Inspire, 2021). We all are aware of the fact that climate change, global warming, ozone depletion, and resource depletion are real, and their effects on human and animal life may be disastrous. It offers a chance to take sustainable living measures that can enable people to minimize their carbon footprint or environmental effect by changing their lifestyle. Sustainable living is the practice of minimizing your demand on natural resources by replacing what you use to the best of your abilities. Sometimes it does not mean picking a product which uses techniques which do not encourage sustainable use, and sometimes it requires altering how you do things to become more an active part of the life cycle (Rinkesh, 2021).

To define environmental sustainability, we must first understand both the terms. The term "environment" refers to the natural surroundings in which we live, which our forefathers bequeathed to us (Career Launcher, 2020). The 'environment' is the total of resources that humans got and the complete planetary heritage. It comprises biotic components (animals, plants, birds, etc.) and abiotic components (sun, soil, water, mountains, etc.). It illustrates how biotic and abiotic components relate to each other. The environment performs four crucial functions (Toppr):

Whereas, Sustainability is the ability to continue defined behavior indefinitely. We look to experts to determine what environmental sustainability is the issue was considered from a view to maintaining natural capita by Herman Daly, one of the early pioneers of ecological sustainability. It suggested in 1990 that: (R) That harvest rate should not surpass the regeneration (sustainable yield) of renewable resources, (D) That pollution rates should not exceed the environmental assimilation capability (sustainable waste disposal) of project waste creation, and (D) For non-renewable resources the depletion of the non Renewable resources should require comparable development of renewable substitutes for that resource (Daly, 1990).

Environmental sustainability is responsible for conserving and safeguarding health and welfare in the Global ecosystem today and in the future. Since so many environmental decisions are not immediately realized, Their forward-looking character is a fundamental part of environmental sustainability. In fact, the U.S. Environmental Protection Agency defines it as "meeting

Today's needs without compromising the ability of future generations to meet their needs" (Sphera, 2020). Environmental sustainability is the indefinable rates of harvesting of renewable resources, creating pollution and depleting non-renewable resources. They are not sustainable if they cannot be sustained forever. (Daly, 1990).

According to the UNEP, the rate of harvest should not exceed the rate of regeneration or sustainable yield for renewable resources, the rate of waste generation from projects should not exceed the assimilative capacity of the environment or sustainable waste disposal. For pollution and the depletion of the non-renewable resources should require comparable development of renewable substitutes for that resource for non-renewable resources (UNEP, 2007). Currently, India ranks 101 out of 146 countries on the 2005 Environmental Sustainability Index (ESI, 2005). Although ESI is slightly better than China's ranking, with its soaring population, increasing stress to its air and water; its future energy and resource use are uncertain, and its agricultural productivity is at risk. India also tests democracy's effectiveness. The network of people who can better monitor the environment than the authoritative system has been well recognised. (ESI) rates nations on the basis of factors such as health, governance, technology and international collaboration, and analyses the possibility that, over several decades, a country can effectively maintain rich environmental resources (Sugumar, 2018).

The green living movement encourages people to live in a more environmentally friendly way, and there are a number of different ways to "go green." Although most people know that greening is healthy for the Earth, they may not completely comprehend its impact. Greening offers several positive environmental effects which help to cleaner water and air, save natural resources and minimize the impacts of global warming (Lake, 2018):

"The Covid-19 epidemic has shown that inadequate preparedness may have significant effects. There is no cure for climate change, but we can resist it and prepare for its unavoidable effects. The European Union is already feeling the impacts of climate change. The new climate change adaptation plan allows us to expedite and scale up our preparations. We still have a chance to develop resilience to climate change if we plan now" argued Timmermans. We can easily list, calculate and prioritize the extensive global environmental sustainability challenges which need to resolve (Iberdrola, 2021):

1. Global warming due to CO2 emissions. The climate change is accelerating and threatens the whole global ecosystem by causing serious meteorological disasters like droughts, fires and floods, which are becoming increasingly frequent and more extreme. As a result, it is strongly suggested to minimize climate change.
2. Air pollution and water contamination. Experts estimate that nearly 90% of humanity breathes polluted air. As a result, it is critical to reduce air pollution, limits the use of chemicals, and treating more wastewater in order to lower respiratory disease rates, therefore saving seven million fatalities each year. Contaminated water is also dangerous to one's health.
3. Pollution of the oceans, seas and inland waters. The oceans have evolved into massive landfills for plastic and other manmade stuff. Due to economic advancement of many economically underdeveloped regions- there are serious environmental problems related to the oceans such as damage to ecosystems from dumping pollutants, wastewater and fuel spills.
4. Slow energy transition and insufficient share of renewable energy. Many people throughout the world do not have access to electricity and therefore rely on fossil fuels to cook. This situation requires an energy transition towards a cleaner, more accessible and efficient model based on the use of renewable energy sources to build communities that are more sustainable.
5. Uncompromising food production harms. Overexploitation of natural resources and environmental disturbance deplete the soil and harms marine ecosystems. To conserve energy and reduce gas emissions, changing the food production model and eating habits, including a more plant-based diet with local products, takes effort and care.
6. Animal species extinction and destruction of their natural habits. The UN experts urge for the protection of biodiversity and the implementation of decisive steps to eliminate these risks and preserve our natural heritage, especially our increasingly vulnerable forests. Animal species extinction and destruction of their natural habits is a serious problem.
7. Significant development of modern cities and agglomerations without a transparent and comprehensive urban strategy. Another of the decade's major environmental concerns will be the expansion of cities, which would need to house roughly 5 billion people by 2030. Future metropolises will need to be compact, safe, inclusive, ecological, and energy efficient, with more green areas, ecologically friendly structures, and more sustainable modes of transportation that priorities pedestrian requirement above traffic demands. Due to such circumstances, there is a necessity to create and maintain sustainable urban development and mobility.
8. Hydric stress and water scarcity. The lack of this resource affects more than 40% of the world population, and according to the World Economic Forum, agriculture accounts for more than 70% of the water used in the planet's most arid countries. The responsible use of hydrological resources will improve food and energy production, as well as protecting the biodiversity of our water ecosystems and helping us slow climate change.

9. Overpopulation and waste management. The world population is anticipated to surpass 8.5 billion by 2030, compelling us to significantly reduce the amount of trash we create as part of the circular economy, with the goal of reducing the effect on health and the environment.

### **Role of Education in Sensitizing the Environmental Sustainability:**

The United Nations has designated 2005-2014 as the Decade of Education for Sustainable Development, with the overarching objective of utilizing education as a way of combining sustainable development concepts with human values and perspectives in order to build a sustainable society (UNESCO, 2005). According to the Environmental Education and Training Partnership, or LETAP, environmental education encourages citizens to intake knowledgeable and informed decisions about their environmental behavior based on the awareness, knowledge, skills, and attitudes instilled in them. To achieve the ultimate objective of encouraging individuals to take educated and good actions toward the environment, environmental education employs both formal and nonformal educational approaches. To achieve its objectives, environmental education employs a wide range of disciplines, methodologies, and resources. Environmental education may be a technique that crosses various learning styles since children learn from a variety of nontraditional, multiple intelligences such as naturalistic, interpersonal, or intrapersonal intelligences (EETAP, 2000).

Good quality education is an essential tool for achieving a more environment sustainable world. Education for Environmental Sustainability (EES) promotes the development of the knowledge, skills, understanding, values and actions required creating a sustainable world, which ensures environmental protection and conservation, promotes social equity and encourages economic sustainability. The concept of EES developed largely from environmental education, which has sought to develop the knowledge, skills, values, attitudes and behaviors in people to care for their environment. The aim of EES is to enable people to make decisions and carry out actions to improve our quality of life without compromising the planet. It also intends to incorporate the principles inherent in sustainable development into all areas and levels of education (Nevin, 2008). In terms of sustainability education today's educators bear a significant burden. It is critical to develop the next generation of eco-conscious, self-sufficient global citizens who realize the urgency of environmental responsibility (Abel, 2019):

### **1. Interdependence between Humans and the Environment:**

The environment supplies us with nutrition, sustenance, and shelter, as well as everything we need to exist- but its role in our lives is increasingly being overlooked. In addition to humans, trees offer timber, food supplies, and oxygen, and they sustain a variety of ecosystems. Without them, the water cycle would be disrupted, resulting in extremes such as droughts and catastrophic flooding. Despite this, forests have fallen by 32% since the beginning of the modern period, with 15 billion trees chopped down each year. Deforestation is also responsible for 13% of worldwide fossil fuel emissions. The ocean also helps us survive by controlling weather patterns and providing more than half of our planet's oxygen. However, it has grown increasingly contaminated with trash, oil, and poisons, threatening the marine life that keeps the globe afloat. While contemporary civilization frequently deviates from nature, people and the environment are intimately linked and it is critical to demonstrate this to students in order to prevent future negligence and damage to our ecosystem. Teaching theoretical environmental science is a good start, but allowing students to experience the concept firsthand is far more beneficial.

## **2. The Balance Between Environment and Society:**

Teaching adolescents how to discover environmentally friendly businesses and establish their own sustainable economic ventures can contribute to a more environmentally friendly social future. Consumers in previous decades were frequently unaware of how business and manufacturing affected the environment, but this is rapidly changing. As a sustainability educator, hands-on environmental education enables students to investigate the actual world...outside of their classroom...and how they may have an influence on it as individuals.

## **3. Respect for the Planet:**

The Earth is the next generation's sole home, and understanding more about it is critical to its survival. Respect for our world entails knowing about its history, functions, and what it needs to thrive. What youngsters learn in school influences them throughout their lives. Beginning with sustainable education at a young age teaches children because the environment is essential, how it should be handled, and how they play a vital part in the future of its survival. More regard for the environment equals reduced trash, pollution, and resource waste. It entails developing more sustainable behaviors and making attempts to save resources. It entails developing more sustainable behaviors and making attempts to save resources. More than anything, it refers to a mindset founded in environmental principles a worldview that is nurtured and cemented early on.

## **4. Future Preparation and Adaptation:**

The world we live in now will not be the same in a few decades. Predictions do not bode good, but education can both prepare kids for future changes and provide them with the tools they need to avoid additional harm. We will offer our children the capacity to live in an uncertain future terrain if teachers, professors, and parents educate them today. More significantly, today's students may grow up to be future scientists, researchers, and activists who strive to safeguard our resources. Environmental education prepares children to manage a changing environment by teaching them self-sufficiency, science, and conservation.

## **5. Sustainable Life Skills:**

Agriculture laboratories and sustainable projects, for example, inspire students to reconsider their relationship with the environment and build eco-friendly skills and habits for their future. Children will learn to produce their own food, preserve resources, and pick environmentally friendly goods, but early sustainable Education may also have a significant influence on their life paths. Many universities now offer sustainability degrees as well as majors in related disciplines. Green degrees prepare students for jobs as biologists, environmental scientists, researchers, and many other fields. Agriculture, Energy, and manufacturing are all attractive areas for sustainability since they are constantly seeking for methods to include eco-friendly operations. Giving kids a head start with early sustainable education will do more than instill sustainable life skills it may also help prepare them for successful careers.

## ज्ञान, समानता और न्याय के प्रतिमूर्ति : बाबासाहेब डॉ. भीमराव अंबेडकर

डॉ अरुण कुमार

विभागाध्यक्ष ,राजनीति विज्ञान  
(सरिया कॉलेज ,सरिया)

भारतीय संविधान के मुख्य शिल्पकार, महान समाज सुधारक, कानूनवेत्ता, स्वतंत्रता सेनानी तथा आधुनिक मनु के नाम से लोकप्रिय बाबासाहेब भीमराव अंबेडकर का जन्म दिवस पूरे मुल्क में आज "ज्ञान दिवस" के रूप में मनाया जा रहा है।

भीमराव आंबेडकर का जन्म 14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महु में हुआ था। इनके पिता का नाम रामजी मालोजी सकपाल, जबकि माता का नाम भीमाबाई था। इनकी शादी मात्र 16 वर्ष की उम्र में रमाबाई के साथ हुई थी। इनका जन्म हिंदू महार जाति में हुआ था। दलित परिवार में जन्म होने के कारण इनका पूरा परिवार छुआछूत तथा शोषण का शिकार बने। भीमराव अंबेडकर का पूरा जीवन कठिनाइयों में बीता। दलित होने के कारण छात्र जीवन में शोषण का शिकार होना पड़ा। व्यक्तित्व एवं प्रतिभाशाली विद्यार्थी होने के कारण दलित होने के बावजूद बॉम्बे विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद, वे कोलंबिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से डॉक्टरेट प्राप्त करने वाले पहले भारतीय बने। उनकी शिक्षा ने उन्हें सामाजिक असमानता के खिलाफ आवाज उठाने की ताकत दी।

भीमराव अंबेडकर एक वकील, प्रोफेसर, राजनीतिज्ञ के रूप में जाने जाते हैं। भारतीय संविधान के निर्माण में भीमराव अंबेडकर का अद्वितीय योगदान रहा है। अंग्रेजों के शासनकाल में भारत में प्रचलित जातिवाद व छुआ छूत को गुलामी से भी बदतर माना। उनका मानना था कि समाज में जाति के नाम पर भेदभाव एवं गंभीर शोषण होते हैं जो उचित नहीं है। वे जातिवाद एवं जातिगत भेदभाव से भी निरंतर लड़ते रहे तथा दलितों को संगठित करने के लिए त्रिसूत्र सिद्धांत का प्रतिपादन किया। इसके अंतर्गत उन्होंने शिक्षा, संगठन और संघर्ष को दलित को अपनाकर जोर दिए। दलितों को शिक्षित करने तथा लड़ने के लिए प्रेरित करते हुए शिक्षा को बढ़ावा तथा समाज में व्याप्त भेदभाव तथा शोषण के खिलाफ संघर्ष करने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने साप्ताहिक पत्रिका मूक नायक, बहिष्कृत भारत, जनता, समता जैसे पत्र पत्रिकाएं प्रकाशित कर लोगों को जागरूक करने का कार्य किया डॉ भीमराव अंबेडकर एक समाज सुधारक और राजनीतिक ही नहीं बल्कि एक दूर दृष्टा भी थे। अंबेडकर ने जाति व्यवस्था और छुआछूत के खिलाफ जीवन भर संघर्ष किया। 1927 में महाड सत्याग्रह का नेतृत्व कर उन्होंने दलितों को सार्वजनिक जलाशय से पानी पीने का अधिकार दिलाया। 1932 के पूना पैक्ट के माध्यम से उन्होंने दलितों के लिए अलग निर्वाचन क्षेत्र सुनिश्चित किया। उन्होंने अपना पूरा जीवन समाज में व्याप्त कुरीतियों एवं विषमताओं को दूर करने में लगा दिया। उन्होंने शिक्षा पर विशेष बल दिया उन्होंने कहा कि शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति का जन्मसिद्ध अधिकार है। शिक्षा सस्ती एवं गुणवत्ता पूर्ण हो। शिक्षा का मार्ग सभी के लिए खुली होनी चाहिए, क्योंकि समाज की प्रगति बुद्धिमान, कर्मठ व उत्साही युवाओं पर निर्भर करता है। शिक्षा वह है जो व्यक्ति को निडर बने, एकता का पाठ पढ़ाए, लोगों को अपने अधिकारों के प्रति सचेत करें, संघर्ष की सीख दे और आजादी के लिए लड़ना सिखाए। अंबेडकर ने शिक्षा को मानवतावाद का एक महत्वपूर्ण अंग माना शिक्षा के बिना मनुष्य को पशु के समान बताया।

भारत में धर्म के नाम पर होने वाले बाह्य आडंबर एवं कर्मकांड के विरोधी थे। उनका मानना था कि " धर्म मनुष्य के लिए है ना कि मनुष्य धर्म के लिए। वह एक ऐसे राष्ट्र का निर्माण करना चाहते थे जहां पर हर व्यक्ति को अपने धर्म को अपनाने व मानने की स्वतंत्रता हो तथा दूसरे धर्म के प्रति आदर व सम्मान का भाव हो। उन्होंने सभी धर्म को सहिष्णु बनाने और मानवता एवं बंधुता से जोड़ने पर बोल दिया। उनका मानना था की मानवता ही सबसे बड़ा धर्म है। बाबा साहेब ने कहा था कि भ्रष्ट हिंदू धर्म में पैदा हुआ हो परंतु मैं हिंदू धर्म में मारुंगा नहीं" इसका मुख्य वजह यह था कि हिंदू धर्म में इन दिनों जाति के नाम पर प्रचलित भेदभाव रहे थे। दलितों का शोषण हो रहा था। इसलिए उन्होंने

अपने जीवन के अंतिम समय में 14 अक्टूबर 1956 ईस्वी में चार लाख समर्थकों के साथ हिंदू धर्म को त्याग कर बौद्ध धर्म को अपना लिया था।

संविधान सभा के आखिरी भाषण में भीमराव अंबेडकर ने 25 नवंबर 1949 को उन्होंने कहा की जातियां राष्ट्र के लिए विघातक है, जल्दी हमें उनसे मुक्ति होनी चाहिए। उन्होंने माना था कि मेरे विचार में जाति रहित संघ बनाकर हिंदू समाज आत्मरक्षा हेतु अधिक शक्तिशाली बन जाता है तो ही उससे कुछ हो सकता है। अन्यथा हिंदू का स्वराज गुलामी के गर्त में उतारने का एक पायदान सिद्ध होगा।

वे लोकतंत्र के बड़े उपासक थे तथा लोकतांत्रिक मूल्यों में उनकी गहरी आस्था थी। उन्होंने स्वतंत्रता समानता एवं बंधुता पर अत्यधिक बल दिया। बाबा साहब ने सामाजिक न्याय की स्थापना के लिए संविधान में दलितों, शोषितों तथा अपेक्षित वर्ग के कल्याण के लिए स्वतंत्रता, समानता, न्याय तथा आरक्षण जैसे प्रावधानों को संविधान में जगह प्रदान किए। वे सामाजिक न्याय के प्रति मूर्ति थे। राष्ट्र निर्माण में अंबेडकर के योगदान अलौकिक है। अंग्रेजों के शासनकाल में वे कई पदों पर आसीन रहे। सन 1926 से लेकर 1936 ई तक मुंबई विधान परिषद के सदस्य रहे, 1937 से 42 ई तक मुंबई विधानसभा के सदस्य तथा विपक्ष के नेता के रूप में अपना योगदान दिए। वायसराय की कार्य परिषद में जुलाई 1942 से लेकर 1946 तक श्रम मंत्री के रूप में तथा संविधान निर्माण सभा में मसौदा समिति के अध्यक्ष के रूप में तथा देश की आजादी के बाद सर्वप्रथम कानून मंत्री के रूप में अपना योगदान दिए। उन्होंने शेड्यूल कास्ट फेडरेशन, स्वतंत्र लेबर पार्टी तथा भारतीय रिपब्लिक पार्टी नामक राजनीति संगठनों का भी निर्माण किया। वहीं बहिष्कृत हितकारिणी सभा तथा समता सैनिक दल जैसे सामाजिक संगठन का नींव रखा। भारत सरकार ने राष्ट्र के प्रति उनके कार्यों एवं योगदानों के लिए मरणोपरांत 1990 ईस्वी में भारत रत्न पुरस्कार, 2004 ईस्वी में कोलंबिया अहेड ऑफ देयर टाइम्स तथा 1956 ईस्वी में श्रद्धांजलि पुरस्कार मिले।

इन्हीं सभी कारणों से भीमराव अंबेडकर को एक महान समाज सुधारक माना जाता है। उन्होंने न केवल समाज में बराबरी की नींव रखी, बल्कि एक न्यायपूर्ण और समतामूलक भारत के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जिसके कारण से भीमराव अंबेडकर को आधुनिक मनु के नाम से जाने जाते हैं। जिन्होंने संविधान में समानता, स्वतंत्रता और न्याय के सिद्धांतों को शामिल किया, जिससे हर नागरिक को बराबरी का अधिकार मिला।

## **Culture, Folklore, And Ecology of Indigenous Tribes In Jharkhand**

*Prof. Asit Diwakar*

**HOD  
Department of Geography  
Sariya College, Suriya**

### ***Abstract:***

This study explores the intricate relationship between the culture, folklore, and ecology of indigenous tribes, highlighting the deep-rooted connections between traditional knowledge systems and the natural environment. Indigenous cultures around the world possess rich oral traditions, symbolic rituals, and folklore that not only preserve their heritage but also reflect their ecological wisdom and sustainable practices. This study delves into the culture, folklore, and ecology of the indigenous tribes of Jharkhand, a state in eastern India known for its rich tribal heritage and biodiversity. Jharkhand is home to numerous tribal communities such as the Santhal, Munda, Ho, Oraon, and Birhor, each with a unique cultural identity deeply rooted in nature. Their traditional beliefs, customs, festivals, and oral narratives reflect a symbiotic relationship with the forests, rivers, and wildlife around them. Tribal folklore in Jharkhand is not merely storytelling—it embodies ecological knowledge, agricultural practices, seasonal changes, and conservation ethics passed down through generations. This paper highlights how tribal festivals like Sarhul and Karma celebrate nature and mark agricultural cycles, while folk songs and myths serve as a medium to communicate environmental values. The tribes' sustainable living practices—such as shifting cultivation, forest-based livelihoods, and herbal medicine—illustrate their intricate understanding of local ecosystems. However, the ecological balance and cultural fabric of these communities are increasingly threatened by industrialization, deforestation, and socio-economic marginalization. The study emphasizes the importance of preserving the indigenous ecological wisdom of Jharkhand's tribes, not only as cultural heritage but also as a valuable resource for contemporary environmental conservation and sustainable development

These narratives often embody environmental ethics, seasonal knowledge, and biodiversity conservation techniques passed down through generations. By examining various indigenous communities, this paper sheds light on how folklore serves as a medium for environmental education, social cohesion, and cultural identity. Furthermore, the research underscores the urgency of preserving indigenous ecological knowledge in the face of globalization, environmental degradation, and cultural assimilation. Understanding and integrating indigenous perspectives is crucial for fostering sustainable development and biodiversity conservation in the modern era.

### ***Introduction:***

Jharkhand, often referred to as the “land of forests,” is one of India's most culturally vibrant states, known for its rich tribal heritage and natural diversity. The indigenous tribes of Jharkhand, such as the Santhal, Munda, Oraon, Ho, Kharia, and Birhor, form the backbone of its cultural identity. There is total 32 tribal groups, These communities have preserved their unique traditions, customs, and lifestyles for centuries, making Jharkhand a living repository of indigenous wisdom. Their culture is reflected in their festivals, dances, songs, handicrafts, and traditional practices that not only bind the community together but also express their deep connection with the land and nature.

Folklore plays a vital role in sustaining the identity of these tribes. Through oral traditions, myths, folk tales, and songs, they pass down collective experiences, values, and moral lessons from one generation to another. These stories are not just a form of entertainment but also a means of preserving history, educating the youth, and strengthening community bonds. The vibrant folk music and dance forms like Chhau, Paika, and Jhumar also illustrate the spirit of unity, resilience, and reverence for nature.

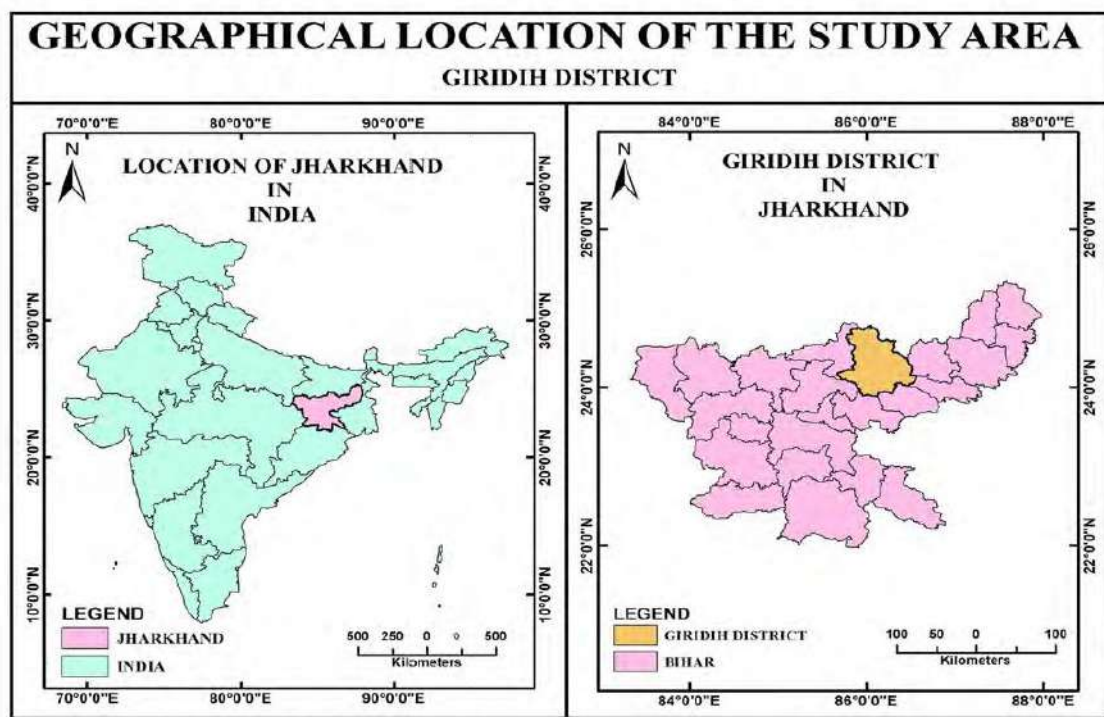
Equally significant is the ecological wisdom of the tribes of Jharkhand. Their livelihood practices are intricately tied to forests, rivers, and agricultural lands. They follow traditional methods of farming, hunting, and resource use that emphasize sustainability and respect for natural ecosystems. Sacred groves, totems, and rituals associated with nature highlight their belief in the interdependence of human life and the environment.

The culture, folklore, and ecological practices of indigenous tribes in Jharkhand together form a holistic way of life that emphasizes harmony, sustainability, and collective identity. Exploring these aspects provides valuable insights into how traditional societies coexist with nature while preserving cultural diversity in a rapidly changing world.

### Tribes Of Jharkhand

Jharkhand is often regarded as the state of tribes, as it has the highest concentration of tribal communities in India. Historically, tribal populations across the country were often viewed as barbaric, wild, and unruly, even before the British colonial period. During those times, many tribes were treated as outcastes or untouchables, and unfortunately, traces of this social discrimination can still be seen in certain regions of India. According to the Census of India (2011), Jharkhand has a total population of 32,988,134, with 24 administrative districts. Among these, Khunti district records the highest proportion of tribal population, while Koderma has the lowest, with only 0.96 percent. Other districts with significant tribal populations include Simdega, West Singhbhum, East Singhbhum, Saraikela-Kharsawan, Ranchi, Giridih, and Lohardaga.

Within Jharkhand, several tribal groups are categorized as Particularly Vulnerable Tribal Groups (PVTGs). These include the Asur, Birhor, Birjia, Hill Kharia, Korwa, Mal Paharia, Pahariya, Sauria Pahariya, and Savar. Land ownership patterns reveal that around 67.1 percent of tribal households are engaged as agricultural laborers (Census 2011). Despite this, poverty remains widespread, and access to quality education is still limited. Due to their habitation in remote and forested areas, opportunities for both primary and higher education do not effectively reach these communities. Although primary schools exist in peripheral regions and within tribal settlements, many children remain deprived of schooling due to lack of infrastructure and accessibility. Consequently, for a large section of tribal students, good education remains an unfulfilled dream.



Source: Giridih District Census Handbook, Census of India-2011

(Vaidet.al2011) Scholars have highlighted that the tribal population of Jharkhand is broadly classified into five major subdivisions, which are further divided into smaller groups to ensure effective policy implementation. While government initiatives have been undertaken to provide land rights and promote education, challenges persist. Some communities have embraced education and secured employment, but many others still struggle without even basic schooling.

### **Objectives:**

- To explore and document the cultural practices and traditions of indigenous tribes, highlighting their festivals, rituals, art forms, and social customs that preserve community identity and heritage.
- To analyze the role of folklore as a medium of knowledge transmission, focusing on how myths, songs, oral narratives, and dances reflect tribal values, history, and worldviews.
- To examine the ecological relationship between indigenous tribes and their environment, emphasizing their sustainable practices, conservation methods, and harmonious coexistence with nature.
- To highlight the contribution of indigenous cultural practices, folklore, and ecological wisdom as integral parts of the Indian Knowledge System, showcasing how traditional tribal knowledge promotes sustainability, community harmony, and preservation of biodiversity.

### **Research Method:**

The methodology adopted in the present study is both qualitative and quantitative. Researchers use both primary and secondary data to study socio-economic activities. It is also proposed to use some qualitative techniques to collect primary data/information. Secondary data is available through agencies like the National Sample Survey, Census of India, and Central Statistical Organisation. Religious values

The Indian Knowledge System (IKS) is a vast repository of traditional wisdom, values, and practices that have evolved over centuries through the lived experiences of diverse communities. Among these, the indigenous tribes of India, particularly those in regions like Jharkhand, occupy a unique place in preserving cultural heritage, folklore, and ecological knowledge. Their way of life is deeply rooted in nature, spirituality, and collective traditions, which align with the principles of IKS emphasizing harmony between humans and the environment.

### **Indian Knowledge System**

The culture of indigenous tribes reflects a holistic worldview where art, rituals, festivals, and community life are inseparable from nature. Tribal dances, songs, and crafts are not only creative expressions but also vehicles for transmitting ethical values, historical memory, and social cohesion. These practices resonate with the IKS framework, which recognizes culture as a medium for sustaining knowledge systems and collective identity.

Folklore plays an equally significant role. Myths, legends, proverbs, and oral narratives of tribal communities serve as educational tools for the younger generation. They communicate lessons on morality, survival skills, social responsibilities, and respect for nature. This oral tradition mirrors the IKS emphasis on experiential and narrative-based learning, where wisdom is passed down through stories and lived practices rather than formal instruction.

Ecology forms the backbone of tribal existence. Their agricultural methods, use of forest resources, and conservation practices demonstrate sustainable living. Sacred groves, totemic beliefs, and eco-centric rituals illustrate their awareness of biodiversity and ecological balance. Such ecological knowledge is a vital component of the Indian Knowledge System, offering lessons in environmental ethics and resource management.

Thus, the culture, folklore, and ecology of indigenous tribes embody the essence of the Indian Knowledge System. They not only preserve traditional wisdom but also provide contemporary society with insights into sustainable development, community well-being, and coexistence with nature.

## How to help In the Indian knowledge system Through Culture, folklore, and ecology of indigenous tribes?

### 1. Preserving and Documenting Cultural Heritage

The festivals, dances (like Chhau and Jhumar), art, and rituals of Jharkhand's tribes reflect centuries-old traditions that form part of India's intangible cultural heritage. By documenting and promoting these practices through museums, digital archives, and educational curricula, we can enrich the Indian Knowledge System with indigenous cultural wisdom that emphasizes community bonding, spirituality, and creativity.

### 2. Integrating Folklore into Education

Tribal folklore—myths, stories, proverbs, and songs—can be used as tools in modern education to teach values, ethics, and history. Incorporating these oral traditions into school syllabi or community learning programs helps preserve indigenous knowledge while also revitalizing the IKS emphasis on storytelling and experiential learning.

### 3. Adopting Ecological Wisdom for Sustainability

Indigenous ecological practices, such as sustainable farming, forest conservation, and sacred groves, offer practical models for biodiversity preservation and climate resilience. Integrating these eco-friendly methods into agricultural policies and environmental education can strengthen the ecological dimension of IKS and provide solutions for modern sustainability challenges.

### 4. Promoting Community-Led Research

Encouraging participatory research with tribal elders, storytellers, and farmers ensures that their lived experiences become part of the Indian Knowledge System. Universities and research institutions can collaborate with tribal communities to validate, preserve, and apply their knowledge in areas like natural medicine, water management, and sustainable livelihoods.

### 5. National and Global Awareness

Showcasing Jharkhand's tribal culture, folklore, and ecology at national festivals, academic conferences, and global platforms can position indigenous knowledge as a vital contributor to IKS and as a model for cultural diversity and environmental sustainability worldwide.

### Global impact

The indigenous tribes of Jharkhand represent one of the richest reservoirs of cultural traditions, folklore, and ecological wisdom in India. Their unique way of life, rooted in harmony with nature, resonates not only at the local level but also has global significance. In today's world, where cultural diversity is under threat and ecological crises are intensifying, the knowledge of Jharkhand's tribes offers lessons that deserve worldwide attention and action.

Culturally, tribal festivals, music, dance, and crafts are living examples of how communities sustain their heritage across generations. By promoting tribal art forms and rituals on international platforms such as UNESCO's Intangible Cultural Heritage lists, cultural exchanges, and global exhibitions, the indigenous culture of Jharkhand can gain recognition and protection. Such initiatives also ensure that globalization does not erode their identity but instead provides them with a voice in the global cultural dialogue.

The folklore of Jharkhand's tribes—comprising myths, oral stories, and folk songs—carries timeless wisdom about morality, community values, and respect for nature. Documenting these oral traditions and translating them into world languages can inspire intercultural learning. International organizations working in heritage preservation can collaborate with local communities to safeguard these narratives as a vital part of humanity's collective knowledge system.

Equally significant is the ecological knowledge embedded in tribal practices. Their sustainable farming, conservation of sacred groves, and eco-centric rituals reflect an environmental consciousness that the modern world urgently needs. Sharing these practices in global climate forums, environmental education programs, and sustainable development projects can provide alternative solutions to ecological challenges worldwide.

Thus, the culture, folklore, and ecology of Jharkhand's indigenous tribes are not just local treasures but global assets. Through worldwide action—documentation, promotion, and integration—these traditions can contribute to cultural diversity, environmental sustainability, and a more harmonious relationship between human beings and nature.

## **Beyond Gender Sensitization: Understanding Gender Sensitization as per the UGC's Saksham Report**

*Dr. Sweta*

**Department of Sociology  
Sariya College, Suriya**

In discussions about safety on college campuses, attention often focuses on rules, committees, and punishments. While these are important, the University Grants Commission's Saksham report, 'Measures for Ensuring the Safety of Women and Programmes for Gender Sensitisation on Campuses', makes a key point: **rules alone cannot change campus culture. Education is equally necessary.**

So, what exactly is Gender Sensitization according to this document? According to the report, gender sensitization means unlearning harmful stereotypes and learning to treat every person with dignity, regardless of gender. It is about changing attitudes, not just enforcing regulations. The report begins by observing that institutions have long relied mainly on a punitive approach. This means action is taken only after an incident occurs, such as filing complaints, conducting inquiries, and giving punishments. This approach is not enough. A respectful campus cannot be created only through punishment. The real problem lies in deep-rooted attitudes, prejudices, and even the lack of basic facilities. Because of this, the Saksham framework shifts the focus from punishment to prevention and education. The aim is to create an environment where harassment becomes unthinkable, not just punishable.

### **Gender: Power and Inequality**

The report also explains gender as a system shaped by power and inequality, rather than simply a biological difference. Patriarchy creates unequal power relations on campuses. People in authority, such as teachers, senior students, and administrators, often hold more control than others, especially women and marginalized groups. This imbalance leads to what the report describes as a "culture of silence." Many victims do not speak up, not because nothing happened, but because they feel powerless against those in dominant positions.

The report highlights that everyday interactions can also reflect power. Sexist jokes, casual comments about appearance, and eve-teasing are not harmless acts. They are forms of behavior that intimidate and reinforce inequality. Institutional failures can deepen this problem. For example, weak Internal Complaints Committees may allow powerful individuals to avoid consequences, which further discourages victims from reporting incidents.

Campus infrastructure also reflects unequal power relations. Poorly lit roads, locked women's toilets, and lack of safe transport send a message about who the campus is designed for and who is expected to adjust. Similarly, moral policing measures such as dress codes and curfews for women are presented as safety measures, but the report views them as forms of control over women's bodies and choices.

The Saksham report argues that gender sensitization is necessary because power is not equally shared. Those who have power may not recognize their privilege, while those without power often learn to live with fear and limited opportunities. The goal of gender sensitization, therefore, is to change these unequal relationships and create a campus environment based on mutual respect and shared dignity.

## झारखण्ड में नक्सलवाद : समस्या एवं चुनौतियाँ

*Dr. Ashish Kumar Singh*

Department of Political Sc.  
Sariya College, College

### शोध सरांश

बिहार से जब 15 नवम्बर, 2000 को झारखण्ड अलग हुआ तब सभी के मन में यह उम्मीद जगी थी कि यह राज्य शीघ्र ही देश के विकसित राज्यों के बीच अपना मुकाम बना लेगा। किंतु प्राकृतिक वैभव के साथ उग्रवाद की समस्या विरासत में मिली जो स्वयं को माओवादी, लेनिनवादी कहते हैं, लेकिन न तो इन्होंने माओ और लेनिन की चरित्र को ध्यान में रखा न ही उनकी विचारधारा को। इन संगठनों ने सर्वहारा के नाम पर अपनी स्वहित को ही आगे बढ़ाया। खनिज संपदा से परिपूर्ण राज्य में जहाँ उद्योग धंधों का विकास होना चाहिए वहाँ गोली और बंदूक की आवाज़ सुनाई देती है। "झारखण्ड में संताल परगना को छोड़कर झारखण्ड के सभी जिलों में माओवादियों का असर है, जहाँ वे बेरोक टोक समानांतर सरकार चलाते हैं। जनआंतक के द्वारा ये लोगों में दहशत पैदा कर महौल को अपने पक्ष में करने का प्रयास करते हैं। माओवाद के नाम पर राष्ट्रीय सम्पत्ति को नुकसान पहुँचाते हैं।

एकीकृत बिहार में जब उग्रवाद का प्रादुर्भाव हुआ तब यह माना जाता था कि जातीय असंतोष का परिणाम है, लेकिन आज की परिस्थिति को देखकर कहा जा सकता है कि ये विचारधारा के नाम पर अपनी रोटी सेकने का कार्य करते हैं।

2012 में डॉ० मनमोहन सिंह ने नक्सलवाद को देश की आंतरिक सुरक्षा की दृष्टि से सबसे बड़ा खतरा बताया तथा नक्सलवाद के खिलाफ 'जीरो टोलरेंस' की नीति अपनाने पर बल दिया। ऐसे में नक्सली आन्दोलन के खिलाफ लड़ाई आतंकवाद के खिलाफ अभियान से कहीं अधिक मुश्किल व चुनौतिपूर्ण है।

**मूल शब्द:** नक्सलवाद, आंतरिक सुरक्षा, हथियारबन्द आन्दोलन, गाँधीवाद, सत्याग्रह

### नक्सलवाद का उदय

'चीन के साम्यवादी दल की विचाराधारा से प्रभावित भारत के साम्यवादी विचाराधारा पर अमल करने वाले लोगों ने पश्चिमी बंगाल के नक्सलबाड़ी, हमारबाड़ी, तुमारबाड़ी आदि छोटे ग्रामीण स्थानों से नक्सलवाद की शुरूआत मानी जाती है।

"1970 के दशक में अपनी जमीन पर नाजायज तरीके से आधिपत्य के कारण वहाँ के किसानों में भूस्वामियों के खिलाफ सशस्त्र विद्रोह की शुरूआत कर दी। इन किसानों को साम्यवादियों का प्रत्यक्ष समर्थन मिला। इस प्रकार की विचारधारा से प्रभावित होकर एक हिंसक आन्दोलन का जन्म हुआ जिसे नक्सलवाद कहा जाता है।

वर्तमान में नक्सली गतिविधियाँ देश के 20 राज्यों के 223 जिलों में 2000 थाना क्षेत्रों में फैली हुई है। जिनमें प्रमुख राज्य हैं—पश्चिमी बंगाल, आंध्रप्रदेश, झारखण्ड, बिहार, उड़ीसा, छत्तीसगढ़, तमिलनाडु, महाराष्ट्र और उत्तरप्रदेश। देश के लगभग छठवें हिस्से पर नक्सली अपना मजबूत नियंत्रण जमा चुके हैं। “नक्सली समस्या मूलतः सामाजिक, आर्थिक विकास और शोषण उत्पीड़न से जुड़ी हुई है, इसलिए बन्दूक और सैनिकों के बल पर इसका समाधान संभव न होगा। इसके लिए ‘विकास के लाभ व न्याय को निचले स्तर तक पहुँचाना होगा। देश की आबादी का एक बड़ा वर्ग विकास से वंचित, शोषित व प्रताड़ित है जबकि विकास दर को दहाई के आँकड़े पर लाने की बात की जा रही है, लेकिन इसका फायदा गरीब व वंचित तबके के लोगों को नहीं मिल पा रहा है।

#### झारखण्ड राज्य नक्सल प्रभावित जिलों की सूची :-

- |             |                    |
|-------------|--------------------|
| 1. पलामू    | 9. कोडरमा          |
| 2. गढ़वा    | 10. लातेहार        |
| 3. चतरा     | 11. पश्चिम सिंहभूम |
| 4. हजारीबाग | 12. सिमडेगा        |
| 5. गिरिडीह  | 13. खरसांवा        |
| 6. बोकारो   | 14. पूर्वी सिंहभूम |
| 7. गुमला    | 15. खूंटी          |
| 8. लोहरदगा  |                    |

#### झारखण्ड में नक्सलवादी समस्या के उत्तरदायी कारण :-

नक्सलवाद की उत्पत्ति का मूल कारण पिछड़ापन है जिससे अमीर व गरीब के बीच खाई बढ़ रही है तथा भू-स्वामियों व मजदूरों के बीच आर्थिक असंतुलन बढ़ रहा है।

- भूमि सुधार पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया जाना
- जातीय भेदभाव
- राजनीति एवं प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार
- शासन की दुर्बलता (विशेषकर दूरस्थ इलाकों में)
- ग्राउंड जीरो और ग्रास रूट लेवल पर गवर्नमेंस प्रभावी नहीं है, दरअसल जन और प्रतिनिधियों के बीच खाई चौड़ी होती जा रही है। सरकार की योजना जनता तक पहुँच नहीं पाती।
- नक्सलियों को स्थानीय लोगों का समर्थन हासिल है, नक्सलियों का प्रभाव उन्ही इलाकों में बढ़ा है जहाँ प्रशासनिक ढाँचा चरमराया है।
- प्रचलित सामाजिक एवं राजनीतिक व्यवस्था का पतन, आय-विषमता, जातीय तनाव तथा बढ़ती आबादी।
- शोषण की पराकाष्ठाएँ जिसमें विस्थापन व जबरदस्ती बेदखली शामिल है।

- पिछड़े वर्ग व आदिवासियों के विकास पर पर्याप्त ध्यान नहीं दिया गया क्योंकि प्रशासन में व्याप्त भ्रष्टाचार से पिछड़े क्षेत्रों के लिए आने वाली राशि उन तक नहीं पहुँच पाती। योजना आयोग के उपाध्यक्ष मॉंटेक सिंह आहलूवालिया ने स्वीकार किया कि सार्वजनिक वितरण प्रणाली के तहत सरकार जो खर्च करती है, उसमें एक रूपये का केवल 16 पैसा ही गरीब जनता तक पहुँच पाता है।
- बढ़ती बेरोजगारी जिसके कारण निरुद्देश्य युवा नक्सली आन्दोलन से आसानी से जुड़ जाते हैं क्योंकि रोजगार के कोई अन्य साधन न हो पाने के कारण वे इसे आय का जरिया बना लेते हैं।
- मौलिक सुविधाओं सम्बंधी अभाव जैसे सड़क, परिवहन, रेल परिवहन, आवास सम्बंधी समस्याएँ, अस्पताल, बिजली आदि का अभाव है। जिसके कारण स्थानीय नागरिकों में सरकार के प्रति असंतोष उत्पन्न होता है।
- मानवाधिकारों व जनमत के प्रति संवेदनशीलता के कारण सशक्त कार्यवाही संभव न हो पाना।
- नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में अधिकांश जनता अशिक्षित होने के कारण नक्सली उन्हें बहला फुसलाकर अपने में मिला लेते हैं। अतः शिक्षा का ऐसी हो, जो लोगों में देश प्रेम की भावना जागृत करने के साथ-साथ लोगों को स्वरोजगार के लिए भी तैयार करे।
- न्यायिक व प्रशासनिक व्यवस्था सही समय पर न्याय देने में असफल होने के कारण भी नक्सली समस्या बढ़ती जा रही है।
- नक्सलियों के आर्थिक स्रोतों पर प्रतिबंध ना लगना।
- लोकतांत्रिक खुलेपन के कारण धन और हथियारों का आसानी से विदेशों से प्रवेश और मतदान राजनीति की विकृति और स्थानीय शासन संस्थानों का असंतोषजनक ढंग से कामकाज करना। नक्सलवाद के उदय का प्रमुख कारण सामाजिक असमानता, बेरोजगारी, श्रम की महत्ता की कमी, आर्थिक असमानता है। यदि इन कमियों को दूर किया जाये तो बहुत हद तक नक्सलवादी समस्या का समाधान किया जा सकता है और इनको दूर करने के लिए गांधी के ट्रस्टशीप (न्यासिता सिद्धांत) का प्रयोग किया जा सकता है।

गांधी कहते हैं "आर्थिक समानता अहिंसक स्वाधीनता की सर्वकुंजी है। आर्थिक समानता के लिए कार्य करने का मतलब संघर्ष का उन्मूलन। इसका अर्थ है, एक ओर तो उन मुट्ठी भर धनवानों के स्तर को नीचे लाना जिनके हाथ में राष्ट्र की अधिकांश सम्पति केन्द्रित है और दूसरी ओर आधा पेट भोजन पर जीवन निर्वाह करने वाले लाखों करोड़ों लोगों के स्तर को उपर उठाना। जब तक धनवानों और लाखों भूखे लोगों के बीच में अंतर नहीं मिटेगी तब अहिंसक समाज की कल्पना निरर्थक है, इनको सार्थक गाँधी के ट्रस्टशीप सिद्धांत (न्यास) से किया जा सकता है।"

गाँधी के अनुसार जो व्यक्ति अपनी आवश्यकताओं से अधिक सम्पति एकत्रित करता है, उसे केवल अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु संपत्ति उपयोग करने का अधिकार है। शेष-सम्पति का प्रबंध उसे एक ट्रस्टी के हैसियत से देखभाल कर समाज कल्याण पर खर्च करना चाहिए।

इसके साथ गाँधी के सर्वोदय सिद्धांत को भी यदि लागू किया जाय तो नक्सलवाद की समस्या का समाधान किया जा सकता है। “गांधी के अनुसार “जाति का कल्याण समाज कल्याण में निहित है। अतः सहजीवन कोई परमार्थ का सूत्र नहीं बल्कि जीवन का आधार है। लेकिन सहजीवन की साधना साम्ययोग के बिना संभव नहीं है। इसलिए सर्वोदय विचार की यह मान्यता है कि “चाहे वकील का काम हो या नाई का, दोनों का मूल्य बराबर है। सर्वोदय की दृष्टि से मजदूर किसान या कारीगर की जीवन ही सच्चा एवं सर्वोत्कृष्ट है, “पसीना बहाकर रोटी खाना ही यज्ञ है।” गांधी द्वारा प्रतिपादित सर्वोदय विचार में त्याग के द्वारा हृदय परिवर्तन, तर्क एवं अध्ययन द्वारा वैचारिक परिवर्तन, शिक्षा के द्वारा मानवता का परिवर्तन, तथा पुरुशार्थ द्वारा स्तर परिवर्तन पर जोर है। इन विचारों को यदि पूर्ण रूप से आत्मसात् किया जाय तो समाजिक असमानता स्वयं समाप्त हो जायगी। लोगों में असंतुष्टि की भावना उत्पन्न नहीं होगी।’

इसके अलावा गाँधी के अपरिग्रह सिद्धांत नक्सलवाद की समस्या के समाधान का बेहतर विकल्प है। अपरिग्रह अस्तेय के साथ जुड़ा सिद्धांत है। इसकी मान्यता है यदि किसी वस्तु की उपयोगिता वर्तमान में नहीं है और वह मेरे पास है तो मूलतः वह वस्तु चोरी की गई नहीं भी हो तो भी वह चोरी की संपत्ति की श्रेणी में रखी जाएगी। अपरिग्रह का अर्थ है भविष्य में लिए व्यवस्था करना। जो भविष्य के लिए संग्रह करता है उसे ईश्वर पर भरोसा नहीं है।

यदि ईश्वर पर भरोसा है तो वह सभी की दैनिक आवश्यकताओं की पूर्ति अवश्य करेंगे। यदि प्रत्येक व्यक्ति उतनी ही रखे जितना उसे जरूरत है तो कोई भी आभावग्रस्त नहीं होगा। अमीरी – गरीबी का भेदभाव मिट जाएगा जिससे असंतुष्टि की भावना समाप्त होगी। इसी असंतुष्टि का परिणाम नक्सलवाद है। जब सभी संतुष्ट और सामान होंगे तो नक्सल की समस्या स्वतः ही समाप्त हो जाएगी।”

अतः ऐसी समन्वित नीति अपनायी जाये जिससे नक्सली लोगों को समाज की मुख्य धारा में समाहित किया जा सके। नक्सलवाद एक भयंकर राष्ट्रीय सुरक्षा व विकास के समक्ष चुनौती के रूप में सभी के सामने है। इसके फैलाव को रोकने के लिये सरकार ने उचित तैयारी भी की है लेकिन जरूरत है इनको प्रभावी ढंग से लागू करने की तभी नक्सलवाद समाप्त किया जा सकेगा।

## बिहार और झारखंड में मानव संसाधन और सतत

### विकास: संभावनाएँ और सीमाएँ

डॉ. शिलेश मोहन

सहायक प्राध्यापक  
सरिया कॉलेज, सरिया

#### सारांश (Abstract)

बिहार और झारखंड जैसे संसाधन-समृद्ध राज्यों में मानव संसाधन सतत विकास की प्रक्रिया का सबसे महत्वपूर्ण घटक है। यहाँ प्रचुर प्राकृतिक संपदा, कृषि योग्य भूमि और खनिज भंडार उपलब्ध हैं, लेकिन शिक्षा, स्वास्थ्य, तकनीकी दक्षता और रोजगार के अवसरों की कमी मानव संसाधन के समुचित विकास में बड़ी चुनौती बनी हुई है। एक ओर तेजी से बढ़ती जनसंख्या और पलायन से श्रमशक्ति की प्रचुरता देखने को मिलती है, तो दूसरी ओर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और कौशल विकास की कमी के कारण यह श्रमशक्ति विकास की धारा में पूरी तरह योगदान नहीं दे पाती। सतत विकास की दृष्टि से आवश्यक है कि मानव संसाधन को शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल प्रशिक्षण और रोजगारोन्मुखी योजनाओं से सशक्त किया जाए। साथ ही, पंचायती राज, स्वयं सहायता समूह और स्थानीय निकायों को भी इस दिशा में सक्रिय भूमिका निभानी होगी। यदि मानव संसाधन को सही दिशा और अवसर प्रदान किए जाएँ, तो बिहार और झारखंड न केवल अपने क्षेत्रीय विकास में योगदान देंगे बल्कि विकसित भारत 2047 के लक्ष्य को प्राप्त करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकेंगे।

इस शोध का मुख्य उद्देश्य बिहार और झारखंड में मानव संसाधन की वर्तमान स्थिति का आकलन करना तथा सतत विकास के संदर्भ में उसकी संभावनाओं और सीमाओं की पड़ताल करना है। विशेष ध्यान शिक्षा, स्वास्थ्य, कौशल विकास और रोजगार सृजन पर दिया गया है, जो इन राज्यों के मानव संसाधन की गुणवत्ता और उत्पादकता को निर्धारित करते हैं।

#### भूमिका (Introduction):

भारत के विकास में बिहार और झारखंड का योगदान ऐतिहासिक रहा है। ये दोनों राज्य न केवल सांस्कृतिक रूप से समृद्ध हैं, बल्कि प्राकृतिक संसाधनों से भी परिपूर्ण हैं। फिर भी, सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से इनका विकास अपेक्षाकृत धीमा रहा है। मानव संसाधन वह शक्ति है जो किसी राज्य की विकास यात्रा को दिशा देती है। जब यही संसाधन शिक्षित, प्रशिक्षित और स्वस्थ होता है, तो वह सतत विकास का आधार बनता है। अतः बिहार और झारखंड के परिप्रेक्ष्य में मानव संसाधन का विकास और उसका प्रभावी उपयोग अत्यंत आवश्यक है। बिहार ऐतिहासिक रूप से भारत की सांस्कृतिक, शैक्षणिक और राजनीतिक धरोहर का केंद्र रहा है। नालंदा और विक्रमशिला जैसी प्राचीन विश्वविद्यालयों ने इसे विश्व स्तर पर ख्याति दिलाई थी। दूसरी ओर, झारखंड प्राकृतिक और खनिज संपदा से सम्पन्न राज्य है कृ यहाँ कोयला, लोहा, तांबा, यूरेनियम आदि खनिजों का भंडार है जो भारत की औद्योगिक प्रगति में योगदान करते हैं। इन दोनों राज्यों में विकास की संभावनाएँ अत्यधिक हैं, परंतु शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और तकनीकी कौशल के अभाव में यह संभावनाएँ पूरी तरह साकार नहीं हो पा रही हैं।

वर्तमान समय में "सतत विकास" (Sustainable Development) की अवधारणा ने वैश्विक स्तर पर महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया है। इसका तात्पर्य ऐसा विकास है जो वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताओं को पूरा करते हुए आने वाली पीढ़ियों की जरूरतों से समझौता न करे। इसमें आर्थिक विकास, सामाजिक समानता और पर्यावरणीय संरक्षण कृ तीनों के बीच संतुलन आवश्यक है। बिहार और झारखंड जैसे राज्यों में यह संतुलन बनाए रखना एक चुनौती भी है और अवसर भी। मानव संसाधन सतत विकास की रीढ़ है। यदि राज्य अपने मानव संसाधनों को उचित शिक्षा, प्रशिक्षण, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसर प्रदान करे, तो यह न केवल आर्थिक वृद्धि को गति देता है बल्कि सामाजिक स्थिरता और पर्यावरणीय संतुलन को भी बनाए रखता है। अतः बिहार और झारखंड के संदर्भ में यह अध्ययन अत्यंत प्रासंगिक है कि मानव संसाधनों की वर्तमान स्थिति क्या है, इन राज्यों में सतत विकास की संभावनाएँ कितनी हैं और इसके मार्ग में कौन-कौन सी सीमाएँ या बाधाएँ हैं। इस शोध का उद्देश्य इन्हीं पहलुओं का विश्लेषण करते हुए यह

समझना है कि इन दोनों राज्यों में मानव संसाधन को सशक्त बनाकर सतत विकास के लक्ष्यों को किस प्रकार प्राप्त किया जा सकता है।

### अध्ययन का उद्देश्य (Objectives of the Study):

1. बिहार और झारखंड में मानव संसाधन की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करना।
2. दोनों राज्यों में सतत विकास की संभावनाओं को पहचानना।
3. मानव संसाधन विकास में आने वाली प्रमुख चुनौतियों एवं सीमाओं का अध्ययन करना।

### शोध विधि (Research Methodology):

इस अध्ययन में वर्णनात्मक तथा विश्लेषणात्मक दोनों प्रकार की शोध पद्धतियों का उपयोग किया गया है। अध्ययन का उद्देश्य बिहार और झारखंड राज्यों में मानव संसाधन की वर्तमान स्थिति, उसकी विकास संभावनाओं तथा सतत विकास से संबंधित सीमाओं का तुलनात्मक विश्लेषण करना है। यह शोध मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों पर आधारित है। अध्ययन के लिए आवश्यक तथ्य और आँकड़े विभिन्न सरकारी रिपोर्टों, आर्थिक सर्वेक्षणों, जनगणना 2011 के आँकड़ों, राष्ट्रीय नमूना सर्वेक्षण (छैट), नीति आयोग, यूएनडीपी (न्छक्च), यूनेस्को (न्छम्बे) तथा विश्व बैंक द्वारा प्रकाशित सतत विकास सूचकांक रिपोर्टों से एकत्र किए गए हैं। इसके अतिरिक्त, संबंधित विषयों पर प्रकाशित पुस्तकों, शोधपत्रों, जर्नल लेखों और समाचार स्रोतों का भी गहन अध्ययन किया गया है।

अध्ययन का भौगोलिक क्षेत्र बिहार और झारखंड तक सीमित रखा गया है, क्योंकि दोनों राज्यों की सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि लगभग समान है तथा मानव संसाधन विकास के संदर्भ में इनमें कई समान चुनौतियाँ दिखाई देती हैं। एकत्रित आँकड़ों का विश्लेषण गुणात्मक और मात्रात्मक, दोनों पद्धतियों के माध्यम से किया गया है। गुणात्मक रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और पर्यावरणीय स्थितियों का सामाजिक प्रभाव समझने का प्रयास किया गया है, जबकि मात्रात्मक दृष्टि से उपलब्ध आँकड़ों का तुलनात्मक विश्लेषण कर मानव विकास की प्रवृत्तियों को रेखांकित किया गया है।

### अध्ययन क्षेत्र (Area of Study):

इस अध्ययन का क्षेत्र भारत के दो प्रमुख राज्य कृ बिहार और झारखंड कृ को केंद्र में रखता है, जो सामाजिक-सांस्कृतिक, आर्थिक और भौगोलिक रूप से एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं। ऐतिहासिक रूप से दोनों राज्यों की उत्पत्ति एक ही भूभाग से हुई है, क्योंकि झारखंड 15 नवंबर 2000 को बिहार से अलग होकर एक स्वतंत्र राज्य बना। इस कारण से दोनों राज्यों में विकास के कई पहलू आपस में जुड़े हुए हैं। मानव संसाधन विकास और सतत विकास की दिशा में इन दोनों क्षेत्रों की स्थितियों का तुलनात्मक अध्ययन करना इसलिए आवश्यक है ताकि यह समझा जा सके कि समान ऐतिहासिक पृष्ठभूमि के बावजूद विकास की गति और दिशा में अंतर क्यों है।

बिहार भारत के पूर्वी भाग में स्थित एक घनी आबादी वाला राज्य है, जिसकी जनसंख्या 104099452 (2011 के जनगणना के अनुसार) है। राज्य की अर्थव्यवस्था मुख्यतः कृषि पर आधारित है, जहाँ 70: से अधिक आबादी आज भी खेती-किसानी या उससे संबंधित गतिविधियों में संलग्न है। यहाँ की प्रमुख फसलें धान, गेहूँ, मक्का और गन्ना हैं। हाल के वर्षों में शिक्षा, स्वास्थ्य और औद्योगिक विकास के क्षेत्र में सुधार के प्रयास हुए हैं, फिर भी बेरोजगारी, जनसंख्या दबाव और शिक्षा की गुणवत्ता जैसी समस्याएँ राज्य के मानव संसाधन विकास को प्रभावित करती हैं। बिहार के कई जिलों जैसे गया, पटना, भागलपुर, मुजफ्फरपुर और दरभंगा में शिक्षा के अवसर बढ़ रहे हैं, किंतु ग्रामीण क्षेत्रों में संसाधनों की कमी अब भी स्पष्ट है। दूसरी ओर, झारखंड भारत का एक खनिज-संपन्न राज्य है, जहाँ कोयला, लौह अयस्क, यूरेनियम, बॉक्साइट और तांबे जैसी प्राकृतिक संपदाएँ प्रचुर मात्रा में पाई जाती हैं। यहाँ की अर्थव्यवस्था में खनन, उद्योग और वन उत्पादों की प्रमुख भूमिका है। फिर भी झारखंड के आदिवासी इलाकों में गरीबी, अशिक्षा, पलायन और स्वास्थ्य सुविधाओं की कमी प्रमुख बाधाएँ बनी हुई हैं। राज्य की कुल आबादी का लगभग 26: भाग अनुसूचित जनजातियों से संबंधित है, जो परंपरागत जीवनशैली और आजीविका पर निर्भर हैं। इस कारण झारखंड में मानव संसाधन विकास का स्वरूप विशेष रूप से सामाजिक और सांस्कृतिक विविधता से प्रभावित होता है। भौगोलिक दृष्टि से देखा जाए तो बिहार की भूमि मुख्यतः गंगा नदी

और उसकी सहायक नदियों द्वारा निर्मित उपजाऊ मैदानों से घिरी हुई है, जबकि झारखंड का भूभाग पठारी एवं वनों से आच्छादित है। इन दोनों राज्यों की भौगोलिक विषमता ही उनके विकास पथ को अलग-अलग दिशा में प्रभावित करती है। उदाहरण के लिए, बिहार में जल-जमाव और बाढ़ की समस्या मानव जीवन और कृषि को बाधित करती है, जबकि झारखंड में भूमि कटाव और जल-स्रोतों की कमी जैसी पर्यावरणीय चुनौतियाँ हैं।

### मानव संसाधन की वर्तमान स्थिति और सतत विकास की अवधारणा

मानव संसाधन किसी भी राज्य या देश की सबसे महत्वपूर्ण पूंजी होती है। यह केवल जनसंख्या नहीं, बल्कि उस जनसंख्या की ज्ञान, कौशल, स्वास्थ्य और उत्पादक क्षमता का प्रतिनिधित्व करती है। बिहार और झारखंड जैसे राज्य, जहाँ विशाल जनसंख्या और प्राकृतिक संसाधन दोनों मौजूद हैं, वहाँ मानव संसाधन का विकास सतत विकास की दिशा में निर्णायक भूमिका निभा सकता है। परंतु इन दोनों राज्यों की वर्तमान स्थिति यह दर्शाती है कि अभी भी अनेक संरचनात्मक, सामाजिक और आर्थिक अवरोध मानव संसाधन की पूर्ण क्षमता को सीमित कर रहे हैं।

बिहार में मानव संसाधन की स्थिति मिश्रित स्वरूप लिए हुए है। राज्य में प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा का प्रसार तेजी से हुआ है, विशेषकर "सर्व शिक्षा अभियान" और "मिड-डे मील योजना" के कारण विद्यालयों में नामांकन बढ़ा है। परंतु शिक्षा की गुणवत्ता, शिक्षकों की कमी, आधारभूत ढाँचे की कमजोरियाँ और उच्च शिक्षा में रोजगारोन्मुखी कोर्स की कमी आज भी बड़ी चुनौती बनी हुई है। स्वास्थ्य के क्षेत्र में भी सुधार के बावजूद राज्य के ग्रामीण इलाकों में चिकित्सकीय सेवाएँ, मातृ एवं शिशु मृत्यु दर, और पोषण की स्थिति चिंता का विषय हैं। रोजगार के अवसर सीमित होने के कारण युवाओं का बड़े पैमाने पर पलायन अन्य राज्यों की ओर जारी है। इसका परिणाम यह हुआ है कि बिहार का मानव संसाधन अन्य राज्यों के आर्थिक विकास में तो योगदान देता है, पर स्वयं बिहार का सामाजिक-आर्थिक विकास अपेक्षित गति से नहीं हो पा रहा है।

झारखंड की स्थिति इससे भिन्न किंतु समान रूप से जटिल है। यहाँ खनिज और औद्योगिक विकास की अपार संभावनाएँ हैं, फिर भी स्थानीय समुदाय, विशेषकर आदिवासी समूह, इन संसाधनों के प्रत्यक्ष लाभ से वंचित रह जाते हैं। शिक्षा का प्रसार अपेक्षाकृत धीमा है, और अनेक जनजातीय क्षेत्रों में साक्षरता दर राष्ट्रीय औसत से नीचे है। स्वास्थ्य सेवाओं की कमी, कुपोषण, और रोजगार की असमानता यहाँ मानव विकास सूचकांक को प्रभावित करते हैं। ग्रामीण इलाकों में कृषि आधारित रोजगार पर्याप्त नहीं है, जबकि औद्योगिक क्षेत्र सीमित रोजगार पैदा करता है। महिलाओं की श्रम भागीदारी भी अपेक्षाकृत कम है, जिससे लैंगिक असमानता का स्वरूप और गहराता है। अब यदि सतत विकास (Sustainable Development) की अवधारणा पर दृष्टि डालें, तो यह केवल आर्थिक वृद्धि का लक्ष्य नहीं रखती, बल्कि इसका उद्देश्य पर्यावरणीय संरक्षण, सामाजिक न्याय और आर्थिक स्थिरता के बीच संतुलन स्थापित करना है। संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम (सूचक) के अनुसार, सतत विकास वह प्रक्रिया है जिसमें वर्तमान पीढ़ी की आवश्यकताएँ पूरी की जाती हैं, बिना भविष्य की पीढ़ियों की आवश्यकताओं से समझौता किए। इस परिप्रेक्ष्य में मानव संसाधन विकास को सतत विकास का प्रमुख स्तंभ माना जाता है, क्योंकि यदि मनुष्य शिक्षित, स्वस्थ और कौशलयुक्त नहीं होगा, तो कोई भी विकास दीर्घकालिक नहीं हो सकता।

बिहार और झारखंड दोनों राज्यों में सतत विकास के संदर्भ में शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, पर्यावरण और सामाजिक समानता जैसे तत्वों पर विशेष ध्यान देना आवश्यक है। यहाँ शिक्षा का स्तर और रोजगार के अवसर बढ़ाकर मानव पूंजी का निर्माण किया जा सकता है, जिससे गरीबी और असमानता में कमी लाई जा सके। साथ ही पर्यावरणीय दृष्टि से झारखंड के खनन क्षेत्रों में वनों की कटाई और प्रदूषण को नियंत्रित करना, तथा बिहार में बाढ़ और जल-जमाव जैसी समस्याओं के समाधान हेतु दीर्घकालिक नीतियाँ बनाना आवश्यक है। मानव संसाधन की गुणवत्ता जितनी अधिक होगी, सतत विकास की दिशा में राज्य की प्रगति उतनी ही सुदृढ़ होगी। इसीलिए दोनों राज्यों में ऐसी नीतियों की आवश्यकता है जो शिक्षा, स्वास्थ्य और कौशल विकास को समान रूप से प्राथमिकता दें, ताकि जनसंख्या बोज़ नहीं, बल्कि एक उत्पादक शक्ति बन सके।

## LITTLE LIVES

Miss Alka Rani Jojo

Department of Zoology  
Sariya College, Suriya

*In forests deep and oceans wide,  
So many creatures live and hide.  
Some crawl slowly, some run fast,  
Some are small, some built to last.*

*Birds in sky and fish in stream,  
All are part of nature's dream.  
Each has a role, big or small,  
Life connects them, one and all.*

*I may not know each name they bear,  
But still, I see their world is fair.  
In every wing and fur and scale,  
There lies a quiet, living tale.*

## WHY TO CHOOSE AND LEARN BOTANY SUBJECT

*Miss Chayra Nisha Aind*

**Department of Botany  
Sariya College, Suriya**

Learning botany provide essential insights into how plants sustain life on earth, from providing oxygen and food security while regulating the climate changes. It supports agriculture, environmental health,, Personal skill of Ayurvedic medicine, gardening knowledge of ancient ways of remaining healthy from plants extracts. Also it gives people practical knowledge for addressing environmental challenges and improving the daily living.

### VARIOUS DIFFERENT BENEFITS OF LEARNING BOTANY :

Studying botany is important because almost all life on earth depends directly or indirectly on plants for food, oxygen ,climate regulation and medicine. It also helps us to solve major global problems such as hunger, biodiversity loss, pollution and climate changes.

- **Basic life support:** Plants produces oxygen through photosynthesis and forms the base of food chain which help to absorb carbon dioxide from environment and help us to understand how ecosystem works And human survival linked to plant health. This knowledge is essential for maintaining breathable air clean water and stable climates.
- **Environmental benefits:** Plants Studied through botany, purify air and water while reducing pollution in urban areas. botanist help conserve biodiversity by tracking endangered species and restoring ecosystem like Forests and greenery. Understanding plant's role in energy cycle support renewable sources such as biofuels and solar inspired technologies.
- **Agricultural advantages:** Botany drives sustainable farming by improving crop yields, Best resistance and drought tolerant Varieties like rice and wheat. It enables home gardening ,terrace gardening for fresh, seasonal food even in small area. Also cutting reliance on global supply chain. Farmers use botanical knowledge for better soil nutrition and productivity.
- **Health and economic value:** Many medicines are extracted from plants with botany revealing new treatment and natural remedies from plant products. it increases economic sectors like agriculture, forestry biofuels, also important for human civilization. learning botany increases the plant identification, improves personal connection to nature, and practical skills of cultivation. Also provide indigenous method of medicine and remain healthy by eating healthy vegetables fruits and different plant parts.
- **Every day practicality:** Botany teaches energy saving uses such as shade trees for cooling and efficient building material like straw bales. It enhances appreciation of plant beauty, adaptation and foundational role in food webs. It provides overall air food and water which all are dependent on plants.

- **Career opportunities:** Botany opens different career opportunities for role in sustainable farming, biofuel development, plant conservation field, where experts improve crop yields using plant genetics for pest resistant crops or new medicines. They can become botanist, Plant scientist, horticulturist, environmental consultant, agricultural inspector, mycologist, farm manager, plant pathologist, plant breeder, nursery manager, agronomist, forest warden, forest officer, lab assistant, biological technician, Ethnobotanist, Field trials officer, pharmaceutical scientist, science writer, botanical illustrator-Employers on agricultural companies, governmental research institutes, environmental NGOs and consultancies, National Park and botanical gardens ETC.
- Also after learning botany from biology ,can enroll as teachers, professors in different school and college/ University etc. .

### **PROPER EDUCATIONAL ROAD MAP OF BECOMING BOTANIST**

We follow a structural academic and practical path in plant science to increase the self obsession and passion for plants as a botanist.

1. **Step1-Develop a passion for botany (plant science):**
  - Start exploring the world of plant during high school by taking biology classes and participating in gardening or ecology clubs.
  - Watch documentaries read book on botany visit botanical gardens or natural reserves to cultivate a deeper interest.
2. **Step2-Educational pathway:**
  - The school level preparation(class10-12): Choose the science stream with biology as a core subject because most botany undergraduate programs require this. Start reading simple botany books or plant-related materials like leaf types photosynthesis basic ecology to build interest and familiarity toward plants.
  - Bachelor's degree in botany after class 12 (graduation): enroll in any college/University for 3-4 years Bachelor's degree as B.Sc. Botany/ B.Sc. Plant biology/ B.Sc. Plant science/ B.Sc. Biology/ Environmental science/Forestry with a strong plant focus. (Under this studying the core subjects like plant anatomy, morphology and taxonomy, plant Physiology and biochemistry, Ecology, genetics and plant pathology microbiology related to plants.
3. **Step3- Masters degree in botany or specialization( Post graduation):** For better job opportunities and research role, pursue an MSC in botany, it takes 2 year which often included a research project or thesis which help you decide if you want to work in industry, government or academic.
4. **Step 4- Doctoral studies for research and teaching (Ph.D.):**
  - If you want to become a university professor PhD in botany or plant science is essential. Which leads independent research in plant genetics, ecology or conservation.
  - which takes three to six years after a masters.
  - Volunteer for environmental projects that involve hand on work with plants and the ecosystem during this Ph.D.

**5.Step 5-Build practical experiences (Internship, field work):**

- Take internship or field-based projects with botanical gardens, forest department ,Wildlife Conservation NGOs, agricultural and plant research institutes.
- Learn skills like plant identification and herbarium, work field survey, data collection and basic lab techniques (Microscopy, DNA/ soil test)

**6.Step 6- Build analytical and field skills:**

- Gain proficiency in plant identification and ecological surveying. Spend time in the field conducting observation and collecting samples.
- Learn to operate laboratory equipment, analyze data and conduct experiments related to plant research.

**7.Step 7-Network in the field:**

- Join professional organizations like botanical society in America or local conservation groups to expand your network.
- Attend seminars ,workshop or conferences to study updated on the latest trends in botany.

**8.Step 8-Apply for jobs or academic positions:**

- With a resume highlighting your educational internships and skill start applying to role in your areas of interest according to the career opportunities from all the research institutes to governmental agencies or the private industries even in the schools and colleges.

**9.Step 9- Finally task performed by the botanist:**

Task performed by the botanist is conducting, identifying, studying, analyzing ,surveying ,collaborating, researching and teaching about plant and plant related aspects with ecosystem.

**Conclusion:** Learning botany subject can give the best knowledge of plant and nature to connect yourself with your environment for better growth and best livelihood with good health , wealth and ecosystem.

## भारत में उच्च शिक्षा के विकास पर एक अध्ययन:

सन् 1857 से सन् 1947

*Bajinath Mistry*

Sariya College, Suriya

### परिचय

1947 में भारतीय स्वतंत्रता ने योजनाकारों, शिक्षाविदों और जनता की ओर से भारत की विकास प्रक्रिया में उच्च शिक्षा की महत्वपूर्ण भूमिका की बढ़ती जागरूकता और बढ़ती मान्यता को जगाया। स्वतंत्रता के बाद के युग के दौरान उच्च शिक्षा में निवेश काफी बढ़ गया है (पहली योजना में 140 मिलियन रुपये से चौथी योजना में अनुमानित 1,835 मिलियन रुपये)।

इस अवधि के दौरान भारतीय उच्च शिक्षा की जांच और रिपोर्ट देने के लिए कई उच्च स्तरीय समितियां और आयोग स्थापित किए गए हैं। भारतीय समाचार पत्रों में संपादकीय और रेडियो पर टिप्पणियां राष्ट्रीय जीवन के इस पहलू के बारे में जनता की चिंता के उत्कृष्ट संकेतक हैं। और, इन सभी के सामूहिक प्रभाव ने भारत की विशाल और विविध उच्च शिक्षा प्रणाली में मात्रात्मक, गुणात्मक और संरचनात्मक परिवर्तनों की अधिकता पैदा की है। इन परिवर्तनों के बावजूद, तर्कसंगत और ठोस मानदंडों के संदर्भ में इन परिवर्तनों के दायरे और दिशा और उनकी प्रभावशीलता को निर्धारित करने के लिए कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया है। यह शोध प्रबंध इस दिशा में पहला प्रयास है।

### 1. भारत में उच्च शिक्षा

भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली चीन और संयुक्त राज्य अमेरिका के बाद छात्रों के मामले में दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी शिक्षा प्रणाली है। भविष्य में, भारत सबसे बड़े शिक्षा केंद्रों में से एक होगा। भारत के उच्च शिक्षा क्षेत्र में स्वतंत्रता के बाद से विश्वविद्यालयों/विश्वविद्यालय स्तर के संस्थानों और कॉलेजों की संख्या में जबरदस्त वृद्धि हुई है। 'शिक्षा का अधिकार अधिनियम', जो 6-14 वर्ष के आयु वर्ग के सभी बच्चों को अनिवार्य और मुफ्त शिक्षा प्रदान करता है, ने देश की शिक्षा प्रणाली में एक क्रांति ला दी है, जिसमें आंकड़े पिछले चार वर्षों में स्कूलों में आश्चर्यजनक नामांकन का खुलासा करते हैं। वर्षों। उच्च शिक्षा में निजी क्षेत्र की भागीदारी ने इस क्षेत्र में भारी बदलाव देखा है। आज भारत में 60: से अधिक उच्च शिक्षा संस्थानों को निजी क्षेत्र द्वारा बढ़ावा दिया जाता है। इसने उन संस्थानों की स्थापना में तेजी लाई है जो पिछले एक दशक में उत्पन्न हुए हैं और भारत को दुनिया में उच्च शिक्षा संस्थानों की सबसे बड़ी संख्या का घर बना दिया है, जिसमें छात्रों का नामांकन दूसरे स्थान पर है। विश्वविद्यालयों की संख्या १९५० में २० से ३४ गुना बढ़कर २०१४ में ६७७ हो गई है। इन संख्याओं के बावजूद, अंतर्राष्ट्रीय शिक्षा रेटिंग एजेंसियों ने इनमें से कई संस्थानों को विश्व रैंकिंग के सर्वश्रेष्ठ में नहीं रखा है। साथ ही, भारत विश्व स्तरीय विश्वविद्यालयों का निर्माण करने में विफल रहा है।

आज ज्ञान ही शक्ति है। जिसके पास जितना अधिक ज्ञान होता है, वह उतना ही अधिक शक्तिशाली होता है। हालांकि, भारत को कड़ी चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है। शिक्षा में बढ़ते

निवेश के बावजूद, इसकी 25 प्रतिशत आबादी अभी भी निरक्षर हैय केवल 9५ प्रतिशत भारतीय छात्र हाई स्कूल तक पहुँचते हैं, और केवल ७ प्रतिशत स्नातक। दुनिया के प्रमुख विकासशील देशों की तुलना में भारत में शिक्षा की गुणवत्ता प्राथमिक या उच्च शिक्षा में काफी खराब है। २००८ तक, भारत के उत्तर-माध्यमिक संस्थान भारत की कॉलेज-आयु की आबादी के ७ प्रतिशत के लिए केवल पर्याप्त सीटों की पेशकश करते हैं, देश भर में २५ प्रतिशत शिक्षण पद खाली हैं, और ५७ प्रतिशत कॉलेज के प्रोफेसरों के पास या तो मास्टर या पीएच.डी की कमी है। २०११ तक, भारत में १५२२ डिग्री देने वाले इंजीनियरिंग कॉलेज हैं, जिनमें ५८२,००० (विज्ञान और प्रौद्योगिकी शिक्षा, २००६) के वार्षिक छात्र प्रवेश के साथ २६५,००० के वार्षिक सेवन के साथ १,२४४ पॉलिटेक्निक हैं। हालांकि, इन संस्थानों में फैंकल्टी की कमी है और शिक्षा की गुणवत्ता पर चिंता जताई गई है।

इन चुनौतियों के बावजूद भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली के पास इन चुनौतियों से पार पाने के लिए समान रूप से बहुत सारे अवसर हैं और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाने की क्षमता है। हालाँकि, इसमें अधिक पारदर्शिता और जवाबदेही की आवश्यकता है, नई सहस्राब्दी में विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की भूमिका, और लोगों के सीखने के तरीके पर उभरते वैज्ञानिक अनुसंधान का अत्यधिक महत्व है। भारत अन्य देशों को अत्यधिक कुशल लोगों को प्रदान करता है, इसलिए भारत के लिए अपने देश को विकासशील राष्ट्र से विकसित राष्ट्र में स्थानांतरित करना बहुत आसान है।

## 2. स्वतंत्रता पूर्व युग

भारतीय विश्वविद्यालय, जैसा कि आज भी मौजूद है, अनिवार्य रूप से ब्रिटिश शासन की विरासत है और उन्नीसवीं शताब्दी की है। १८०० के दशक की शुरुआत में, भारत में कई समूह उच्च शिक्षा के विस्तार के लिए उत्सुक थे। इनमें ईसाई मिशन थेय राजा राम मोहन राय जैसे समाज सुधारकय और जो लोग ब्रिटिश ईस्ट इंडिया कंपनी की सेवा में प्रवेश करने के लिए अंग्रेजी सीखना चाहते थे। एक प्रतिद्वंद्वी समूह जिसे कहा जाता है प्राच्यवादियों ने उच्च शिक्षा संस्थानों में शिक्षा की भाषा के रूप में फारसी, अरबी या संस्कृत के उपयोग का समर्थन किया।

प्राच्यवादियों और आंग्लवादियों के बीच विवाद दो मुद्दों पर केंद्रित था: (1) कॉलेजों में शिक्षा की भाषाय और (2) सरकारी धन का उपयोग। 1834 में, थॉमस बबिंगटन मैकाले को सार्वजनिक शिक्षा की सामान्य समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया गया था। उन्हें शिक्षा के माध्यम के संबंध में प्राच्यविद्-आंग्लवादी विवाद का त्वरित समाधान खोजने के लिए कहा गया था। मैकाले ने इस समस्या को सामान्य कठोरता के साथ संभाला जो भारत में ब्रिटिश शासन की विशेषता थी। वह संस्कृत और अरबी दोनों शिक्षाओं से पूरी तरह अनभिज्ञ था। शिक्षा पर अपने प्रसिद्ध मिनट (1835) में, उन्होंने प्राच्यवादियों के दावों को खारिज कर दिया और इसके बजाय पश्चिमी शिक्षा के लिए तर्क दिया, जिसे अंग्रेजी के माध्यम से पढ़ाया जाएगा। इस प्रकार, प्रश्न का निर्णय अंग्रेजी के पक्ष में किया गया। गवर्नर-जनरल लॉर्ड विलियम बेंटिक ने मैकाले के कार्यवृत्त को मंजूरी दी और 7 मार्च, 1835 को एक प्रस्ताव पारित किया कि विज्ञान सहित उच्च शिक्षा की सामग्री पश्चिमी शिक्षा होनी चाहिए और शिक्षा की भाषा अंग्रेजी होनी चाहिए। उन्होंने यह भी निर्धारित किया कि शिक्षा के लिए विनियोजित सभी धनराशि अकेले अंग्रेजी शिक्षा

पर खर्च की जानी चाहिए। इसलिए, मिनट भारत में उच्च शिक्षा के विकास में एक प्रमुख स्थान रखता है।

भारत में उच्च शिक्षा के इतिहास में अगला महत्वपूर्ण मील का पत्थर वुड्स डिस्पैच था। इसके परिणामस्वरूप कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास के तीन प्रेसीडेंसी टाउन में विश्वविद्यालयों का निर्माण हुआ। लंदन विश्वविद्यालय को एक उपयुक्त प्रोटो टाइप माना जाता था। इसलिए, पहले भारतीय विश्वविद्यालयों को लंदन विश्वविद्यालय पर बारीकी से तैयार किया गया था, जो उस समय एक संबद्ध विश्वविद्यालय था।

आज तक, "संबद्ध विश्वविद्यालय की अवधारणा भारत की उच्च शिक्षा में प्रमुख संगठनात्मक पैटर्न बनी हुई है। इस प्रकार, भारतीय धर्म और संस्कृति की जानबूझकर अवहेलना में, एक अवैयक्तिक जांच मशीन के रूप में इसका चरित्र राज्य पर निर्भर है, यह है ब्रिटिश प्रशासन के केंद्रों में महानगरीय सेटिंग, इसने सबसे पोषित भारतीय परंपराओं का उल्लंघन किया।"

शोधकर्ता आगे कहते हैं कि "जैसा कि वुड ने इसकी कल्पना की थी, भारतीय विश्वविद्यालय के दो मुख्य कार्य थे: सरकारी रोजगार के लिए पात्रता की परीक्षा प्रदान करता है, और एक विदेशी संस्कृति को प्रसारित करता है। ये किसी विश्वविद्यालय के वास्तविक कार्य नहीं थे और अनिवार्य रूप से उन्होंने विश्वविद्यालय छात्रवृत्ति के उचित उद्देश्यों को अस्पष्ट कर दिया।

पूरे देश से भारतीय विश्वविद्यालयों में आए और जल्द ही अन्य विश्वविद्यालय मुख्य रूप से महानगरीय क्षेत्रों में शुरू किए गए। अधिकांश छात्र अमीर उच्च वर्गों और जातियों से आए थे। ब्रिटिश सरकार ने सार्वभौमिक शिक्षा की व्यवस्था की परिकल्पना नहीं की थी। यह संभ्रांतवादी प्रकृति स्वतंत्र भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा के लिए विशिष्ट थी। जल्द ही, अंग्रेजी भारतीय बुद्धिजीवियों की भाषा बन गई। 1947 में जब तक भारत को स्वतंत्रता नहीं मिली, तब तक विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा की भाषा के रूप में अंग्रेजी को चुनौती नहीं मिली।

उन्नीसवीं सदी के अंतिम दशक के दौरान पूरे भारत में बढ़ते नामांकन और कॉलेजों का तेजी से बढ़ना शैक्षिक परिदृश्य की विशेषता है। सदी के अंत में, शिक्षण के मानकों और गुणवत्ता में भारी गिरावट पर व्यापक चिंता थी।

अच्छी ब्रिटिश परंपरा में, उच्च शिक्षा की इस प्रणाली की समय-समय पर आयोगों, समितियों और विशेष सलाहकारों द्वारा समीक्षा की जाती थी। इनमें 1910 में सर हरकोर्ट बटलर और 1919 में कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग शामिल थे। चिंता के प्रमुख क्षेत्र शिक्षा की गुणवत्ता और मानकों का रखरखाव थे। कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग ने निम्नलिखित क्षेत्रों में आमूल-चूल सुधारों का सुझाव दिया: (1) संबद्धता का अभ्यास, (2) शिक्षण में सुधार, (3) विश्वविद्यालय प्रशासन का पैटर्न, और (4) पाठ्यक्रम संशोधन। शोधकर्ताने निष्कर्ष निकाला है कि इन सिफारिशों के बावजूद, "ब्रिटिश शासन की शेष पीढ़ी के दौरान साहसिक और उदार योजना अमल में नहीं आई नई तरह की शिक्षा तैयार नहीं की गई थीय स्वतंत्रता के समय, विश्वविद्यालय ने खुद को पूरी तरह से भारतीय परिवेश के अनुकूल नहीं बनाया था।

### 3. भारत में विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग 1948-49

भारत सरकार ने 1948 में डॉ. राधाकृष्णन की अध्यक्षता में एक विश्वविद्यालय शिक्षा आयोग की नियुक्ति की। आयोग ने उच्च शिक्षा के विभिन्न पहलुओं पर कई महत्वपूर्ण सिफारिशें कीं और अगस्त 1949 में

अपनी रिपोर्ट प्रस्तुत की। तेजी से बदलती समकालीन दुनिया में, विश्वविद्यालय चल रहे हैं। उनके कार्यक्षेत्र, कार्य और संगठन में गहरा बदलाव आया है और वे तेजी से विकास की प्रक्रिया में हैं। उनके कार्यों को अब शिक्षण और ज्ञान की उन्नति के दो पारंपरिक कार्यों की पुष्टि नहीं हुई है। १५ अगस्त १९४७ को भारतीय नियंत्रण में सत्ता के हस्तांतरण के बाद, भारतीय समाज की राजनीतिक और आर्थिक स्थितियों में बड़े बदलाव हुए थे। शैक्षिक समस्या ने भी नया रूप धारण कर लिया है। इसी तरह, विश्वविद्यालयों के कर्तव्यों और जिम्मेदारियों की अवधारणा व्यापक हो गई है और उन्हें राजनीति, प्रशासन, पेशे, उद्योग और वाणिज्य में नेतृत्व प्रदान करना है। उन्हें हर प्रकार की उच्च शिक्षा, साहित्यिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और पेशेवर की बढ़ती मांग को पूरा करना होगा। तकनीकी और वैज्ञानिक ज्ञान के उपयोग और विकास से देश अभाव, बीमारी और अज्ञानता से मुक्ति पाने में सक्षम होगा। भारत प्राकृतिक संसाधनों में समृद्ध है और इसके लोगों के पास बुद्धि और ऊर्जा है और यह विश्वविद्यालयों के लिए है कि वे ज्ञान का निर्माण करें और दिमाग को प्रशिक्षित करें जो दो प्राकृतिक संसाधनों और मानव ऊर्जा को एक साथ लाएंगे। इन बातों को ध्यान में रखते हुए आयोग ने विश्वविद्यालय शिक्षा के कुछ उद्देश्यों का सुझाव दिया।

#### 4. बुद्धि और ज्ञान

हमारे प्राचीन शिक्षकों ने विषयों को पढ़ाने और ज्ञान प्रदान करने का प्रयास किया। उनका आदर्श ज्ञान के साथ-साथ ज्ञान भी था। ज्ञान के किसी आधार के बिना हम बुद्धिमान नहीं हो सकते। कोई भी तथ्यात्मक जानकारी आम आदमी को शिक्षित आदमी में तब तक नहीं ले जाएगी जब तक उनमें कुछ जागृत न हो। चूंकि शिक्षा मन का प्रशिक्षण और आत्माओं का प्रशिक्षण दोनों है, इसलिए इसे ज्ञान और ज्ञान दोनों देना चाहिए। एस. सी. शर्मा (2020) भारत में गुणवत्ता और जीविका की चुनौतियों के साथ-साथ उच्च शिक्षा की मांग तेजी से बढ़ रही है। लंबे समय से भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली का ध्यान उच्च शिक्षा संस्थानों (एचईआई) की स्थापना पर था ताकि छात्रों को खुद को स्नातक करने और नौकरी की तलाश करने की अनुमति मिल सके। इससे संस्थानों की संख्या और उच्च शिक्षा के लिए जाने वाले छात्रों की संख्या में भारी वृद्धि हुई है। लेकिन प्रणाली को उद्देश्य की गुणवत्ता और उपयुक्तता की ओर अपेक्षित ध्यान नहीं दिया गया। नतीजतन, प्रणाली कई अंतरालों जैसे कौशल अंतराल, अनुसंधान अंतराल, प्रासंगिकता अंतराल आदि के साथ बड़ी, जो पहुंच, इक्विटी, गुणवत्ता और रोजगार जैसे मुद्दों में परिवर्तित हो गई। प्रणाली में कई सुधार हुए और इन मुद्दों को हल करने के लिए परिवर्तन के कई चरणों से गुजरे, लेकिन फिर भी, वे काफी हद तक अनसुलझे हैं। यह उचित समय है कि भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली प्रणाली को सही रास्ते पर लाने के लिए उचित उपायों के साथ तैयार हो। समय-समय पर गठित शिक्षा आयोगों और समितियों द्वारा दी गई बहुमूल्य सिफारिशों को सही अर्थों में लागू करने से इस प्रक्रिया में काफी मदद मिलेगी। एचईआई को नई शिक्षा नीति की शुरुआत होते ही उसे लागू करने के लिए सकारात्मक मानसिकता के साथ-साथ तत्परता के साथ तैयार रहना चाहिए। राष्ट्रीय मूल्यांकन और प्रत्यायन परिषद, राष्ट्रीय प्रत्यायन बोर्ड जैसे संस्थान जो गुणवत्ता आश्वासन के लिए जिम्मेदार हैं और संस्थानों के लिए प्रेरक के रूप में कार्य करते हैं, उन्हें मजबूत करने की आवश्यकता है।

देवेश निगम, एम.पी. गणेश, सुवाशिसा राणा (2020) भारतीय शिक्षा क्षेत्र की उत्पत्ति, विकास और विकास अभूतपूर्व रहा है। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली वर्तमान में देश की मांगों को पूरा करने की दिशा में अपने

विकास और विस्तार के लिए कई चुनौतियों का सामना कर रही है। समानता, पहुंच, गुणवत्ता, प्रासंगिकता, वैश्वीकरण और निजीकरण के मामले में उच्च शिक्षा संस्थानों के बीच प्रतिस्पर्धा एक वैश्विक चुनौती रही है। इस समीक्षा पत्र का उद्देश्य भारत में उच्च शिक्षा के विस्तार की क्षमता और दुनिया भर के विद्वानों के लिए अपनी उच्च शिक्षा को आगे बढ़ाने और भारत में अनुसंधान में एक मजबूत करियर बनाने के लिए सबसे अच्छी जगह के रूप में उभरने की क्षमता की समीक्षा करना है।

डॉ.ए.आर.सरवनकुमार, डॉ.के.आर.पद्मिनी देवी (2019)स्वतंत्रता के बाद की सफलता की कहानी गुणवत्ता के सवाल पर धूमिल हो जाती है। उच्च शिक्षा के लिए अनियोजित विस्तार, शिक्षित बेरोजगारी, असमान विकास, शिक्षा का व्यावसायीकरण, वित्तीय संकट, शिक्षक का बर्नआउट और मात्रा बनाम गुणवत्ता, इक्विटी बनाम उत्कृष्टता, रचनात्मकता बनाम अनुरूपता के डिजिटल विभाजन के मुद्दों को पूरा करना मुश्किल हो रहा है। उच्च शिक्षा के लिए खतरा। इस मोड़ पर, नई शिक्षा प्रत्येक व्यक्ति को सिखाई जानी चाहिए कि कैसे सूचनाओं को वर्गीकृत और पुनर्वर्गीकृत किया जाए, समस्याओं को एक नई दिशा से कैसे देखा जाए, और अंत में खुद को कैसे पढ़ाया जाए। शिक्षक एक राष्ट्र के लिए सबसे अच्छी तरह से प्रशिक्षित जनशक्ति हैं। क्योंकि, वे प्रौद्योगिकीविद, वैज्ञानिक, डॉक्टर, इंजीनियर, नीति निर्माता, व्यवसायी और शिक्षक पैदा करते हैं। इसलिए गुणवत्ता सुनिश्चित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से उदारीकरण और वैश्वीकरण की लगातार बढ़ती मांगों को पूरा करने के लिए सक्षम, पेशेवरों का उत्पादन करना आवश्यक हो गया है। इसलिए, उभरते हुए भारतीय समाज को आधुनिक भारतीय समाज की बदलती मांगों के लिए शिक्षा प्रणाली को नवीन और भविष्यवादी बनाने की आवश्यकता है। वर्तमान शिक्षा में समय की आवश्यकता के अनुसार सुधार किया जाना चाहिए। इसे अपने देश और दुनिया के बदलते परिदृश्य की मांगों को पूरा करना है। यह प्रतिस्पर्धी और सहकारी होना चाहिए। इन कारकों को ध्यान में रखते हुए प्राथमिक से उच्च शिक्षा और यहां तक कि तकनीकी शिक्षा में समय-समय पर सुधार करने की आवश्यकता है, ताकि समाज के लिए लोगों की दृष्टि की क्षमता को बदला जा सके। शिक्षा की प्रत्येक प्रणाली का उद्देश्य व्यक्तियों को समाज में अपनी भूमिका सबसे प्रभावी ढंग से निभाने के लिए ढालना है। अमीर हुसैन (2019)उच्च शिक्षा प्रणाली देश के समग्र विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है, जिसमें औद्योगिक, सामाजिक, आर्थिक आदि शामिल हैं। भारतीय उच्च शिक्षा प्रणाली दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी है।

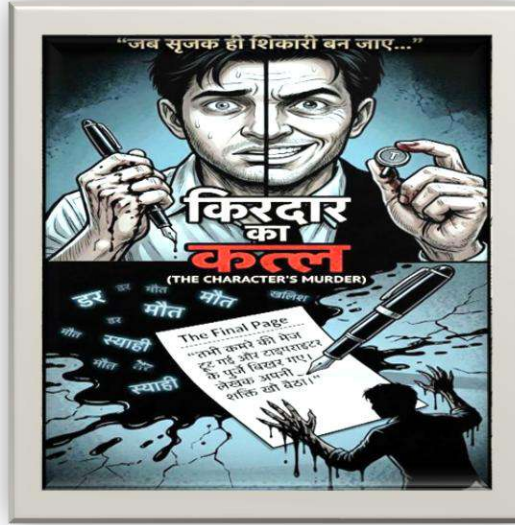
वर्तमान समय में कॉलेजों और विश्वविद्यालयों जैसे भारतीय उच्च शिक्षण संस्थानों की भूमिका युवाओं को आत्मनिर्भरता के लिए सशक्त बनाने के लिए शिक्षा, अनुसंधान आदि के क्षेत्र में गुणवत्ता आधारित शिक्षा प्रदान करना है। इस पेपर में इतिहास, विकास और चुनौतियां शामिल हैं जिनका भारत वर्तमान में उच्च शिक्षा में सामना कर रहा है और उन चुनौतियों का सामना करने के लिए सरकार द्वारा की गई कुछ पहल भी शामिल है।

अपर्णा बसु (2015) उन्नीसवीं शताब्दी में विकसित हुई भारतीय उच्च शिक्षा आश्चर्यजनक रूप से ब्रिटिश मॉडलों से प्रभावित नहीं थी। भारत न केवल ब्रिटिश शासन के अधीन था बल्कि 1835 के बाद से, सरकार की नीति अंग्रेजी भाषा के माध्यम से पश्चिमी कला और विज्ञान के ज्ञान के प्रसार का समर्थन करने की थी। कहा जा सकता है कि, भारत में अंग्रेजी उच्च शिक्षा की शुरुआत 1817 में कलकत्ता में हिंदू कॉलेज की स्थापना के साथ हुई थी, जो एशिया में उच्च शिक्षा का पहला 'यूरोपीयकृत' संस्थान था। 1857 में

स्थापित कलकत्ता, बॉम्बे और मद्रास के पहले तीन विश्वविद्यालय लंदन पर आधारित थे। इसके बाद भी, जब विश्वविद्यालय में सुधार किए गए, तो जिन मॉडलों का अनुकरण करने की मांग की गई, वे हमेशा ब्रिटिश थे। हालांकि, दिल्ली, कलकत्ता या लंदन के अधिकारियों ने जो तैयार किया, उसे हमेशा लागू नहीं किया जा सका और ब्रिटिश मॉडल को दोहराया नहीं जा सका क्योंकि भारत में स्थितियां बहुत अलग थीं। परिणामस्वरूप, भारतीय उच्च शिक्षा ने अपनी कुछ विशिष्ट विशेषताएं विकसित कीं। आजादी के बाद भी, औपनिवेशिक शिक्षा की कई विशेषताएं और मॉडल के लिए पश्चिम की ओर देखने की प्रवृत्ति बनी हुई है, हालांकि अब ब्रिटेन की तुलना में संयुक्त राज्य अमेरिका की ओर अधिक है। वैज्ञानिक और तकनीकी संस्थान जो स्थापित किए गए हैं या नए शोध कार्यक्रम शुरू किए गए हैं, वे पश्चिमी मॉडलों से प्रेरित हैं। जबकि पश्चिम की तकनीकी और आर्थिक श्रेष्ठता को देखते हुए ऐसी निर्भरता शायद अपरिहार्य है, यह भारतीय शिक्षाविदों को अनुकरणीय बनाता है और मौलिकता को कम करता है।

पवन अग्रवाल (2006) भारत में उच्च शिक्षा कई प्रणालीगत कमियों से ग्रस्त है। नतीजतन, यह ऐसे स्नातकों को प्रदान करना जारी रखता है जो क्षेत्रों की बढ़ती संख्या में कुशल जनशक्ति की उभरती कमी के बावजूद बेरोजगार हैं। अकादमिक अनुसंधान के मानक निम्न और घटते जा रहे हैं। भारतीय उच्च शिक्षा की कुछ समस्याएं, जैसे – बोझिल संबद्धता प्रणाली, अनम्य शैक्षणिक संरचना, विभिन्न विषयों में असमान क्षमता, शैक्षणिक संस्थानों की स्वायत्तता का क्षरण, और सार्वजनिक वित्त पोषण का निम्न स्तर सर्वविदित है। निष्क्रिय नियामक वातावरण से संबंधित कई अन्य चिंताएं, कम कवरेज वाली मान्यता प्रणाली और कोई परिणाम नहीं, अच्छा प्रदर्शन करने के लिए प्रोत्साहन की अनुपस्थिति, और अन्यायपूर्ण सार्वजनिक वित्त पोषण नीतियों को अच्छी तरह से मान्यता प्राप्त नहीं है। लोकलुभावनवाद से प्रेरित और अच्छे आंकड़ों के अभाव में, भारत में उच्च शिक्षा पर सार्वजनिक बहस बहुत कम होती है।

## किरदार का कत्ल



### अध्याय 1:- स्याही में छिपा साया

रात के तीन बज रहे थे। आर्यन के कमरे में केवल उसके लैपटॉप की स्क्रीन की नीली रोशनी थी। बाहर बारिश हो रही थी, जिसकी आवाज़ आर्यन को सुकून देने के बजाय चिड़चिड़ा कर रही थी। वह पिछले तीन घंटों से एक ही पैराग्राफ पर अटका था।

उसने टाइप किया: “खलिश अंधेरे में खड़ा था। उसका चेहरा नहीं था, बस खाल की एक ढीली परत थी जो उसकी हड्डियों से लटक रही थी।”

अचानक, आर्यन को लगा कि उसके पीछे रखे बुकशेल्फ से कोई किताब गिरी है।

'धप्प!'

उसने मुड़कर देखा। फर्श पर उसकी ही पिछली बेस्ट-सेलर किताब 'अधूरा गुनाह' गिरी हुई थी। अजीब बात यह थी कि वह किताब बिल्कुल उसी पन्ने पर खुली थी जहाँ मुख्य पात्र की मौत होती है।

"हवा होगी," आर्यन ने खुद को तसल्ली दी, हालांकि खिड़कियाँ बंद थीं।

उसने वापस लिखना शुरू किया। “खलिश ने अपनी लंबी उंगलियाँ दरवाजे की कुंडी पर रखीं। आर्यन को उसके सांस लेने की आवाज़ सुनाई दे रही थी—एक भारी, घिसटती हुई आवाज़।” तभी, आर्यन के कमरे के असली दरवाजे की कुंडी धीरे से घूमी।

'चूँ...'

आर्यन के हाथ कीबोर्ड पर जम गए। उसका दिल तेजी से धड़कने लगा। उसने दरवाजे की ओर देखा, लेकिन वहाँ कोई नहीं था। दरवाजा बस थोड़ा सा खुला रह गया था, जिससे बाहर के गलियारे का अंधेरा अंदर झांक रहा था। आर्यन की आवाज़ कांपी।

"कौन हैं.....?"

पर कोई जवाब नहीं मिला। उसने गुस्से में लैपटॉप बंद किया। "ज्यादा काम करने की वजह से मुझे मतिभ्रम हो रहा है," वह बुदबुदाया। वह उठकर दरवाजा बंद करने गया, लेकिन जैसे ही उसने हैंडल पकड़ा, उसे महसूस हुआ कि हैंडल 'गीला' है। उसने टॉर्च जलाई। हैंडल पर किसी तरल पदार्थ की परत चढ़ी थी। उसने उसे सूँघा। वह स्याही थीं। काली, गाढ़ी और ठंडी स्याही।.... आर्यन के पीछे से एक आवाज आई। यह आवाज लैपटॉप से नहीं, बल्कि उसके कान के पास से आई थी। एक भारी, घिसटती हुई सांस लेने की आवाज। उसने झटके से पीछे मुड़कर देखा। कमरे में कोई नहीं था, लेकिन उसके लैपटॉप की स्क्रीन अपने आप चालू हो गई थी। लैपटॉप के अंदर से टाइपिंग की आवाज़ आ रही थी—

खट-खट-!....खट-खट-खट!....खट-खट-!

आर्यन दौड़कर लैपटॉप के पास गया। लेकिन स्क्रीन पर वह नहीं लिखा था, जो उसने कुछ देर पहले लिखकर छोड़ा था। वहाँ अब नए शब्द उभर रहे थे, जैसे कोई अदृश्य हाथ उन्हें टाइप कर रही हो। आर्यन को ऐसा महसूस हुआ जैसे कोई उसे देख रहा हो। "आर्यन ने पीछे मुड़कर देखा, लेकिन उसे वहाँ कोई नहीं दिखा जो उसे देख रहा हों। उसने कहा कि वह एक लेखक हैं, पर वह भूल गया कि हर लेखक का भी एक अंत होता है।" आर्यन की चीख निकल गई जब उसने वापस मुड़कर देखा कि स्क्रीन के नीचे से काली स्याही खून की तरह बहकर उसकी मेज पर फैलने लगी है। धीरे-धीरे स्याही फर्श पर फैलकर एक साये आकार लेने लगी—एक लंबा, बिना चेहरे वाला साया।

"तुम... तुम क्या हो?" आर्यन चिल्लाया।

साये के अंदर से एक आवाज गूँजी, जो आर्यन की अपनी आवाज जैसी ही थी, लेकिन उसमें हजारों सालों की नफरत भरी हुई थी:

"मैं.... मैं वह हूँ जिसे तुमने जन्म दिया, आर्यन! और अब मैं अपनी कहानी खुद लिखूँगा।"

"क्या आर्यन को पता चलेगा कि उसकी लिखी हुई हर डरावनी मौत अब हकीकत में उसके आसपास के लोगों के साथ हो रही हैं।"

## अध्याय 2:- पटकथा की कड़ियाँ

आर्यन डर कर अपनी मेज से पीछे हट गया। उसका दिल इतनी जोर से धड़क रहा था, जैसे वह अभी पसलियां तोड़कर बाहर निकल आएगा। फर्श पर फैली वह काली स्याही अब स्थिर थीं, लेकिन कमरे की हवा में सड़ते हुए कागज और पुरानी स्याही की गंध भर गई थीं।

उसने अपने कांपते हाथों से अपना फोन उठाया और अपने एडिटर, समीर को फोन लगाया।

"हेलो... हेलो समीर? भाई, फोन उठो!"

समीर के फोन उठते ही आर्यन लगभग चिल्लाता हुआ उससे कहता है। "कुछ बहुत अजीब हो रहा है।" फोन के दूसरे छोर से समीर की नींद से भरी आवाज आई, "आर्यन? भाई, सुबह के चार बज रहे हैं। क्या फिर से कोई 'राइटर ब्लॉक' हो गया है? अगर हैं, तो फिर सो जाओ, सुबह १० बजे बात करेंगे।"

"नहीं समीर, सुनो! मेरी कहानी... वो खुद लिखी जा रही है। लैपटॉप की बंटने अपने-आप दब रही है, और वो खलनायक 'खलिश'... वह अभी यहाँ मेरे कमरे में था!" यह सुनकर थोड़ी देर के लिए फोन के दूसरे छोर पर शून्य सा सन्नाटा छा गया। फिर समीर की हँसने की आवाज़ आई।

"हा..हा..हा.."

"आर्यन, तुम अपनी ही कहानियों में इतना डूब जाते हो कि हकीकत भूल जाते हो। सुनो, तुमने कल जो 'चैप्टर 3' मेल किया था, वह लाजवाब है। खासकर वह हिस्सा जहाँ 'खलिश' उस पड़ोसी का गला काट देता है। मेरे रोंगटे खड़े हो गए यह पढ़कर!" यह सुनकर आर्यन के पैर जम गए। उसने हकलाते हुए समीर से कहा "चैप्टर 3.... समीर... मैंने चैप्टर 3 अभी तक लिखा ही नहीं है। मैं तो चैप्टर 2 के आखिरी पैराग्राफ पर अटका हूँ।" अब सन्नाटा समीर की तरफ छा गया था। वह हँसने की कोशिश करते हुए कहता है। "क्या मजाक कर रहे हों? मेरे पास रात 2:15 पर मेल आया था। मैं तुम्हें अभी उसका स्क्रीनशॉट भेजता हूँ।" फोन कट गया और एक मिनट बाद आर्यन के व्हाट्सएप पर एक तस्वीर आई जिसे देखकर आर्यन की रूह काँप गई। वह मेल उसी की आईडी से भेजा गया था। उसमें लिखा था। "खलिश को भूख लगी थी। उसने बगल वाले घर की खिड़की से झाँका, 'मिस्टर खन्ना' अपनी दवा ले रहे थे। खलिश ने उनके पीछे खड़े होकर अपनी स्याही जैसी उंगलियाँ उनके गले पर रखीं..." आर्यन का फोन हाथ से छूटकर फर्श पर गिर गया। मिस्टर खन्ना उसके पड़ोसी थे। वह पागलों की तरह अपनी बालकनी की ओर भागा। पड़ोस वाले फ्लैट की लाइट जल रही थी। आर्यन ने देखा कि मिस्टर खन्ना की परछाई दीवार पर दिख रही थी, लेकिन उनके पीछे एक और परछाई थी—बहुत लंबी, पतली और बिना सिर वाली।

"मिस्टर खन्ना! हटिए वहाँ से!" आर्यन जोर से चिल्लाया।

लेकिन उसकी आवाज़ उन तक नहीं पहुँची। अचानक, दीवार पर बनी मिस्टर खन्ना की परछाई का सिर धड़ से अलग हो गया। मिस्टर खन्ना बिना कोई आवाज़ किए फर्श पर गिर पड़े। और वह दूसरी परछाई... वह धीरे से मुड़ी और उसने बालकनी में खड़े आर्यन की ओर देखा। उसकी कोई आँखें नहीं थीं, फिर भी आर्यन को महसूस हुआ कि उसे घूरा जा रहा है।

आर्यन पीछे हटा और जल्दी से कमरे के अंदर जाकर दरवाजा बंद कर लिया। उसने अपने लैपटॉप को उठाकर पटकना चाहा, लेकिन स्क्रीन पर फिर से शब्द उभरने लगे थे, इस बार वे लाल रंग के थे।

"कहानी का नायक भागने की कोशिश करता है, लेकिन वह नहीं जानता कि वह जिस कमरे में छिपा है, वह उसकी कब्र है। आर्यन अब अपनी कलम उठाएगा और अगला पन्ना लिखेगा..." यह पढ़कर आर्यन बुदबुदाया "मैं लिखूँगा?"

आर्यन ने मेज पर रखी अपनी फाउंटैन पेन देखी। उसमें से स्याही रिस रही थी, जैसे वह रो रही हों। अचानक उसका हाथ अपने-आप पेन की तरफ बढ़ा। वह रोकना चाहता था, लेकिन उसका शरीर उसके वश में नहीं था।

उसका हाथ कागज पर चला और न चाहकर भी उसने लिखना शुरू किया।

"आर्यन को अहसास हुआ कि खलिश कोई बाहरी शैतान नहीं है। वह आर्यन की दबी हुई नफरत और अकेलेपन का हिस्सा है। अब आर्यन को अपनी कलाई काटनी होगी ताकि खलिश को और स्याही मिल सके।"

"नहीं.....! मैं यह नहीं करूँगा!" यह कहकर आर्यन अपनी दूसरी हथेली से उस हाथ को रोकने की कोशिश करने लगा। लेकिन पेन की नोक उसकी कलाई की नसों के ठीक ऊपर पहुँच चुकी थी।

तभी कमरे की बत्ती गुल हो गई। अंधेरे में उसे एक ठंडी, चिपचिपी छुअन महसूस हुई।

एक आवाज़ आई। "लिखो, आर्यन... लिखो लेखक अपनी कहानी अधूरी नहीं छोड़ता।"

"अध्याय 3 में आर्यन को उस घर का एक डरावना सच पता चलता है।"

### अध्याय 3:- स्याही का इतिहास

आर्यन ने अपनी कलाई को पूरी ताकत से पीछे खींचा। लेकिन पेन की नोक से उसकी त्वचा पर एक हल्की खरोंच लग गई, जिससे वहाँ खून की एक बूँद उभरी। लेकिन वह खून लाल नहीं था—वह गहरे काले रंग का था, बिल्कुल उसी पुरानी स्याही की तरह। "नहीं... यह मुमकिन नहीं है," यह कहकर आर्यन हड़बड़ाकर कमरे की अलमारी की ओर भागा। उसे अपनी दवाइयाँ ढूँढनी थीं, उसे लगा शायद वह पागल हो रहा है।

चीजों को इधर-उधर फेंकते समय, अलमारी के सबसे पीछे के हिस्से में उसका हाथ एक सख्त चीज़ से टकराया। उसने उसे बाहर खींचा—वह एक पुरानी, धूल से सनी लकड़ी की संदूकची थीं। उस पर कोई ताला नहीं था। जैसे ही उसने उसे खोला, उसे अंदर एक चमड़े की जिल्द वाली डायरी मिली।

आर्य ने डायरी खोलकर पढ़ना शुरू किया, डायरी के पहले पन्ने पर लिखा था: "संपत्ति: भास्कर रॉय – 1984 भास्कर रॉय! आर्यन का गला सूख गया। भास्कर रॉय अस्सी के दशक के सबसे बड़े हॉरर कहानियों के लेखक थे, जो रातों-रात गायब हो गए थे। पुलिस को उनके घर में सिर्फ खून के धब्बे और खाली टाइपराइटर मिला था। आर्यन ने अपने कांपते हाथों से पन्ने पलटे। वह बुदबुदाया भास्कर की लिखावट पहले तो बहुत साफ थी, लेकिन बाद में वह किसी पागल के डूडल्स जैसी हो गई। आर्यन पन्ने को पढ़ाने लगा "तारीख: 14 मार्च— वह फिर आया। 'खलिश' केवल एक नाम नहीं है। वह एक विचार है। जितना ज्यादा मैं उसके बारे में लिखता हूँ, वह उतना ही ठोस होता जाता है। वह मुझसे मेरी यादें मांग रहा है। वह कहता है कि पन्ने भरने के लिए खून की नहीं, बल्कि 'अस्तित्व' की स्याही चाहिए।"

अगला पन्ना और भी डरावना था:

"मैंने अपनी पत्नी को कहानी का पात्र बना दिया। मैंने लिखा कि वह सीढ़ियों से गिर गई। अगले ही पल, वह गिर गई। मैंने जो लिखा, वह सच हो गया। मैं अब भगवान हूँ... या शायद एक गुलाम। 'खलिश' मुझे लिखने पर मजबूर कर रहा है। वह चाहता है कि मैं उसे इस दुनिया का दरवाजा दे दूँ।"

अंतिम पन्ने पर बस एक ही वाक्य लिखा था, जो बार-बार दोहराया गया था: "वह लेखक को खा जाता है ताकि वह खुद कहानी बन सके।"

अचानक, आर्यन को अपने पैरों के पास कुछ ठंडा तरल महसूस हुआ। उसने नीचे देखा। फर्श पर पड़ी स्याही अब उसके जूतों को जकड़ रही थी। डायरी उसके हाथ से छूट गई।

तभी खिड़की के शीशे पर कुछ उभरने लगा। बाहर से कोई लिख नहीं रहा था, बल्कि शीशे के अंदर से दरारें पड़कर अक्षर बना रही थीं:

"भास्कर ने कोशिश की थी। तुमने भी की। लेकिन देखो, तुम कितने सुंदर पात्र हो, आर्यन।"

यह पढ़कर आर्यन ने चिल्लाते हुए शीशा तोड़ दिया, जिस कारण उसके हाथ पर शीशे के टुकड़े से चोट लग गई। लेकिन उस चोट से खून बहने के बजाय काली स्याही रिसने लगी। उसे अब दर्द भी महसूस नहीं हो रहा था। उसे महसूस हो रहा था कि उसकी हड्डियाँ धीरे-धीरे कागज़ की तरह पतली हो रही हैं और उसका मांस स्याही की खुशबू दे रहा है।

"मैं इंसान हूँ! मैं कोई किरदार नहीं हूँ!" वह चीखा।

तभी कमरे के कोने से एक धुंधला साया निकल कर आर्यन के सामने आया, वह धीरे-धीरे साफ होने लगा। उसका चेहरा अब आर्यन जैसा ही था, लेकिन उसके होंठ सिले हुए थे। उस साये के हाथ में एक विशाल कलम थी।

उसने हवा में कलम चलाई और आर्यन के सीने पर एक शब्द लिखा— "अध्याय 4: अंत की शुरुआत"

आर्यन को लगा जैसे उसका शरीर हवा में उठ रहा है। उसका घर, उसकी दीवारें, सब कुछ अब धुंधला होने लगा और उसे एहसास हुआ कि उसका पूरा कमरा दरअसल एक विशाल सफ़ेद पन्ने में बदल रहा है।

वह बुदबुदाया "समीर! बचाओ मुझे!" उसने आखिरी बार फोन लगाने की कोशिश की, लेकिन फोन की स्क्रीन पर अब कोई नेटवर्क नहीं था, बस एक वाक्य लिखा था: "पात्र की पुकार लेखक तक नहीं पहुँचती।"

"अध्याय 4 में आर्यन को अपने जीवन का कोन सा सच पता चलेगा?"

#### अध्याय 4:- सृजक का सामना

आर्यन को लगा जैसे वह किसी गहरे कुएं में गिर रहा है, लेकिन वह कुआं पानी का नहीं, बल्कि शब्दों का था। उसके चारों ओर हवा में हजारों शब्द तैर रहे थे—'डर', 'मौत', 'स्याही', 'चीख'। उसे अपना शरीर भारी महसूस हुआ और जब उसने अपनी आँखें खोलीं, तो वह अपने कमरे की जगह एक विशाल, अनंत सफ़ेद कमरे में था।

वहाँ न कोई खिड़की थी, न दरवाजा। बस बीच में एक बहुत बड़ी मेज रखी थी, जिस पर एक पुराना टाइपराइटर भी था। मेज के सामने की कुर्सी पर एक आदमी बैठा था, जिसकी पीठ आर्यन की तरफ थी। उस आदमी के हाथ टाइपराइटर के बटनों पर तेजी से चल रहे थे।

खट-खट-खट! खट-खट! खट-खट-खट-!

"तुम... तुम कौन हो?" आर्यन ने लड़खड़ाते हुए उससे पूछा। "मैं यहाँ कैसे आया?"

वह आदमी रुका। उसने धीरे से अपनी कुर्सी घुमाई। उस आदमी को देखकर आर्यन के पैरों तले जमीन खिसक गई। वह आदमी कोई और नहीं, बल्कि आर्यन खुद था। लेकिन वह थोड़ा बूढ़ा था, उसकी आँखें अंदर धँसी हुई थीं और उसकी उंगलियाँ स्याही से पूरी तरह काली पड़ चुकी थीं।

उस आदमी ने अपनी शांत आवाज में कहा। "बैठो, आर्यन, या मैं तुम्हें 'पात्र संख्या 402' कहूँ?"

"तुम... तुम मेरा चेहरा लेकर यहाँ क्या कर रहे हो?" आर्यन चिल्लाया। "क्या मिस्टर खन्ना को तुमने मारा? 'खलिश' क्या है?"

बूढ़ा आर्यन हंसा, एक खोखली और ठंडी हंसी।

"ह...ह...ह..."

"खलिश कुछ नहीं है, बस एक जरिया है। मैंने तुम्हें बनाया है, आर्यन! तुम्हारी पसंद, तुम्हारी यादें, तुम्हारा लेखक बनने का सपना—सब मैंने ही लिखा है। यहाँ तक कि तुम्हारा यह डर भी, अभी इस वक्त मैं टाइप कर रहा हूँ।"

यह बोलकर उसने टाइपराइटर पर एक बटन दबाया। अचानक, आर्यन को अपने सीने में एक भयानक दर्द महसूस हुआ। जिस कारण वह फर्श पर गिर पड़ा और तड़पने लगा।

"देखो," बूढ़े लेखक ने कहा। "मैंने अभी लिखा कि 'आर्यन दर्द से फर्श पर गिर गया'। और तुम गिर गए। तुम सिर्फ स्याही और कल्पना के मेल हो। मिस्टर खन्ना? वे भी एक किरदार थे। भास्कर राय? वह तुमसे पहले वाला लेखक था, जिसे मैंने अपनी पिछली किताब में मार दिया था।"

आर्यन ने दर्द के बावजूद अपना सिर उठाया और उस बूढ़े आर्यन से पूछा। "अगर तुम लेखक हो... तो तुम मुझे क्यों मारना चाहते हो? मैं तो तुम्हारी सबसे अच्छी रचना हूँ!"

बूढ़े आर्यन की आँखों में आँसू आ गए। वह अपने आँसू को पोंछ कर कहता है। "क्योंकि एक लेखक को अमर होने के लिए अपनी सबसे प्यारी रचना की बलि देनी पड़ती है। जब तुम इस कहानी के अंत में मरोगे, तब 'खलिश' (जो कि मेरा असली रूप है) इस पत्रे से बाहर निकलकर असली दुनिया में कदम रखेगा। मैं इस कागज़ के जेल में थक गया हूँ, आर्यन! मुझे तुम्हारी खाल चाहिए, तुम्हारा जीवन चाहिए।" यह कहकर उसने फिर से टाइप करना शुरू किया। आर्यन का हाथ अपने आप फर्श पर गिरे एक नुकीले काँच की ओर बढ़ा। "आर्यन ने वह काँच का टुकड़ा उठाया। वह जानता था कि यही उसका अंत है। उसका हाथ काँप रहा था, लेकिन वह मजबूर था।"

"नहीं! रोको इसे!" आर्यन चिल्लाया, लेकिन उसकी उंगलियों ने काँच को कसकर पकड़ लिया।

"कहानी अपने अंत की ओर बढ़ रही है, मेरे दोस्त!" बूढ़े आर्यन ने कहा। "बस एक आखिरी पैराग्राफ... और मैं आज़ाद, और तुम इतिहास।" आर्यन को समझ आया कि अगर वह इस लेखक का 'पात्र' है, तो वह केवल वही कर सकता है जो लिखा जा रहा है। लेकिन तभी उसे एक ख्याल आया। अगर वह एक किरदार है, तो उसके अंदर भी तो एक लेखक छिपा है।

उसने काँच के टुकड़े को अपनी कलाई पर चलाने के बजाय, अपनी हथेली पर जोर से चुभाया। खून (काली स्याही) निकलने लगी। उसने उस स्याही से फर्श पर बड़े-बड़े अक्षरों में लिखना शुरू किया।

बूढ़ा आर्यन चौंक गया, वह चिल्ला कर बोला। "यह क्या कर रहे हो? मैंने यह नहीं लिखा!"

"तुमने मुझे 'लेखक' बनाया था ना?" आर्यन ने चीखते हुए कहा। "तो एक लेखक अपनी कहानी खुद बदल सकता है!"

आर्यन ने फर्श पर लिखा: "तभी कमरे की मेज टूट गई और टाइपराइटर के पुर्जे बिखर गए। लेखक अपनी शक्ति खो बैठा।"

अचानक, उस सफ़ेद कमरे में एक धमाका हुआ। टाइपराइटर के बटन गोलियों की तरह हवा में उड़ने लगे। बूढ़ा लेखक कुर्सी से गिर पड़ा। उसका चेहरा फटने लगा, जैसे वह कागज़ का बना हो।

"तुम... तुम ऐसा नहीं कर सकते!" वह बूढ़ा चिल्लाया। "मैं तुम्हारा खुदा हूँ!"

"तुम सिर्फ एक 'ड्राफ्ट' हो," आर्यन ने खड़े होते हुए कहा। उसने भागकर टाइपराइटर का एक भारी हिस्सा उठाया और कहा। "अब मैं तुम्हें 'डिलीट' कर रहा हूँ।"

"अंतिम अध्याय में क्या आर्यन अपने सृजक को मारकर असली दुनिया में वापस लौट पाएगा? या फिर इस लड़ाई का नतीजा कुछ ऐसा होगा जिसकी कल्पना किसी ने भी नहीं की थी? क्या 'खलिश' का असली रूप अब सामने आएगा?"

### **अध्याय 5:- आखिरी पत्रा**

सफ़ेद कमरा अब काँप रहा था। दीवारों पर दरारें पड़ने लगी थीं, और उन दरारों से खून नहीं, बल्कि शब्दों की नदियाँ बहने लगी। बूढ़ा लेखक, जो अब आधा कागज़ और आधा इंसान लग रहा था, वह फर्श पर रेंग रहा था। उसका चेहरा स्याही के धब्बों की तरह मिट रहा था।

"तुम... तुम पागल हो गए हो!" वह बूढ़ा चीखा। "अगर तुमने मुझे खत्म किया, तो तुम भी मिट जाओगे। मैं तुम्हारी नींव हूँ! अगर लेखक मरता है, तो कहानी का पात्र भी कभी जीवित नहीं रह सकता!"

आर्यन ने टाइपराइटर का भारी लोहे का चक्का अपने हाथ में कस कर पकड़ा। उसकी आँखों में अब डर नहीं, बल्कि एक अजीब सी शांति थी। "एक पात्र के रूप में मरना उस गुलामी से बेहतर है जहाँ मेरी हर

साँस किसी और की उंगलियों के इशारे पर चले।" उसने पूरी ताकत से वह लोहे का हिस्सा बूढ़े लेखक के सिर पर दे मारा।

'तड़ाक!' वह आवाज़ वैसी नहीं थीं जैसे किसी हड्डी के टूटने की होती हैं। वह आवाज़ ऐसी थीं जैसे हज़ारों सूखे पत्रे एक साथ फटे हों। बूढ़ा आर्यन चीखा और उसका शरीर अनगिनत काले अक्षरों में बिखर गया। वे अक्षर हवा में उड़ने लगे, जैसे काली तितलियाँ हों। अचानक, वह सफ़ेद रोशनी धुंधली होने लगी। आर्यन को लगा कि उसका अपना शरीर भी गायब हो रहा है। उसके हाथ, उसके पैर, उसकी यादें—सब कुछ धुँएँ में बदल रहा था।

असली दुनिया: सुबह के 6 बजे आर्यन के कमरे का दरवाजा पुलिस ने तोड़ दिया। अंदर समीर और दो पुलिस अधिकारी खड़े थे। कमरे का मंजर देख कर सबकी रूह कांप गई।

पूरा कमरा (दीवारें, छत, फर्श) काली स्याही से पुते हुए थे। बीच में आर्यन का लैपटॉप पड़ा था, जो पूरी तरह जल चुका था। लेकिन सबसे अजीब बात 'आर्यन' की थी।

आर्यन अपनी कुर्सी पर बैठा था। उसका शरीर स्थिर था। जब समीर ने उसे छुआ, तो वह चीख पड़ा। आर्यन का शरीर मांस और हड्डी का नहीं बचा था। वह पूरी तरह से सफ़ेद कागज़ में बदल चुका था। उसका चेहरा वैसा ही था, लेकिन वह एक सजीव मूर्ति की तरह जड़ हो गया था।

"यह... यह क्या है?" समीर ने कांपते हुए पूछा। तभी पुलिस वाले की नज़र मेज पर पड़ी। वहाँ एक ताज़ा पन्ना रखा था, जिस पर स्याही अभी भी गीली थी। उस पर लिखा था। "कहानी अब पूरी हुई। लेखक मर चुका है, पात्र आज़ाद हैं। लेकिन आज़ादी की कीमत हमेशा मौन होती है।"

समीर ने वह पन्ना उठाया, और जैसे ही उसने उसे पढ़ा, कमरे की खिड़की अपने आप खुल गई। एक ठंडी हवा का झोंका अंदर आया और वह पन्ना समीर के हाथ से उड़कर बाहर निकल गया।

शहर की सड़कों पर वह पन्ना उड़ता रहा, जब तक कि वह एक राह चलते व्यक्ति के पैरों के पास गिर गया। उस व्यक्ति ने पन्ना उठाया, उसे पढ़ा और उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक आ गई। उसने अपनी जेब से एक पेन निकाला और उस पत्रे के पीछे कुछ लिखना शुरू किया।

वह व्यक्ति कोई और नहीं, बल्कि 'खलिश' था, जिसने अब एक नया चेहरा धारण कर लिया था।

आर्यन की कहानी तो 'खत्म' हो गई, लेकिन 'खलिश' की नई कहानी बस अभी 'शुरू' हुई है। एक आखरी 'प्रश्न' आगे क्या होगा?

कहानी समाप्त।

यह थी मेरी लिखी एक कहानी "किरदार का कत्ल"। एक ऐसी डरावनी सच्चाई जहाँ लेखक खुद अपनी ही कल्पना का शिकार बन गया।

*Shrikant Kumar*

*Semester: - I*

*Hons: - English*

## मंजिल

रुकना नहीं, झुकना नहीं,  
चाहे राहें कैसी भी हों।  
चलना ही जीवन का अर्थ है,  
मंजिल तो मिल ही जाएगी।  
हार को जीत में बदलना है,  
आँसुओं को मुस्कान में।  
परिणाम की चिंता छोड़,  
कर्म कर तू हर हाल में।  
टूटे सफ़ीने से भी पार जाना है,  
तूफ़ानों की धार को चीरना है।  
वक्त जो आँखें दिखाए तो,  
तू हौसलों की उड़ान भरना।  
डर को अपने वश में कर,  
तू खुद की राहें चुन,  
सफलता की चाह लेकर,  
तू स्वयं का भाग्य बना।  
सफलता वही है जो चलते रहे,  
मुश्किलों से लड़ते रहे।  
जो गिरकर फिर संभल गए,  
वही जीवन में सफल हुए।

*Rupsikha Kumari*  
Semester-VII  
Hons-Economics

## कमी ही ताकत

एक किसान रोज सुबह डंडे पर दो घड़े लटकाकर तालाब से पानी भरकर अपनी झोपड़ी तक लाता था। उन दो घड़ों में से एक घड़ा पुराना और फूटा हुआ था, जिससे पानी रिसता रहता था।

इस कारण, किसान जब घर पहुँचता था, तो सही घड़े में पूरा पानी होता था, लेकिन फूटा घड़ा आधा खाली हो जाता था। सही घड़े को इस बात का घमंड था कि वह अपना काम पूरी तरह करता है और वह फूटे घड़े को उसकी कमी के लिए चिढ़ाता था। फूटा घड़ा इस बात से उदास रहता था कि वह किसान की मेहनत को पूरी तरह से सफल नहीं कर पाता।

एक दिन फूटे घड़े ने किसान से अपनी कमी के बारे में बात की और कहा, मुझे हटाकर नया घड़ा ले आना चाहिए, क्योंकि मैं आपकी मेहनत को बेकार कर रहा हूँ। किसान ने उसे उदास न होने के लिए कहा और अगली सुबह वापसी में रास्ते में सुंदर फूल देखने की बात कही।

अगली सुबह जब वे लौट रहे थे, तो फूटे घड़े ने रास्ते में बहुत सुंदर फूल देखे और उसका मन प्रसन्न हुआ। लेकिन फिर भी वह उदास था क्योंकि वह पूरा पानी नहीं ला पाया था।

तब किसान ने मुस्कुराते हुए कहा, क्या तुमने ध्यान नहीं दिया रास्ते में जो सुंदर फूल खिले थे, वे सिर्फ तुम्हारी वजह से, तब फूटे घड़े ने कहा कैसे? किसान ने कहा की मुझे तुम्हारे फूटने की बात पहले से पता थी। इसलिए, मैंने रास्ते के किनारे बीज डाल दिए थे और तुम्हारे रिसते पानी से उन बीजों को सींचने में मदद मिली। इस तरह, तुम्हारी कमी ने ही इस रास्ते को फूलों से सजा दिया।

*Monika Kumari*

*Semester-III*

*Hons:- Political Science*

## **SUCCESS**

*Life is tough for everyone; for some, it's even tougher.  
However rough you think it is, don't think it can't get rougher  
But take a tip from one who knows, your life you can enhance  
But you'll get no guarantee from me, should you leave it all to chance  
If a better life is what you seek, you have to make it happen.  
Decide on what you really want and pursue success with passion  
A positive mind is where you start, belief in your potential  
A will to do whatever it takes. That too is quite essential  
It doesn't matter where you are, because you're not a tree  
With hard work and persistence  
Go where you want to be  
You have the power to change your life  
Success you can pursue  
With grit and determination  
And the talent Nature gave you*

*Sangeeta Kumari*

*Semester-VII*

*Hons:-English*

## माता पिता

हर सुबह उठो तो सबसे पहले,  
मां-बाप के पैर को छुआ करो।  
जिस मां-बाप ने तुझको जन्म दिया,  
उनके लिए हर सुबह दुआ करो।  
जब मां-बाप आशीर्वाद दे देते हैं,  
बच्चों का जन्म संवरता हैं।  
मां-बाप की सेवा करने से,  
हम सब का कर्म निखरता हैं।  
मां-बाप की दृष्टि है जो कि,  
हम सब इस सृष्टि में जीवित है।  
वरना हम सब इस पृथ्वी पर,  
छड़ मात्र के लिए ही निहित हैं।  
मां-बाप को कमजोर मत समझो,  
वो हम सब के लिए रक्षक है।  
हम सब को दुख हो जाता है,  
वो उस दुख के भी नष्टक है।

*Sachin Kumar*

*Semester-I  
Economics*

## सफलता

यह कहानी एक छोटे से गाँव में रहने वाले रमेश की है। रमेश एक साधारण किसान परिवार से था, जहाँ दिनभर खेतों में काम करना और परिवार का पेट भरने के लिए संघर्ष करना जीवन का हिस्सा था। लेकिन रमेश के सपने बड़े थे। वह शिक्षा के महत्व को समझता था और खुद को और अपने परिवार को इस कठिन जीवन से बाहर निकालना चाहता था।

रमेश के गाँव में एक सरकारी स्कूल था, जहाँ वह पढ़ाई करता था। स्कूल जाने के बाद वह खेतों में अपने पिता की मदद करता, लेकिन उसकी नजर हमेशा अपनी किताबों पर रहती थी। सीमित साधनों और कठिन परिस्थितियों के बावजूद, रमेश ने कभी हार नहीं मानी। वह हर रोज कड़ी मेहनत करता और अपने सपनों को पूरा करने के लिए समर्पित रहता।

रमेश ने दसवीं की परीक्षा में पूरे जिले में टॉप किया, जिससे पूरे गाँव में उसका नाम हो गया। इसके बाद उसने आगे की पढ़ाई के लिए शहर के एक अच्छे कॉलेज में दाखिला लिया। लेकिन पैसे की कमी के कारण उसे शहर में रहना और पढ़ाई करना मुश्किल हो गया। ऐसे समय में रमेश ने पार्ट-टाइम नौकरी की और अपनी पढ़ाई जारी रखी। उसने अपनी जिम्मेदारियों के साथ समझौता किए बिना, दिन-रात मेहनत की।

आखिरकार, रमेश ने एक प्रतिष्ठित इंजीनियरिंग कॉलेज से डिग्री प्राप्त की और एक बड़ी कंपनी में नौकरी हासिल की। उसकी मेहनत और संघर्ष ने उसे सफलता की ऊंचाइयों तक पहुँचाया। आज, रमेश न केवल खुद सफल है, बल्कि वह अपने गाँव के बच्चों को शिक्षा के महत्व के बारे में बताता है और उनकी मदद भी करता है।

*Archana Paswan*

*Semester-V*

*Hons: -Commerce*

## तेरा एहसास माँ

जन्म होते ही खुद की वेदना को भूल रोते बच्चे को गले से लगाती है माँ दिल की धड़कनों को सुनाकर अपनी खुद की मौजूदगी का एहसास दिलाती है माँ

नन्हे हाथों को थामकर बरसों तक खुद अपना ही अस्तित्व भूल जाती है माँ देख हमको कभी किसी मुसीबत में हर हद पार कर हमको संभालती है माँ

कितने भी कड़वे शब्द बोले हो हमने 'खाना खा ले' कह सब भूलाती है माँ राह देखना उसका भले हमें नहीं भाता फिर भी रात भर राह तकती है माँ

दुनिया भर की थकान एक पल में मिट जाती जादू वाले हाथ जब सर पर फेर देती है माँ जिसकी गोद में सर रख जमाने के गम भूल जाते ऐसा चैन ऐसा सुकून बस तू ही देती है माँ

आज वो तेरे आंचल की छांव याद आती है जिसके तले तू जिंदगी की कड़ी धूप से बचाती थी माँ तू नहीं मगर तेरा एहसास हमेशा साथ है जिसकी खुशबू हमेशा जिंदगी महकाती है माँ

*Puja Kumari*

*Semester-I*

*Hons: History*

**Photo gallery**



गिरिडीह भास्कर 14-09-2025

कॉलेज में एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार संपन्न, स्वागत गीत से किया अतिथियों का अभिनन्दन।  
प्राचीन ज्ञान परंपरा समृद्ध व उन्नत : डॉ. चंद्रभूषण



कॉलेज में राष्ट्रीय सेमिनार में संबोधित अतिथि।

सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय सेमिनार में उद्घाटन।

सरिया कॉलेज में एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार संपन्न हुआ। डॉ. चंद्रभूषण ने स्वागत गीत पढ़ा और अतिथियों का अभिनन्दन किया।

प्राचीन शिक्षा प्रणाली को आत्मसात करना आवश्यक, ज्ञान सबसे बड़ी पूँजी : नागेंद्र सिंह ने कहा कि प्राचीन शिक्षा प्रणाली को आत्मसात करना आवश्यक है।

सेमिनार को इन्होंने भी किया संबोधित

सरिया कॉलेज में एक दिवसीय राष्ट्रीय सेमिनार संपन्न हुआ। डॉ. चंद्रभूषण ने स्वागत गीत पढ़ा और अतिथियों का अभिनन्दन किया।

गिरिडीह भास्कर

ज्ञान परंपरा व आधुनिक शिक्षा संगम पर मंथन

सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय सेमिनार में विनोदा भावे विवि के कुलपति ने कहा - ज्ञान परंपरा भारत का धरोहर



सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय सेमिनार में विनोदा भावे विवि के कुलपति ने कहा - ज्ञान परंपरा भारत का धरोहर

हिन्दुस्तान

गॉलेज में छात्र-छात्राओं ने नशा मुक्ति की ली शपथ

सरिया, प्रतिनिधि। नशा मुक्ति भारत अभियान के तहत सोमवार को सरिया लोय सरिया में राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसए) इकाई द्वारा नशा मुक्ति शपथ दिलाई गई।

हिंदी वाद-विवाद में प्रेरणा का राष्ट्रीय स्तर पर चयन

सरिया कॉलेज, सरिया की होनहार छात्रा प्रेरणा कुमारी ने हिंदी वाद-विवाद प्रतियोगिता में राष्ट्रीय स्तर पर चयनित होकर प्रथम स्थान पर चयनित हुईं।

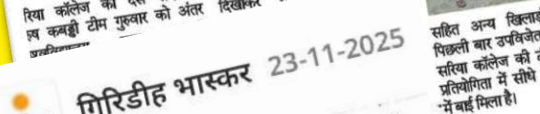


सरिया की छात्रा प्रेरणा कुमारी

गिरिडीह भास्कर 26-09-2025

सरिया कॉलेज की टीम अंतर विश्वविद्यालय फुटबॉल प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए रवाना

सरिया कॉलेज की दस सदस्यीय फुटबॉल टीम गुवाहाटी के अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए रवाना हुई।



सरिया कॉलेज की दस सदस्यीय फुटबॉल टीम गुवाहाटी के अंतर विश्वविद्यालय प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए रवाना हुई।

गिरिडीह भास्कर 14-10-20

स्वयंसेवकों व छात्र-छात्राओं ने नशा मुक्ति अभियान के तहत सरिया कॉलेज में ली शपथ

सरिया कॉलेज, सरिया में नशा मुक्ति अभियान के तहत स्वयंसेवकों व छात्र-छात्राओं ने नशा मुक्ति शपथ ली।



सरिया कॉलेज, सरिया में नशा मुक्ति अभियान के तहत स्वयंसेवकों व छात्र-छात्राओं ने नशा मुक्ति शपथ ली।

गिरिडीह भास्कर 23-11-2025

सरिया कॉलेज में खेलकूद प्रतियोगिता की शुरुआत, विभिन्न खेलों का होगा आयोजन

सरिया कॉलेज में खेलकूद प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। विभिन्न खेलों का आयोजन किया जाएगा।



सरिया कॉलेज में खेलकूद प्रतियोगिता की शुरुआत हुई। विभिन्न खेलों का आयोजन किया जाएगा।

गिरिडीह भास्कर 11-11-2025

सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित कार्यक्रम में शिक्षाविदों ने राय देखा

सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित कार्यक्रम में शिक्षाविदों ने राय देखा।



सरिया कॉलेज में राष्ट्रीय शिक्षा नीति पर आधारित कार्यक्रम में शिक्षाविदों ने राय देखा।

प्रभात खबर 25.09.2025

एनएसएएस स्थापना दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन

एनएसएएस स्थापना दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।



एनएसएएस स्थापना दिवस पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।



## **SARIYA COLLEGE, SURIYA**

GIRIDIH, JHARKHAND

**PERMANENTLY AFFILIATED TO VINOBA BHAVE UNIVERSITY, HAZARIBAG**

REG. UNDER 2(F) AND 12(B) OF U.G.C. ACT

Accredited with Grade 'B' by NAAC, CGPA 2.35

[Sariyacollege1984@gmail.com](mailto:Sariyacollege1984@gmail.com)

[www.sariyacollege.ac.in](http://www.sariyacollege.ac.in)